

NOT FOR SALE

जीवन्त संन्यास सिद्धि विशेषांक

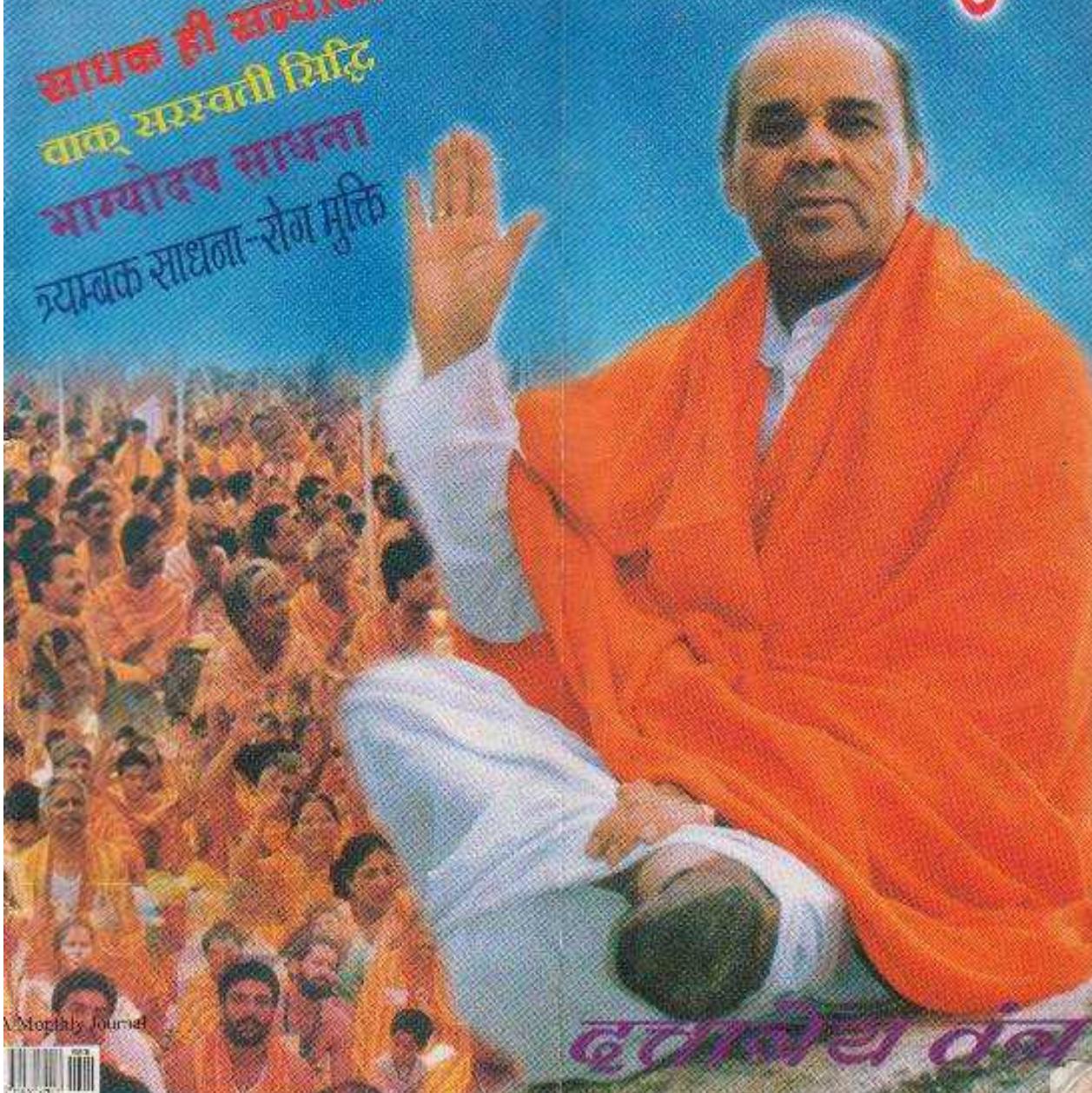
नवम्बर 2001

मूल्य : 18/-

# मंत्र-तंत्र-संख्या

विज्ञान

साधिक ही संन्यासी  
वाक् सारांशी प्रिण्ट  
भास्योदात् भास्यका  
श्राविक साधिता-रोग मुक्ति



A Monthly Journal





## COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

# छाल्य-व्रकाश

|| ३० पद्म तत्वाद्य वाक्यायणाद्य गुकम्या नमः ॥



## साधना

वाक सिद्धि : सरस्वती साधना	22
ज्यग्नेयक प्रयोग	24
मूर्य गायत्री साधना	26
भाग्योदय साधना	36



## सद्गुरुदेव

नन्दनुन् प्रवचन	5
नून वाणी	44
<b>स्तम्भ</b>	
जित्य धर्म	43
नापक साक्षी है	50
नवत्रों की वाणी	60
दि समय हूँ	62
वराहमिहीर	63
नीवन रसिता	69
इस मास दिल्ली में	80
एक बुधि में	86



## दिवेचन

दिव्याभिषेक दीशा	46
जीवन्त संन्यास	55
साधना सिद्धि दीशा	39



## विशेष

दत्ता वेद तंत्र	46
स्वास्थ्य रखा क्या कहती है	76
छान्दोग्या उपनिषद	64
शक्ति चिकित्सा	71
सर्व कवच	82

:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 308 लोडा, एनसेव, पीनमुख, दिल्ली-110034, फोन: 011-7182243, टेली फैक्स: 011-7198700  
संप्र-तंत्र-योग विहार, ३० श्रीमती नग, हैंड्सेट गोलानी, जोधपुर-342001 (रज) फोन 0291-432209, फैक्स: 0291-432010  
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [mtv@siddhashram.org](mailto:mtv@siddhashram.org)

## प्रेरक संस्थापक

डॉ. भारतीयापद्म  
श्रीमाली  
(परमहंस लक्ष्मण  
निषिद्धस्वेच्छावर्गवाची परी)

प्रधान सम्पादक  
श्री नन्दकिशोर  
श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक  
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली

संयोजक ल्यापस्थापक  
श्री अरविन्द श्रीमाली

संपादन सलाहकार भंडल  
दृष्टि शम वेत्त्वा श्रीमाली,  
श्री गुरु सेवक श्रीवास्तव,  
श्री गोपा पाटिल, श्री एस. वे. मिश्रा,  
श्री आर. री. मिश्र, श्री गंगाधर  
मण्डपात्र, श्री बलेन पाटिल, श्री  
सतीश मिश्रा (बाबाई), श्री एम.  
आर. बिजू, श्री सुर्योर लेलोकर,  
श्री विजय श्रीमाली (वीर्याली),  
श्री कृष्णा मीडा (बैगलोर),  
दृष्टि शम, के. भोताल (नेशन),

प्रकाशक एवं स्वामिन्द्र  
श्री कैलाश नाथ श्रीमाली

दृष्टि

नीरु आर्ट प्रिन्टर्स  
c/176, नानायण इडलिंगल  
परिया फैम 1, नई दिल्ली  
से मुद्रित तथा

संत्र-तंत्र-योग विहार बाबकोट  
कालेनी, जोधपुर से  
प्रकाशित।

मूल्य (भारत में)

एक प्रति : 18/-

वार्षिक : 195/-

## तिथि

परिक्रमा में प्रकाशित माझी नववर्षों का अधिकार परिक्रमा है इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' परिक्रमा में प्रकाशित लेखों में मायादृक का माध्यम होता अधिकारी रहती है। तर्क-कृत्यक नवने वाले पाठ्य परिक्रमा में प्रकाशित पूरी मायादृक के नाम क्रमान्कों विज्ञी नाम, मायादृक या धूता का विज्ञी भी लिखे मायादृक नहीं है, वही लिखे पाठ्य, नाम या तथ्य विज्ञ जाय, तो उसे मायादृक क्रमान्कों विज्ञान के लेखक हुमाकर शामु-भूत होते हैं, अतः उनके पाठे के बाने में कुछ भी अन्य क्रान्तिकारी देखा मायादृक वही होगा परिक्रमा में प्रकाशित विज्ञी भी लेख या मायादृक के बाने में बाद-विवाद या तर्क नाम नहीं होता भी र न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या मायादृक विज्ञेवान होते हैं। विज्ञी भी मायादृक को विज्ञी भी प्रकाशन का प्राप्तिविक रही दिखा जाता। विज्ञी भी प्रकाश के बाद-विवाद में जागरूक व्यावालय ही मायादृक होगा परिक्रमा में प्रकाशित विज्ञी भी मायादृक को मायादृक या पाठ्य नहीं मैं भी प्राप्त कर सकते हैं परिक्रमा कल्परत्न भी भंगवारे यम हम अपने तत्कालीन प्राप्तिविक और भी मही मायादृक अध्यात्म वंत्र भ्रजते हैं, यह किंवा भी उपासक ग्राह में, मायादृक या व्यावालय के बाने में अथवा प्राप्त नहीं देखा जा सकता है विज्ञी मायादृक परिक्रमा का व्यावालय में मायादृक। मायादृक के दूसरे यम तर्क या बाद-विवाद मायादृक नहीं होगा। परिक्रमा का व्याविक मुद्रक विज्ञान में 1955/- है, यह वही विज्ञी विज्ञेवान एवं प्रतिविक वर्ष क्रमान्कों में परिक्रमा को विज्ञानिक या बद्ध क्षमता पड़ते, तो विज्ञते भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उभी में व्याविक मायादृक अध्यात्म वर्ष हो वही, तीस वर्ष या चौदावर्षीय मायादृक को पूर्ण करने, ४३में विज्ञी भी प्रकाश की आवाजता विज्ञी भी मायादृक नहीं होती। परिक्रमा में प्रकाशित विज्ञी भी मायादृक नें मायादृक-अक्षयकल्प, छान्ति-लाभ की विज्ञेवाली मायादृक की व्याय की लिजी तथा कानून कोई भी होती उपायमार्ग, यम या मंत्र प्रयोग इ कर्म, जी विज्ञ, मायादृक एवं कानूनी विवरानों के विषयमें हो। परिक्रमा में प्रकाशित लेखों के लेखक व्यायों का मायादृक लेखकों के विवार भाज होते हैं उन यम प्राप्तों का आवालन परिक्रमा के व्याविकविनियों की तरफ में लेता हो। पाठ्यक्रम की भाग यम इस अंक में परिक्रमा के विवरण लेखों वा भी व्यायों का भी मायादृक विद्या गया है, विज्ञते के व्याविक पाठ्य लाभ उच्च मायादृक या नेष्ठक अपने प्राप्तिविक अनुभवों के आवाय यम जो जन्म, तंत्र या वंत्र (अले ही वे ज्ञानीय व्यावालय के द्वारा ही) द्वारा होते हैं, वे ही हो देते हैं, अतः इस मायादृक में आत्मविद्या व्यवालय ही आवायण एवं आवाय की होती है। प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि मायादृक व्यावालय का व्याविक लाभ तुमने प्राप्त कर सकते वह तो ही ही और मनते परिक्रमा है, अतः पूर्ण भूषा और विज्ञान के ग्राथ ही हीका प्राप्त कर्म इस मायादृक में विज्ञी प्रकाश की कोई भी आवायती या आत्मविद्या व्यवेक्षण नहीं होती। मुख्यक्रम या परिक्रमा यम मायादृक में विज्ञी भी प्रकाश की विज्ञेवाली वहाँ नहीं कर्यमान।

## प्रार्थना

वन्दे गुरुपद द्वन्द्वम वांश्चनसगोचरम् ।

रवतशुक्लप्रभामिथ्रमतवर्यै त्रैपुरं महः ॥

पोडश्यम्यार साम्वादप्रसवत निखिलश्वरं ।

षोडशानन्दनाथाय नतोऽस्मि गुरुमूर्तये ॥

‘प्रकाशा आत्मा सदाशिव विमर्शा आत्मिका महाशक्ति तथा उभयसामरस्यमाव उत्पन्न करने वाली शुक्ल-रवत प्रभाव से युक्त मूर्ति मन वचन तर्क आदि से परे त्रिपुर महामुद्री के अलौकिक तेज पुंज स्वरूप परम आराध्य भी सदगुरुदेव निखिल के चरण कमल युग्मों की हृष्म संदेव वंदना करते हैं।’

## \* वापी का महत्व\*

एक बार की बात है राजा वन में भ्रमण करने अपने सैनिकों के साथ गए। राजा को बहुत जोर से प्यास लगी। सैनिक पानी की तलाश में गया। निकट ही एक कुआं था जहाँ एक अन्धा व्यक्ति लोगों को जल पिलाने का कार्य कर रहा था। सैनिक उसके पास गया और बोला- ‘मरे अन्धे! एक लोटा जल मुझे भी दे।’ अन्धे व्यक्ति ने कहा- ‘मैं तुझ नैसे मूर्ख नौकर को पानी नहीं देता। जा भाग यहाँ से।’ रिपाही गुस्सा होकर वहाँ से बापस आया। उस सैनिक की बात सुनकर प्रधान सेनापति स्वयं गए और बोले- ‘अन्धे आई मुझे एक लोटा जल शीघ्रता से दे दो।’ अन्धे व्यक्ति ने कहा- ‘लगता है पहले वाले सैनिक का सरदार है। मन में कपट है लेकिन ऊपर से मीठा बोलता है। मैं तुझे भी पानी नहीं दूँगा।’ सेनापति ने राजा से आकर शिकायत की। अब महाराज स्वयं उस अन्धे व्यक्ति के पास गये और अभिवादन करके बोले- ‘बाबाजी! प्यासा हूं, गला सूख रहा है योड़ा जल देने की कृपा करें जिससे प्यास मिटे।’ अन्धे व्यक्ति ने कहा- ‘महाराज! आप बैठें। अभी आपको जल पिलाता हूं।’ जल ग्रहण करने के पश्चात राजा ने पूछा- ‘महामन! आप चक्षुहीन होते हुए भी यह कैसे जान गए कि एक सिपाही, एक सेनापति और मैं राजा हूं।’ उसने जवाब दिया- ‘महाराज! व्यक्ति की वाणी ही उसके व्यक्तिगत का जाल कराती है।’ \*



# अंमुअन जल पूजा कर्त्ता

गुरु और शिष्य का सम्बंध और किस प्रकार शिष्य गुरुवाद के जीवन की जल्द जल्द पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है, इसके साथ ही अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को आनंदकरने का जल्द जल्द करने के व्यतीत कर पूर्णता प्राप्त कर सकता है, इन्हीं सब विषयों के सम्बंध में सद्गुरुवाद की ओरस्वीकारी का जल्द जल्द जल्द जल्द.

यह ब्रह्मापुराण का महत्वपूर्ण ज्ञेय है जो जीवों को जीवन को शक्तरचार्य ने भी अपनी शंकर भाष्य में उल्लिखी है। यह ज्ञेय ज्ञान है कि ब्रह्मापुराण ने स्वयं कहा है कि यह ज्ञोक केवल सुनने के लिए नहीं है जब यहाँ के लिए भी नहीं है, यह ज्ञोक तो जीवन में उतारने के लिए है। ज्ञोक है-

सत्त्वं सहिदं पवान्य भूभूतिं विश्वासोऽस्त्वं ज्ञात्वा देवाहितां वदान्य सहितां  
सद्यो तत्वेत्रो त्वां

तेऽपात्र मदेन्य वन्द नृचितं कामं च ज्ञात्वेऽन्य-

अश्रुयदितं सरेव सहितं दूर्लभं तेव जिवा तः

इस ज्ञोक का धारा जीव जीवन की जहाँ है कि मनुष्य को पैदा होना पड़ता है। इसीना जीव सेवन जल्द जल्द है जिसकी इच्छा है या नहीं है, वह उनके जीवन के जीवन की एक परिभिति है और उसकी मन्दिरी है। इसकी इच्छा जिय गर्भ में जन्म लेने की नहीं थी, उसमें उन्मे कम्य सेवा जहाँ उसके हाथ में नहीं था। यह एक मन्दिरी है, जब जीवन विचरण कर रही थी, एक संयोग करा जाव जीवों ने जन्म ले लिया। देवता लोग भी जीवन का जल्द जल्द सेवे के लिए मनुष्य रूप में ही जन्म लेते हैं। जीवन का जल्द जल्द जीवन रूप में नहीं मिल सकता सद्य जीवन का जल्द जल्द जीवन रूप में भी नहीं मिल सकता। इन दोनों के बीच में एक और सत्य है जिसको मनुष्य कहा जाता है। यह मनुष्य जब गर्भ में होता है तो जानने, सुनने तक उस जीवन को पूरा भान रहता है। जिसे क्या है जीवन की सेवा जीवन है और प्रियों के लिए जीवन की सेवा जीवन करता रहता है। यह सब कुछ इसके जन्म स्वरूप है।

सत्त्वं सहिदं पवान्य भूभूतिं विश्वासोऽस्त्वं ज्ञात्वा देवाहितां वदान्य सहितां

में रहता है  
में कि मुह  
अपने चि  
शिव  
लिपटा है  
बनधन में  
से बाहर  
स्मृतियां  
उसी का  
बाप अन  
उसके ना  
जाता है  
हे तो ब्र  
की किं  
गर्भ में  
ब्रह्म का  
हुआ व  
में डान  
में लिय  
अन्न  
अगर  
वासा  
इ  
में ज  
कभी  
मसी

दे नहता है और सातवें महिने से लगाकर और जन्म लेने तक वह बहुत दुःखी और व्यथित होता रहता है, इस चिन्ता के कि मुझे बायिस एक जन्म लेना पड़ेगा। पर उस समय उसको आपने खुद के बारे में, उपनी आत्मा के बारे में, उपने चित्तन के बारे में और अपने पूर्व जीवन के जितने भी जीवन हुए उन सब के बारे में भली मानि भगवन रहता है।

जिव पूराण में भी इसी प्रकार का वर्णन है। वह जन्म लेते ही एक वृन्धन रे

लिपटा हुआ, एक नाड़ी से मा की नाड़ी से लिपटा हुआ, जैसे एक केदी

वृन्धन में बन्धा हुआ फेंक दिया जाता है, उसी प्रकार वह गर्भ

में बाहर आ जाता है। बाहर आते ही वह पिछली सरे

स्मृतियों भूल जाता है और नये सम्बंधों से नुड़ जाता है।

उसी क्षण से कोई उसकी मां बन जाती है, कोई उसके

बाय बन जाता है, कोई उसका भौंड बन जाता है, कोई

उसके चाचा बन जाता है, कोई उसका सम्बंधी बन

जाता है और इस प्रकार से नये परिवेश में जब आता

है तो वह स्वरूप भूल जाता है। यह स्मृति विस्मृति

की किया है या ब्रह्म और माया की किया है। जब तक

गर्भ में रहता है तब तक वह स्वरूप है इस लिए गर्भ को

ब्रह्म कहा गया है। जन्म लेते ही माया के आवरण में लिपटा

हुआ बाहर आता है और बाकी लोग भी जो उसके परिवेश

में होते हैं अगर राक्षस वृन्द के होते हैं तो वह भी उसी वृन्द

में लिपट जाता है, देवत्व वृत्ति के होते हैं अच्छे मां बाप होते हैं,

अच्छे मातृं होते हैं, सम्बंधि होते हैं, जिनके पर में स्तुति होती है,

अच्छे कार्य होते हैं तो वह भी उसी रास्ते पर चल पड़ता है, और धर्म में

अगर शराब पी जाती है, लिंगेट पी जाती है, शालिया दी जाती है तो वह उसी

वातावरण में ठूल जाता है, उसके हाथ में कहीं किसी प्रकार की स्थिति नहीं रहती।

इलोक में बताया गया है कि यह जन्म लेना हमारी मजबूरी है। साध ही साध उसने कहा कि देवता भी मनुष्यरूप में जन्म लेने के लिए तरफते रहते हैं और वे कई कई रूपों में जन्म लेने रहते हैं- कभी राम के रूप में जन्म लेते हैं, कभी कृष्ण के रूप में जन्म लेते हैं, कभी बुद्ध के रूप में जन्म लेते हैं, कभी महावीर के रूप में जन्म लेते हैं, कभी ईसा मसीह के रूप में जन्म लेते हैं, कभी सुकरात के रूप में जन्म लेते हैं और वे अपने अपने रूपों में जन्म लेते रहते हैं।

जन्म तो दोनों को लेना पड़ता है परन्तु बाहर आने पर भी देवता को भान रहता है कि मैं क्या हूँ और क्या नहा। वह अपने आप में अवतारी व्यक्तित्व है और जिसको भान रहता रहता वह मनुष्य स्वरूप नहीं होता है। उसको वह अन्य रहता है कि मैंने जन्म क्यों लिया है और जब वह जन्म लेता है क्योंकि जन्म लेने को क्रिया एक ही तरीके की है, उस जन्म होने की क्रिया को अवतार कहा जाता है। उसके जन्म होने पर मां को किसी भी प्रकार की कोई तकलीफ नहीं होती, लेने की क्रिया को अवतार कहा जाता है। उसके जन्म होने पर मां को कोई भार भ्वरूप अहसास नहीं होता। एक कोई वेदना नहीं होती, मां को कोई दंड नहीं होता, नी महिने तक कोई भार भ्वरूप अहसास नहीं होता। एक प्रफुल्लता रहती है, वेहरा पर एक ओज होता है, एक चित्त पर प्रसन्नता होती है तब समझना चाहिए कि कोई अवतारी व्यक्तित्व में गर्भ से जन्म ले रहा है और धृति घेट में दंड होता है, पांडा होती रहती है, चिना होती है, तनाव होता है, तकलीफ होती है, मां क्रां भोगती रहती है तब समझना चाहिए कि एक साधारण मनुष्य मेरे गम से जन्म ले रहा है।

मगर यदि मां अच्छे संरक्षक में पली दुर्द होती है तो उसको जान ही जाना है और उस इलोक में बताया गया है कि उस अवतारी पुरुष के स्थाय में नितने जोग जड़ते हैं औटे-मटे देवता भ्वरूप होते हैं। तैतील कश्त देवता है और वे अपनी देवता किसी न किस गर्भ से जन्म लेने की आशुर रहते हैं। जब कृष्ण ने जन्म लिया तो और भी कोई देवता और न जन्म लिया जा गोप ज्वाले कहलाये, गोपीय कहलायी।

जो अध्ययन थीं, नी देवता थे उन्होंने गोपों के काप में उसी स्थान के आस-पास जन्म लिया।

मथुरा के पास-गोकुल में, कृष्णवत्स में देवता जो जन्म लिया, क्योंकि उसके बिना वह नहीं पाते, उस विष्णु-भक्तपके स्थाय में जो भी देवता नुड़ होते हैं... जैसा हम पढ़ते हैं, क्षार सागर में भगवान नारदण सोये हुए हैं, लक्ष्मी पाव बन रही है देवता भासमे खट्ट हैं। भगवान शिव कैलाश पर बैठे हैं और व्यक्ति सब देवता लोग हाथ लांध कर खुड़ हैं, वे भी अपने उपर में इनसे नुड़ नहीं हैं किंवदं उनके बिना नहीं रह पाने एक सज भी। तो इनके साथ-साथ वे नी बलग-अलग प्रथानों पर जन्म

लेते रहते उनके आ धर क मन्दिर, ह आ जाती मिन म नहीं मिल स्थानों 3 भाष्य रह है, और उसके गोप-व चाहे औ अपने...

मग तो उस क्योंकि विद्या न थे, जो रूप में देवता विकार मा-बा थे वह तक न अवत उसके सवित्र उसक काम



जैते रहते हैं मगर जन्म लेने के बाद एक साथ आ जाते हैं, जुड़ जाते हैं।

उसके जास्पास धूमते रहते हैं, उस अवनारी व्यक्तित्व के पास में।

घर का परिवेश, घर के बातावरण अच्छा, बरा, दृष्ट स्वभाव, मांस

मृदिर, सूठ, लहर कपट की बनह से व्यक्ति के अंदर भी व वृन्तियाँ

जा जाती हैं उसको माया कहा जाता है। मगर माया और ब्रह्म का।

जिनन नहीं हो सकता, क्योंकि मैंने बताया कि दृथ को रेत से

नहीं मिलाया जा सकता। तो वे देवता जन्म लेते हैं, अलग-अलग

जगानी अलग-अलग गर्भ से। वे भी उस अवनारी व्यक्तित्व के

साथ रहते हैं। उसके पास आने के लिए छतपटाने रहते हैं,

उसके साथ नुड़ जाते हैं। चाहे शिश्य के रूप में जुड़ते हैं, चाहे

गोप-ज्वाले के रूप में जुड़ते हैं, चाहे गोपियों के रूप में जुड़ते हैं,

चाहे और किसी रूप में जुड़ते हैं मगर आकर जुड़ जात हैं और

अपने अपने कार्य में तल्लीम रहते हैं।

मगर शंकराचार्य कहते हैं कि इनमें समय नहीं वह दूर रहा

तो उसके अन्दर काम क्रोध लोभ-मोह विष्वर तो आया है।

क्योंकि वे उनके मां-बाप की देन थीं और मां-बाप ने कुछ

दिया नहीं, मां-बाप के अंदर जो कुछ भी गुण थे या अवगुण

थे, जो सत्य था या असत्य था वह बालक को सरकार

रूप में प्राप्त हुआ और जब तक वे विकार... क्योंकि

देवताओं में विकार होता नहीं, उस भवित्व में भी

विकार नहीं था जब जन्म लिया। उसके बाद विस

मां-बाप के संयोग से जन्म लिया उनमें जैव विकार

थे वह उस बालक में आये, और वह बालक जब

तक उस ब्रह्म से जुड़ता नहीं तब तक जितना भी विकार

उसके अंदर संचित हो जाता है वह उसके अन्दर

संचित होता रहता है उसको माया कहा जाता है।

उसको धोने के लिए और कोई तरीका है नहीं,

काम क्रोध को निकालने के लिए कोई तरीका नहीं

है। उसको धोने के लिए केवल एक ही तरीका होता है उसको आंसू कहते हैं अशु कहते हैं जो कि नेत्रों के माध्यम से अपने आप स्वभाविक रूप से निकल जाते हैं, जब भी उनको नहीं बेचते हैं तो आंखों से आंसू छलछला उठते हैं उनको बहने की जरूरत नहीं होती।

राशियों के आंखों से आंसू नहीं आ सकते। जो बिल्कुल उस प्रवृत्ति के हैं उनकी आंखों में भी आंसू छलछलाते नहीं हैं। इस लिए प्रत्येक गोप जब भी कृष्ण के जमुना किनारे पहुंचते में

थोड़ा सा विलम्ब होता तो बिलम्ब उठते, गोपियां तरसती रहती, बेचैन होती रहतीं

और जब मिलते तो उनके इवय में हर्ष का, आनन्द का, उल्लास होता। उन दोनों के उनके काम, उनके क्रोध को गलने की क्रिया, समाप्त करने की क्रिया के केवल एक ही वस्तु थी और वह वस्तु थी अशु और वे अशु स्वभाविक रूप से निकलते रहते हैं।

भस्तर में तो सैकड़ों लोग हैं फिर उसी ने क्यों जुड़ा जाता है। एक बहुत दूर लखनऊ से आ करके फिर गोधपुर में आकर क्यों जुड़ता है, एक व्यक्ति विशिष्ट में रहता हुआ गोधपुर में आ करके या बिल्ली में आकर यी कड़ी मधुरा में आ करको जुड़ता है क्योंकि उसने देवता के रूप में तो जन्म लिया उसको यह धान है मगर वह वहाँ उनसे बीच में जो अन्तराल रहता जो गन्धगी, जो मैल उसके उर्जा में व्याप हो गया, उससे वह छटपटाता रहता है और जब तक वह धुलता नहीं है तब तक एकाकार नहीं हो सकता, ऐसा तो संभव ही नहीं है कि यानी में से मछली को निकाल दिया

जाए और मनायेगी... परिष्य मछली से अलग कर और अपने है।

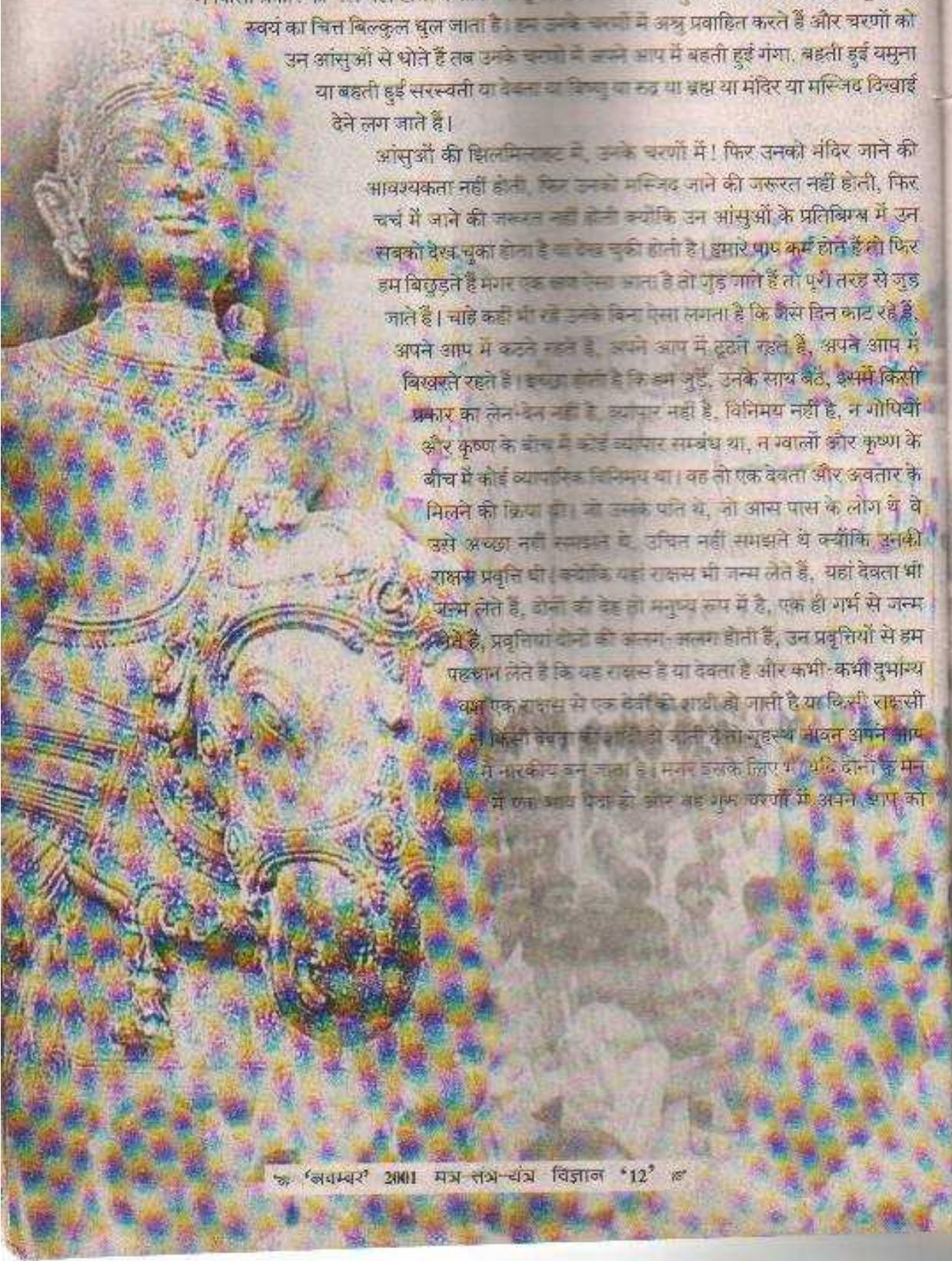
गोकरण हमरे पास उस ब्रह्म क सद्बृह्म क परमात्मा क क्योंकि विकारों से देखें तो हट्ट है, थूक है, सब धौंते चरणों में हास लेया में चटुआ अपने भाव क्यों चढ़ा चढ़ा भाज मिटा

जहा और मछली चांस ले रहे और जिन्दा रहे रहे तो संभव है ही नहीं। मछली तो एक क्षण में समाप्त हो जाती... पानी के बिना वह जिन्दा नहीं रह सकती। और वह शिष्य भी पानी, गुरु अपने पानी की तरह होता है और शिष्य भुजनी की तरह होता है। जब पूर्ण रूप से एकाकार हो जाता है, और उस मछली को योड़ा भी उस पानी के अन्दर करने ही तो जिलौख उठता है, गोने लग जाता है।

जोर लगाने आप में समाप्त होने की बाहर हो रहे लग जाती है।

शंकराचार्य ने तीसरे लाइन में कहा कि  
ज्ञान पास देने के लिए कुछ भी नहीं है  
उच्च ब्रह्म को, उस गुरु को, उस आत्म  
स्वरूप को, उस ईश्वर को, उस  
परमात्मा को।

ज्योकि हमारी एक गन्ती देह है जो  
विकास से भरी रहते हैं, उस देह के अन्दर  
देह तो हटाया है, माल है, उर्ध्व मन्त्र  
है, दूक है, लाप है, विष्णु है, मृत्र है। ये  
सब चीजें तो इतने गंदी हैं, कि उनको  
चम्पों में हम चढ़ा भी नहीं सकते। और हमारे  
पास ऐसा पदार्थ भी नहीं है जो कि उनको चम्पों  
में चढ़ाया जा सके। ज्योकि यह भौतिक पदार्थ तो  
उपरे आप में नाशयत है। उनका मिटाउ चढ़ाने के यह  
उपरा चढ़ानेसे तो कठलाभ नहीं। आप कमड़ा है कल पट जायेगा।  
आप मिटाएं हैं, कल एराव जो चांपो, गर्दी हो जायेगी, लटबूलाहो जायेगी।



केवल चढ़ाने के लिए हमारे पास अशु प्रध्य है, वे निम्नलिखित होते हैं, वे परिवर्त होते हैं। उन आंसुओं में किरी प्रकार का मैल नहीं होता क्योंकि उन्होंने इन्हें निकली हुई किया है और उन आंसुओं से स्वयं का चित बिल्कुल छुल जाता है। उन उनके चरणों में अशु प्रवाहित करते हैं और चरणों को उन आंसुओं से थोड़े हैं तब उनके चरणों में उन्हें आप में बहती हुई गंगा, बहती हुई यमुना या बहती हुई सरस्वती या वेदना या विष्णु या रुद्र या इष्ट या मोदिर या मस्तिष्ठ दियाई देने लग जाते हैं।

आंसुओं की शिल्पिकालीन में, उनके चरणों में। फिर उनको नंदिर जाने की आवश्यकता नहीं होती, किंतु उनके मस्तिष्ठ जाने की जरूरत नहीं होती, किंतु चर्च में जाने की जरूरत नहीं होनी क्योंकि उन आंसुओं के प्रतिक्रिया में उन सबको देख सका होता है वे उनके चरणों होती है। हमारे पाप कर्म होते हैं तो फिर हम विद्युत हैं मगर एक लड़ाना जाना होता है तो यह गति है तो पूरी तरह से जुड़ जाते हैं। यह कही भी रहे उनके बिना देसा लगता है कि ऐसे दिन काट रहे हैं, आपने आप में कठन नहीं है, जबकि आप में दूजों नहीं है, आपने आप में विद्युत रहते हैं। इन्हाँ से यह कि उन्हें जुहू, उनके साथ बैठ, उसमें किसी प्रकार का लेन-देन नहीं है, ज्ञापन नहीं है, विनियम नहीं है, न गोपियों और कृष्ण के बोच में कोई व्यापक विनियम या, न गवालों और कृष्ण के बीच में कोई व्यापक विनियम या। वह तो एक देवता और उवतार के मिलने की किया है। जो उनके पति थे, जो आप पास के लोग थे वे उने अच्छा नहीं समझते थे, उचित नहीं समझते थे क्योंकि उनकी गक्षण प्रवृत्ति थी। क्योंकि यह राक्षस भी जन्म लेते हैं, यहाँ देवता भी जन्म लेते हैं, डोनों को देह तो प्राण्य रूप में है, एक ही गर्भ से जन्म लेते हैं, प्रवृत्तियों-दोनों की जन्म-जन्म होती है, उन प्रवृत्तियों से उन प्रह्लाद लेते हैं कि यह राक्षस है या देवता है और कभी-कभी दुभाव्य वज्र एक राक्षस में एक देवी को शादी की जाती है या जिसी राक्षसी को एक देवी की जाती है जो उन्हें अवश्य निवन आपने आप न निरक्षित उन जाता है। मनुष उनके लिए एक दूरी के मन में रहा आप पैदा हो आप वह गम चरणों में अपने आप का

समर्पित दे और तन से, और है। जहाँ भी उनकरके जर्दों ही इह है। वो पिछाँ जाँचेंगे तब भी

आप ना कहु, एक मशीन चीज़ने, दस गुस्से से बिल्कुल नहीं लोग अपने अपने अपने राक्षसों संघर्षशील म

मगर जब लम्बे के पाने लिया है पानी वह उल्लग रह नहीं होता, क्योंकि उसका नीपुण चरणों में होते जिन्दा रहने के क्षण होते हैं।

ज्ञानित दे और समर्पण हो जाये तो भी परिवर्तन हो सकता है।

जून से, और मन से समर्पण होता है तो अश्रु ही के माध्यम होता है। शिष्य और गुरु के बीच में इही कड़ी जोड़ता है। जहां भी आपने क्रोध को या काम को निकाला तो स्थान पवित्र हुआ क्योंकि आशू आहर और आसु से धूल लाने की ही जगह निकली वही पर गुरु को स्थापन कर दिया, उस देवता को स्थापन कर दिया, जो कि आपका है। तो फिर इदय से निकलता नहीं। आप सोचेंगे तब भी वही आपकी आंखों में प्रतिक्रिया रहेगा, आप जानेंगे तब भी ऐसा लगेगा जैसा कोई बेठा है, आप काम करेंगे तो लगेगा जैसे वही काम कर रहे हैं।

ज्ञान जो कुछ किया करेंगे तो ऐसा ही लगेगा कि वे ही कर रहे हैं मैं एक निमित्त मात्र हूं, चल रहा हूं, एक गौरीन हूं, काम तो वही भक्त कर रहे हैं और ऐसी स्थिति में वह रचये आप दृश्यने, जोनुमें, उस गुना उत्साह के साथ में काम करता रहता है या करती रहती है और प्रेम सम्बन्ध द्विकूल जुड़ जाती है। घटिया लोग उसको बासना कहने लग जाते हैं, उच्च कोटि के जान अपने आप में प्रसन्न होते हैं कि एक नुड़ने की क्रिया जनी।

इस लिए शंकराचार्य ने कहा है कि ऐसी ही स्थिति गुरु और शिष्य, देवता और भक्त और भगवान के बीच में होती है और उसमें पूरा संभार, उसका पूरा परिवर्तन बनता ही है, प्रशंसा नहीं करता क्योंकि उसकी मनोवृत्ति राक्षस की होती है। वह उसको उत्साहित नहीं करती, प्रेरित नहीं करती, उसको वह वापिस जाने रासायों के बीच में खोचने की कोशिश करती है और अपने आप में सद्वशील मानस में मंथन बना रहता है, कि क्या करूँ, क्या नहीं करूँ।

मगर जब जुड़ जाता है तो फिर दूसरा बोई भाव रहता ही नहीं। उस लहूले पानी में दूसरा एक लोटा भर पानी भिला देता तो जो भिला दिखा है पानी उसको फिर वापिस अलग नहीं कर सकते। और फिर से वह अलग रह नाए तो गुरु से जुड़ा ही नहीं, अलग होने का भाव ही नहीं होता, क्योंकि अपने आप में नुड़ने की क्रिया होती है, इसलिए शंकराचार्य द्वाय मुराण में चीथा लाइन में कहा है कि बहुत उच्च कोटि के सौभाग्यशाली व्यक्तिगत होते हैं जो जीवित जागृत गुरु के चरणों में होते हैं, अन्यथा गुरु तो एक व्याप से शरीर छोड़ देता है उनके जिन्दा रहने के लिए मजबूरी रहती है। जो जीवित गुरु के बास आनन्द के क्षण होते हैं वह उस मूर्ति से नहीं आ सकते, विन से नहीं आ सकते,

तद्वारा लिया गया तो उन्होंने उन्हें जीवित रखना के साथ बहुत नहीं किया तो अनन्द निया कृष्ण के जाने के बाद वो आनन्द प्राप्त नहीं कर सकता। वह अपने प्रवाहित करती रही, जो गृही के प्रतिष्ठित में कृष्ण को देखती रही, मगर वह आनन्द की अस्तित्वता समाप्त हो गई। इसलिए जब उच्चकोटि का विद्युत दृष्टि है तब गुरु और जीवित गुरु के साथ व्यक्ति तुड़ता है। मन गुरु के साथ तो कई तुड़ते हैं कि हमारे रविदास जी गुरु हैं, जब जे गुरु बोन है कि कबीरदास जी हमारे गुरु हैं, कि हमारे वह गुरु हैं या गुरु नामक देव जी हैं या वे भी गुरु हैं। उनसे भी ज्यादा तो बहुत है जो आपके साथ है, आपके साथ मुस्कराता है, रोता है, उदास होता है, विवित होता है, विवित होता है। आपके साथ उक्त कार्य होने की किया इसलिए करता है कि आपको खोने के अपने साथ मिलते। उन दोनों और आपने ये अपने मन को, हड्डी को, पृष्ठ करता हुआ, अपने आप को उसमें अविलोक्य करता हुआ और जब स्थापित हो जाता है तो फिर वह दिव, वह विष्व बाहर निकलता ही नहीं है तब तक की उस पर कोई राक्षस हाती न हो जाए। वह एक स्थान से स्थापित हो जाता है वह विष्व वह दृश्य, वह जड़नार की जड़ अपने अपने सौभग्यशाली बन जाता है और उसके इनोर से जब अपने आप में सुगन्ध प्रवाहित होने लग जाती है, वह एक खुमली में बन रहता है जीव वह खुमली अपने आप में एक मरता का आलम होती है, एक वैतन्त्रता होती है ऐसा लगता है कि जीसे अब आनन्द आया। यह जीवन की स्थिति गुरु और शिष्य के बीच में या भक्त और भगवान के बीच में अन्य रहस्यों, उसका तब विनाश करना है तो स्मारक बाहिर कि उसके लिए उस उस पर

जीवन का

पहला धाव त  
आधेगी ही त  
करेगी। हम  
आपके शरीर  
बीच में, आ  
मीरा जे  
रहे। इतनी  
वर्णोंकि वे त  
अपना लक्ष  
जिरधर गो  
ऐसा विचा  
कोहं खुठं  
रहता क्यों  
मैं जो कुछ  
खाना भी  
अभी बार  
दम उसी  
इसी  
एक चिन  
है। लगा  
करों में  
पथ की  
एवं  
उसमें।

महत्व पाव रखा, दूसरा कथम रखा, तीसरा कदम रखा, फिर पांच कदम रखेंगे तो कोई आधा विज्ञ तो नहीं हो जाएगी। आपके मन के संस्कार आपको विचलित करेंगे, आपकी बुद्धि आपके ध्यानित करने की कोशिश करेंगी। हर बार विरोध ही आपके बीच में आयेगा। आपको संचारी भाव आयेंगे, ब्यांकि विकार इसके दरीर में है जब तक वह निकलेंगे नहीं तब तक वो आपके बीच में उस अवसारी पुस्तक के बीच में, आपके बीच में, भगवान के बीच में आधा भी ही रहेगा।

मीठा और कृष्ण के बीच में, भोज और सर्वांगा और लाकी गैनिक और लोग बाधक बने ही जाएँ। इन्होंने दुर्घटी ही गई कि उसको राजमहल से मीठे उत्तरण ही पड़ा। सहकों पर आना पड़ा। कहाँकि वे सब विकार थे, सब राधास प्रवृत्ति के थे, और उनके बीच में खड़े रहे। मगर उसको जाना लक्ष्य मालूम था, उसको अपनी आंखों में साफ प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा था कि मेरे लोग विरपर गोपाल दृप्या न कोई, उसका तो एक भाव, एक चिन्तन, एक विचार था और जब लेता विचार आता है तो फिर कोई रंग नहीं रहता, फिर कोई छल भी नहीं रहता फिर कोई दृष्टि भी नहीं रहता, फिर कोई कपट भी नहीं रहता। फिर कोई असत्य भी नहीं रहता क्योंकि खुमारी की अवस्था में आ जाता है, उसको फिर ऐसा लगता है कि जो कुछ भी कर रही हूँ वह ही कर रहा है, खाना भी वह रिखला रहा है, खाना भी वह बना रहा है। हर क्षण ऐसा लगता जैसे मेरे पास में बढ़े जैं, जब उसी भावना में रहते हैं।

इसलिए उलोक वा आपने आप में जीवन में एक महाव रहा। जीवन में एक विन्दन वह। आद्यो आपने बुद्धि के कार्य में जाना रहा है, मनहुरी है। जाना भी रहा चाहिए, से गोपियों, गवान, वे उधर, वे अधुर भी आपने कार्यों में लगा ही रहते थे। मगर वे कार्य कर्मी न करें जो हमें वापिस अमरत्य के पथ की ओर आगमन कर, वो कार्य कर जो हम उप व्यवितरण से नहीं रखे। “एक घड़ी आधि घड़ी आधि में गुनि जाओ।” एक घड़ी जुड़े आधी थड़ी जुड़े, उसमें भी आधी घड़ी जुड़े पांच मिनट जुड़े। जितने साथ उसके



माय व्यतीत हो, उनको बेखो और तृप्ति महसूस हो, उनके कायों में  
हाथ बटाये, क्योंकि उसने अगर जन्म लिया तो कोई न कोई  
निमित्त से जन्म लिया होगा, अकारण जन्म नहीं लिया होगा।  
कृष्ण ने जन्म लिया था तो कोई न कोई निमित्त था उनका।  
कंसर्पी समाज इतना दुष्ट हो गया था कि उसको समाप्त करना  
उसके लिए मजबूरी हो गई थी। राम ने जन्म लिया था तो  
जरूरी हो गया था कि रावण जैसे अहन विद्युतकारी पैदा हो  
गये थे। तो उनको समाप्त करना उसके लिए जरूरी हो गया  
था। शंकराचार्य ने जब जन्म लिया था तो जरूरी हो गया  
था कि सारा भारत वर्ष 'बुद्ध उरण गच्छामि' और 'संघम  
गच्छामि' 'धर्म शरण गच्छामि' से आक्रात हो गया  
था और उन्होंने अपने कायों को समाप्त करके पृथ्वी लोक से  
प्रस्थान किया।

ऐसे व्यक्ति को मृत्यु नहीं होती। एक लोक से दूसरे लोक  
में चले जाते हैं जिसको आप मृत्यु कहते हैं। जो अभी पृथ्वी  
लोक में है, पृथ्वी लोक से शिव लोक में चले गये, इस लोक में  
अपना काम निपटाया बहु लोक में चले गये। वह अपने जाप में  
विवरण करता रहता है और उसके साथ देवता भी थेरि और वार्षिक  
उसके साथ जुड़ जाते हैं।

कह इनार वर्ष बाद हम प्रकार के किसी व्याकृतत्व का जन्म होता  
है। राम के ठीक ठाई इनार वर्ष बाद कृष्ण का जन्म हुआ। और कृष्ण  
के ठीक ठाई इनार वर्ष बाद बुद्ध का जन्म हुआ। और बुद्ध के ठीक  
ठाई इनार वर्ष बाद शंकराचार्य जी का जन्म हुआ। पूरे ठाई इनार

वर्ष और ताहे  
अस्सी जन्म  
मी जाने है शत  
पीछे। मगर ज  
नहीं मिलता।  
बोलता है। ज  
रहते हैं क्या  
हनार वर्ष बा  
किया ब्रह्मी  
पूर्ण रूप से  
तो फिर  
वे सब धिक  
तो बहों पहुं  
पहुं चले ही  
नहीं सकता।  
आप क  
हुआ है। ज  
नहीं यमद  
करेगी तो  
समझ नहीं  
उष श्रवि  
करती ओ  
विशेष अ

जो द्वीप छाई हजार वर्ष का मतलब है कम से कम पचास जन्म, अन्तिम जन्म बाय में। या तो उसके साथ जुड़ते चले जाते हैं, जहाँ वह जाते हैं जहाँर के साथ चले जाते हैं। वो दिन आगे पा दो दिन दोड़ा। अगर जब तक है तक अगर नहीं जुड़ते हैं। इस समय वह नहीं मिलता। तो साथ जीवन दुर्लभ व्याकूल, परेशान, लगाव में बहलता है। आप देखेंगे कि अधिकांश व्यक्ति परेशान पूर्णते रहते हैं क्योंकि वहाँ कोई जुड़ने की किया नहीं है। वो छाई हजार वर्ष बाद कोई मिलेगा तो तब तुह मायेगा फिर जुड़ने को किया बनेगा। मगर इसी जीवन में शुद्ध चिन बन जाता है तो उसे नये से जुड़ जाता है मछली और समुद्र की तरह।

तो फिर अगर वह मिल लोक में भी अवनित हो जाता है तो सब जिव लोक पहुँच जाते हैं। बद्ध लोक पहुँच जाता है तो वह पहुँच जाते हैं। जहाँ माथे जाता है वह देवता वहाँ जुड़ने ही है। क्योंकि उनका साथ यह नहीं सकता, यह नहीं सकता, बिल्कुल नहीं सकता, अलग नहीं हो सकता।

आप का जन्म मां किसी न किसी उद्देश्य के लिए ही हुआ है। बुद्ध हमारे बीच ने है तो शायद हम उसको नहीं समझ पायें। और वह बुद्ध समझने की किया करेगा तो वैश्या कर्मी प्रतिबत्ता ज्ञ नहीं सकती वह समझ नहीं सकती। बुद्ध भी अपने आप में वैश्या है, उस व्यक्ति को उसके साथ जोड़ने की किया नहीं करती और बार-बार उस मन को अटेक करती है। विषेक आपको बार-बार बेतना देता है, ज्ञान

आपको समझाता है कि आपके जीवन का हेतु, लक्ष्य, उद्देश्य क्या है। पिंडा होना और मरजाना लक्ष्य नहीं है और धन कमा करके धन संवय करके रखना भी नहीं है। यह तो जीवन की किंवद्दि है जो कभी पढ़ती है। करनी चाहिए भी, मगर वह सार तर्फ है नहीं, मैंने आज तक यह सुना ही नहीं कि किसी के भित्ति के साथ उसका मकान साथ बला गया था नोट की छठी थी।

वह चली गई, ऐसा तो मैंने भी नक किसी को देखा नहीं।

कपड़े में साथ रखे नहीं, कफन भी नहीं गया, कफन भी। होंगे ने उतार करके ले लिया। उसने तो कर्णों समय कमाकर बेटे का चिठ्ठी लाखों समय दिये थे और उन्होंने तो कफन जो गुणा था वह कफन भी लेंगे न ले पाया। आपके साथ तो केवल आप नहीं और आपका पुण्य गया संकार गया, समझा जीवन पूर्वनन गया।

इस त्रिपुणी आपके जीवन का अत्येक क्षण-उत्तर्वा सेवा न लगानी थी, जो भी आपके दृष्टि है, जो गो आपके लक्ष्य है, जो भी आपका चिन्ता है किसी का लक्ष्य शाली छोटा है, किसी का लक्ष्य देखा होता है, किसी का लक्ष्य पैसा कमाना होता है, किसी का लक्ष्य गोवाणे को होता है।

आप अपने लक्ष्य हैं, आप न किसी का पहनी है, न किसी का कोई पति है, आप जब जाने हैं तो केवल आप अकेले हो जाते हैं, क्योंकि अकेले ही पता होता है। पत्नी आपके साथ नहीं होती बेटा भी आपके साथ नहीं होता नहीं। आप आप ही तो आपके साथ जा सकते, आप इसके ही गवाया।

ये बीच में कहते हैं, निदेगा। या त नहीं जाना कायदा होना भी दे सक लेने की ज है या कोई व्यक्ति को अपने खुल आप नहीं जगह नहीं उसनि होगा। म उनको मैं कि आप इस शरी बनिये, त नहीं किय चरणों म नाशवान और वह तत्त्व है, अन्दर

जन्म-मृत्यु में ही सारा खेल है, जन्म-मृत्यु के बीच में, जिसे हम कभी बेटा कहते हैं, किसी को पति कहते हैं, किसी को पत्नी कहते हैं वे आपको या तो रक्षासमय प्रवृत्ति देंगे या देवत्वमय प्रवृत्ति देंगे। या तो आपको देवता पुरुष बना देंगे, नहीं तो बार-बार आपको कहेंगे घर के बाहर नहीं जाना है वहां मिलना नहीं है, गुरु जी के पास नहीं जाना है, वहां जाने से क्या सम्भव होगा और तो ताला बदमाश है। गालियां आप चांद को दे सकते हैं। सूर्य को भी दे सकते हैं, गालियों देने के लिए तो पढ़ने की जरूरत है नहीं कालेज में शिक्षा करने की जरूरत नहीं है, तो समझ लेना चाहिए कि किसी राश्ट्र से मेरी शादी हुई है वह कोई राक्षस ही नहीं है या ना है वह तो समझने का भाव है। मगर उन्हिं को अपने खुद के लिए ही आगे बढ़ना पड़ेगा। “अप्पी दीपो भव” आप अपने खुद का दिया जला कर आगे बढ़ोगे तब जाम होगा, दूसरों के प्रकाश ले जाय नहीं बढ़ सकते, मां-बाप, भाई-बहन, सम्बंधि उनके प्रकाश से आप उस जन्म नहीं पढ़न्य सकते, जहां आपको पहुंचना होता है।

इसलिए यह जीवन अपने आप में आंशुओं के माध्यम से खुलेगा, स्वप्न होना। अन्दर तो भाव राफ निर्मल नव ही बन पाएंगे और वह शरीर आप जूकी खेट नहीं कर सकते क्योंकि शरीर तो अपने आप में हृतना मिलने हैं कि आप दो दिन स्नान नहीं करें तो शरीर से बदबू अनें लग जाएगी, इस शरीर का तो ब्रेकार घमण्ड करना। आप पांच दिन स्नान न भरिये, देखिए कि आपके पास में खड़ा हुआ व्यक्ति कहा कि स्नान नहीं किया, बदबू आ रहा है, मर्यादा ब्रह्म है शरीर तो है नहीं, उनके चरणों में चढ़ाने के लिए भोविक पदार्थ कुछ ही नहीं। यह तो नज़ारान है कवल चौज है जो पास है, जो निर्मल है, अशुद्ध है, और वह अशुद्ध ही मैं हूँ, जैसे समुद्र जल पानी हूँ, वही नव है, क्यों यमद्रकों देवता कहा गया है, वही आपके अन्दर में बन्दगी को छोता है और उसके माध्यम से

आप एक पु  
करती जा  
अब मैं आ  
ज्यों ही  
आपनी सार  
हिमालय व  
कछु रहती  
परंतु आप  
आंसूओं व  
उपके पास  
है। ऐसा है  
आपने कर  
देना है, मैं  
आप सुनूँ

चरणों में चढ़ा करके अपने आपको समर्पित करने की किया करते हैं कि मेरा काम, मेरा क्रीध, मेरा लोभ में आपके चरणों में चढ़ा देता हूँ, आप मुझे निर्मल बना दीजिए, तब वह ज्ञान देता है जिससे ज्ञान वृष्टि जागृत होनी है और ज्ञान दृष्टि के आगे आपने आप आत्म वृष्टि जागृत होनी है। तब ज्ञान होता है कि मैं क्या हूँ, मैं क्यों हूँ, मैं बहाँ क्यों बैठा हूँ, मेरा कार्य क्या है और मुझे कहाँ पहुँचना है। क्या मैं इनके बिना जीवित रह सकता हूँ, सोस ले सकता हूँ।

उसके बिना सोस लिया भी तो सोस नहीं लेने के बराबर हुआ। अगर मैं मन में मेरे गुरु का एक शपथ भी नहीं चिन्नन आता तो मेरी जीवन ही व्यर्थ है, ऐसा जीवन तो समाप्त हो जाना चाहिए, मन में तो बिलकुल एक भी, एक लशन लगी ही रहनी चाहिए। बाहरी किया कलाप तो हाय पांच मारेंगे ही और जैसी वृत्ति होंगी उन व्यक्तियों के साथ जो सुझे खड़ा होना ही पड़ेगा। रास्तरों के बीच ये रास्ते के रूप में खड़ा होना पड़ेगा, देवताओं के बीच में देवता के बीच सुझे खड़ा होना ही पड़ेगा। इरोधन के साथ शूल के रूप में खड़े हुए, शोषण के साथ देवता रूप में खड़े हुए, अनुन के साथ मिल रूप में खड़े हुए, गोपियों के साथ श्रीपी रूप में खड़े हुए। वह तो आप इस रूप में बनवे आपको उसी रूप में दिखाई देगा। कोई भी भाव हो, कोई भी रूप हो, सभी रूपों में मिलने का किया होनी चाहिए। इसलिए कृष्ण ने जीवा में कहा है कि अनुन न समझता कोई जरूरी नहीं है कि आप आरती उतरें। इसलिए कृष्ण ने जीवा में कहा है कि अनुन न समझता की नहीं है, कि मैं तेरे साथ में हूँ और जीवित व्यक्तित्व हूँ, और ये दम्भार निष्पत्ति हुआ वही भी भाव्य की नहीं है। अनुन बाला समय तो मेरा मंदिर बना देगा। आगे बाला समय तो मैं बाल बाल बाल देगा, और वह आखें भी भीगोयेगा, मगर आज जो मैं भासात दिखाई दे रहा हूँ वह दिखाहं नहीं देगा। वह अलन्द नहीं मिल पायेगा। वह जो एक क्षण का सुख है वहमें प्राप्त नहीं हो पायेगा। इसलिए तू उस बात को समझ, इसलिए कृष्ण को कहा 'कृष्ण बन्दे नगदगुरु'। गुरु ने कहा, वह गुरु ही नहीं जगदगुरु है। इसलिए अनुन को उसने समझाया कि तू जो समझ रहा है उसके आगे भी समझ तब तरा अहकार गलेगा कि तू बहुत दोष योद्धा है। तू तो कुछ ही नहीं, करने वाला तो मैं हूँ। तू तो एक निमिन मात्र है।

अठारहवें अध्याय में अनुन ने कहा कि मैं पहली बार समझा कि

आपका नूरी स्वप्न है। मैं अभी तक आपको मानव समझ रहा था, मनुष्य समझ रहा था क्योंकि मेरी बुद्धि मुझे भ्रमित  
मानी जा रही थी, बार बार बुद्धि भ्रमित करती रही। आपने मुझे जान दिया और अब आत्म चक्र मेरे जायत दृग्,  
जहाँ आपको नहीं छोड़ सकता।

वो ही कृष्ण ने भास्म खत्म की, शायद उसी समय उसी मोमेंट में अर्जुन ने भी  
जपने लास खत्म कर दी। जबकि बीच में द्वादश बगार मील का लिंकेस था, वह  
लिंकेस की ओर बढ़ रहे थे और वह गुजरात में थे श्री कृष्ण। वह दूरी फिर  
कहा नहीं जाती, चाहे २०० मील दूर हो, ३०० मील दूर हो मजबूती में,  
जब तु आपके और उसके बीच में एक और पुल बना दुआ है उसको  
जन्मजी का पुल कहा गया है। उस पुल के माध्यम से आप हर क्षण  
ज्ञान का पास रहते हैं क्योंकि उस बिन्द्र में वह साक्ष-साफ दिखाई देता  
है। हमा ही आपका माब बने। ऐसे ही आप अपने आप को पहचाने कि  
आपने क्यों जन्म लिया, ऐसे आप जुड़े, ऐसे ही मैं आपको आशीर्वाद  
देता हूँ, आपका कल्याण हो, आप पूर्णता प्राप्त करे, आप सफल हों,  
आप सुखी हों। एक बार फिर मैं हृदय से आशीर्वाद देता हूँ।

सद्गुरुदेव परमहंस रवामी निखिलेश्वरानन्द

## बालक सिद्धि ! सरस्वती साधना

यांगून मुग में बुट्टे की बत पर गोव करती है, कृष्ण लम्बा बीड़ा शरीर होने से ही, व्याकृत व्याकृत शाली लही बन जाता, वाणी में भी वह प्रभाव होना चाहिए जिससे दूसरे आपका कठना मान सके, और यह सिद्धि तक सिद्धि कहलाती है, और इसकी अधिकारी देवी है सरस्वती, प्रस्तुत लेख में सरस्वती सिद्धि के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण साधन स्पष्ट की जा रही है।

शिक्षा का राष्ट्रीय है अध्ययन और अध्ययन कर उसका मनन और इस मनन का अपने जीवन में उपयोग लाना ही शिक्षा है, शिक्षा से व्यक्तिगत में एक आत्मविश्वास आता है, प्रत्येक कार्य को खेजने समझने की क्षमता प्राप्त होती है, भर्तिष्ठक में ज्ञान की तीव्रता का विकास होता है, और जो अपने आपमें एक ज्ञान की प्रक्रिया प्रारंभ कर लेता है, वही गुण कहलाता है, मनुष्य और मनुष्य के बीच में बुद्धि और ज्ञान की रेखा ही उसे साधारण और असाधारण बनाती है।

जाणी में ऐसा ओज और प्रभाव होना चाहिए कि आप अपने सहयोगियों से, अपने उन्नयनियों से अथवा अपने अफसरों को जो बात कहे वह बात अवश्य माने ही, और जो बात आपके ज्ञान में आ जाए वह विरकाल तक याद रहे, यही तो सरस्वती की कृपा है।

बानकों में रोखने अमड़ने की कमता विशेष रूप से होती है, इसलिए बालकों की सरस्वती साधना अवश्य करनी चाहिए, यह केवल उनका ही नहीं उनके मनो धिता का भी करना है यह केवल उनका ही नहीं उनके मनो धिता का करना है कि बालक सरस्वती वन्दना नियमित रूप से अवश्य करें, मैंने अपने जीवन में देखा है कि कई व्यक्ति अपने भाईर तो ज्ञान बहुत समेटे होते हैं तो किन नव उन्हें बालने को कहा जाता है, तो वाणी जैसे लड़खड़ाने लग जाती है, कहना कुछ चाहते हैं और बोलने कुछ हैं, इसी प्रकार नौकरी के इन्टरव्यू में जो असफल रहते हैं उसका कारण अपने आप को, अपने ज्ञान को सही रूप से प्रस्तुत करने की कमी होती है और यह दोष उनके जीवन को साधारण बना देता है, ऐसे व्यक्ति साफल नहीं हो

पाते।

सिद्धि चर्णी : सरस्वती सिद्धि साधना

सरस्वती साधना प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य ही समन्वय करनी चाहिए, जीवन में परिक्षण तो पर-पर चलती ही रहती है, हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बालक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करे। हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी समरण शक्ति तीव्र हो, इन्टरव्यू में, नौकरी में सफलता प्राप्त हो, जो बान कहे वह दूसरों पर प्रभाव डाले, नेतृत्व की क्षमता का विकास हो, तो सरस्वती साधना अवश्य करनी चाहिए, इसके अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं है और जब एक बार सरस्वती सिद्धि हो जाती है तो वह अपनी कृपा जीवन भर बनाये रखती है क्योंकि भी सरस्वती लक्ष्मी की तरह चंचला नहीं है, उसका तो स्थायी भिवास रहता है।

साधना विधान

यह साधना किसी भी पूज्य नक्षत्र में प्रारंभ की जा सकती है, साधक स्वयं श्वेत धोती पहिन कर पूर्व दिशा की ओर मुह कर बैठें, जनेऊ धारण करें, यदि अपने बालकों को भी साधना कराना चाहते हैं तो उन्हें भी श्वेत धोती पहना कर अपने साथ बिठाएं, चन्दन का तिलक करें, सामने सरस्वती देवी का चित्र अथवा तस्वीर लगाएं, शुद्ध धी का दीपक तथा अगरबत्ती जलाएं, अपने सामने एक लाल पात्र में एक पूष्प रख कर उस पर मन्त्र सिद्धि प्राण प्रतिष्ठा युक्त दिव्य चेतना 'सरस्वती वन्दन' स्थापित करें, उस पर केसर तथा चन्दन बहाएं, अपने हाथ में सरस्वती बीज मन्त्र ही सिद्धि कर तथा यन्त्र के नीचे अपना नाम लिख

कर सरस्वती
विनियोग
दाएं हा
वन्दना
मन्त्र स्वर
महाराजा
श्री मदाच
मार्कण्डेय
नवकोटि
श्री मदाच
विनियोग
जल व
न्याय :
निम्न
से सर्वा
ॐ श्री
ॐ बल
सौ नम
ही ॐ
ॐ ऐ
ॐ सौ
ॐ बल
ॐ श्री
ध्यान
मां स
ॐ व
या
श
य
प
मूल म
ॐ
कला है
विभूति
महामा
विसर्स
मधुके
महामा

महासशाती की वन्दना करें।

### सिद्धिकोश

वह दृश्य में जल लेकर संकल्प करें।

अहो यशामविद्यां सिद्धिचण्डी सगिताम् । महा सप्तशती  
महासशाती सप्तशती मन्त्रः रहस्याति-रहस्यमयी पराशक्तिः ।  
श्री मदाद्या भगवती सिद्धि चण्डिका सहस्राक्षरी महाविद्यां श्री  
महाकृष्णदेव सुमेधा कविगार्थत्रादि नानाविधानि छन्दांसि  
नक्षेटि शक्तिशुक्ता श्री मदाद्या भगवती सिद्धिचण्डी देवता  
श्री मदाद्या भगवती सिद्धिचण्डी प्रसादावस्थिलेषार्थं जपे  
विनियोगः ।

जल को जमीन पर छोड़ दें।

### त्वासः :

निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए विभिन्न अंगों को दाएं हाथ  
से ध्यान करें।

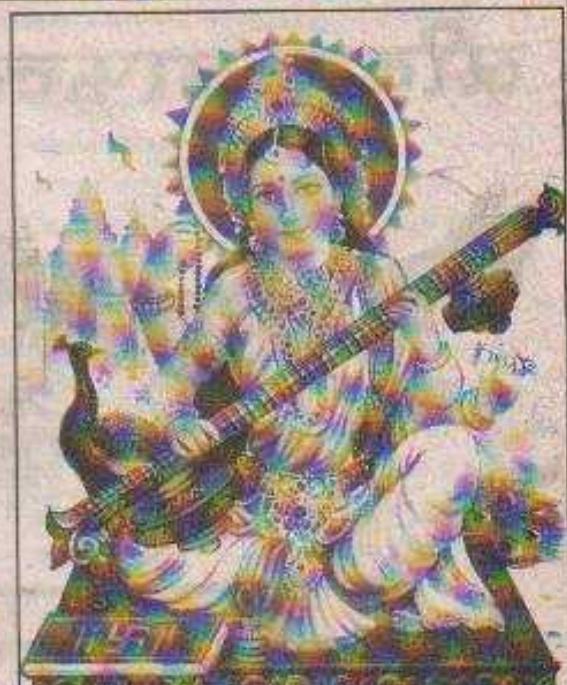
ॐ श्री नमः सहस्राति ।	ॐ ऐ नमः भाले ।
ॐ कल्पी नमो नेत्र-युग्मे ।	ॐ ऐ नमः कण्ठये ।
सी नमः नासामुटदये ।	ॐ नमो मुखे ।
ही ॐ नमः कंठे ।	ॐ श्री नमो हृदये ।
ॐ ऐ नमो हस्त-युग्मे ।	ॐ कले नमः उवरे ।
ॐ सी नमः कर्णां ।	ॐ ऐ नमो गुद्धे ।
ॐ कल्पी नमो नंधायुग्मे ।	ॐ ही नमो जानु-द्रव्ये ।
ॐ श्री नमः पादादि सदग्नि ।	

### द्यानः

गां सरस्वती का ध्यान करें। फिर इस मंत्र का २१ बार जप करें-  
ॐ या माया मधुकैटभ प्रपथनी या महिषोन्मूलिनी  
या ध्रुवे क्षणचण्ड-मुण्डदलनी, या रक्त बीजासनी शक्तिः  
शुभ्यनिशुभ्यदेत्य मध्यनी,  
या सिद्धलक्ष्मीपरा या देवी नवकोटि-मूर्ति सक्तिः मां  
पातु विश्वेश्वरी।

### मूल मन्त्रः

ॐ ऐ ही ही श्री ही कल्पी ऐ सी ॐ ही श्री ऐ कलां सी ऐ  
कलां ही श्री जय जय महासरस्वती जगदाद्यै बीज सुरासुर-  
चिभुवन निदानेद्यांकुरे सवतेजोरुपिणि महा-स्वरुपिणी  
महामहिमे महामहारुपिणि महायहायाद्ये महामायादिर  
चित्प्रसन्नते। विधि वरदे सच्चिदानन्दे विष्णु देहवते महामोहिनी  
मधुकैटभ जिह्वासिनी नित्य वरदान तत्परे।  
महास्वाध्यायवासिनी महामहो तेजधारिणी। सर्वाधारे



सर्वकारण करणे अचिन्त्य रूपे। इन्द्रादि निखिलनिवर्सेविते  
सामग्रान गायत्रिपूर्णोदय कारिणि। विजये जयन्ति अपराविते  
सर्वसुन्दरि रक्तांशुके स्वर्यकोटि-शक्ताशोन्द्रकोटि सुशीतले  
अभिकोटि वहनशीले यम कोटि कुरे शायु कोटि वहन सुशीतले।

### विशेष

सकट हो, अथवा कहु इस मंत्र का जप करने से संकट  
जान्त हो जाता है, परीक्षाकाल में प्रतिदिन पांच बार इस मंत्र  
का उच्चारण अवश्य करना चाहिए, यह अपने अपने में सिद्धि  
विजयप्रद मन्त्र है। मंत्रों में ओ शक्ति है, वह शक्ति साधक  
स्वर्य साधना कर प्राप्ति करनुभव कर सकता है, वास्तव में यह  
अनुष्ठान ही शीघ्र प्राप्तवक्तव्यक है। यदि किसी बालक के लिए  
यह प्रयोग करना है तो उसे अपने साथ छिटा कर उसके नाम  
का संकल्प ले कर परा अनुष्ठान सम्पन्न कर बालक की दाहिनी  
झुजा में यह संत्र बांध देना चाहिए।

साधकों के लिए पूर्ण मन्त्र ला नियमित जप करना संभव  
नहीं होता है। निश्चय ही मंत्र यहा है। अतः नित्य प्रति के  
साधना द्वारा में यदि सरस्वती का नवुमंत्र का जप किया जाए  
तो श्री पूर्ण फल प्राप्ति अवश्य होती है।

### सरस्वती मन्त्रः

ॐ ए सरस्वत्ये नमः  
बालकों के लिए यह उपयन है कि वे नित्य ॐ ए ॐ का उच्चारण  
करें तो निश्चय ही मेघा शक्ति नीब डेती है।

साधना सम्पन्नी 150/-

# जीवन छाफल्य मिहि प्रयोग

## रोग शोक शमनः महारौद्र

### अमृतक प्रयोग

प्रस्तुत है एक अचूक रोग शोकशमन प्रयोग जिसे संपन्न कर जीवन में पूर्ण अवश्य प्राप्त किया जा सकता है। जो रोग अन्य साध्यमों से भी समाप्त नहीं हो पा रहे हों उन्हें हस अचूक प्रयोग द्वारा जड़ से निटाया जा सकता है। हस सारांशित विशेष प्रयोग से पाठकों को लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

जहां शिव है वहां सिद्धि है, जहां दिव है वहां न तो कोई रोग है, न शोक, न विपत्ति, न मृत्यु भय, न बीमारी, न ग्रह दोष, न राज्य बाधा, साधना के सेवन में ऐसा कोई व्यतिरिक्त नहीं होगा जो शिव की साधना न करता हो, वहां वह सन्यासी हो अथवा गृहस्थ। भगवान अमृतक जो देवों के देव कहे जाते हैं, उनकी कृपा बिना सिद्धि असम्भव है।

भगवान भोलेनाथ अपनी कृपा का अक्षय भण्डार अपने चक्रों पर लुटाते रहते हैं, शीघ्र प्रसन्न हो कर भक्त को वर देते हैं और शिव भक्त संकट के समय उन्हें स्मरण भी कर लेता है तो उसका संकट दूर हो जाता है।

आगे की पंक्तियों में शिव और शक्ति दोनों का सम्मिलित एक ऐसा शिव कवच दिया जा रहा है, जो कि सभी प्रकार की विपत्तियों के नाश और अकाल मृत्यु भय से छुटकारा दिलाने में समर्थ है। कितना भी अपंकर रोग हो यहि इस अमृतक कवच का पाठ कर जल रोगी को पिला दिया जाए तो उसे अवश्य ही आशम प्राप्त होता है।

#### विधान

अपने सामने सुन्तर शिव चिव तथा भगवनी दुर्गा का चित्र स्थापित कर एक ताप्र पात्र में शिव अमृतक महामृत्युंजय मंत्र स्थापित कर शुद्ध धो का दोपक लगाए, इस साधना में अपने पाप नेसा भी शिवलिंग हो, उसे भी अवश्य स्थापित कर देना चाहिए तथा हाथ में जल ले कर दालों ओर धेरा बना लेना चाहिए, अब रुद्राक्ष माला से शिव का ध्यान कर एक माला 'अनमः शिवाय' मंत्र का जप करे तत्पश्चात् हाथ में जल ले कर नीचे लिखा विनियोग मन्त्र पढ़े फिर न्याय तथा ध्यान करे और उसी स्थान पर बैठे-बैठे एक माला मूँज मन्त्र का जप अवश्य करे, इसमें समय अवश्य लगेगा लेकिन मंत्र जप पूर्ण रूप से अवश्य करना है।

इस प्रयोग को किसी भी सोमवार से अथवा पुष्य नक्षत्र में प्रारंभ किया जा सकता है। प्रतिदिन एक माला मंत्र अनुष्ठान सम्पन्न करते हुए ज्यारह दिन निरंतर यह प्रयोग करना है तथा दूजा स्थान में गंध के आगे जो कलश जल से धर कर रखे वह



जल गृहण कर लें तथा दूध का निवेदा और फल पूजा समाप्त कर प्रसाद स्वरूप गृहण करें।

पूरे न्यारह दिन यह प्रयोग करते हुए एक समय भोजन करें विनियोग।

अस्य श्री शिवकवच स्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्म कथिः अनुष्टुप् छन्दः। श्री सदाशिव यद्रो वेवता ही शक्तिः रे कीलकः। श्री ही कली बीजम्। श्री सदाशिवप्रीत्यर्थे शिवकवच स्तोत्र जपे विनियोगः।

न्यास

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ सर्वशक्ति धाम्ने ईशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वर्णां सर्वशक्ति धाम्ने यायव्यात्मने तज्जनीभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ मं रु अनाविशक्तिधाम्ने अधोरात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ शिरः स्वतंत्र शक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वां रौ अतुत्तशक्तिधाम्ने सद्याजातात्मने कनिश्चिकाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्ज्वालामालिने ॐ वं रे अनादि

शक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः।

द्यान

वज्राद्वृष्टं विनयनं काल कठमरिन्दम्।  
सहयकरमत्युणं वन्दे शम्भुमापतिम्।  
अथापरं सर्वपुराणगुह्यमशेषपापोधहरं पवित्रम्।  
जय प्रवंसविपत्प्रमोथन वश्यामिश्रं कवचं हितायते।

मूल मंत्र

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकल तत्यात्मकाय सर्वं मन्त्रं स्पाय सर्वथन्नाधिष्ठिताय सर्वं तन्त्ररूपाय सर्वतन्त्रं विशूर्य ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय पार्वती मनोहरं प्रियाय सोमं सूर्याभ्यन्ति लोचनाय भस्मोल्लसत विश्वहाय महामणि मुकुटं घारणाय माणिक्यं भूषणाय युष्मि स्त्रियत प्रलय कालं रीढ्रावताराय दक्षाऽवरद्वंसकाय महाकालं भेदनाय मूलाधारेकं नीलकाय, तत्वानीताय, गंगाधराय सर्वत्रिविदेवाय षडाश्रयाय वेदान्तं साराय।

सर्वतो रक्ष रक्ष मामुज्ज्वलोऽज्वलं, महामृत्युभयं मृत्युभयं नाशय नाशय, अरिमयमृत्सादयोत्सादय विषसर्वभयं शमय-शमय, चौरान् मारय मारय, मम शब्दनुच्छाटयोच्छाटय, विशुलेन विदारय विदारय, कुठारेण भिन्निं भिन्निं, खद्गेन भिन्निं भिन्निं, खद्गेनविषेषय विषेषय मूसलेन निष्पेषय निष्पेषय, वाणीः सन्ताडय सन्ताडय रक्षांसि भीषय भीषय, अशेषं शूतानि विद्रावय विद्रावय, कुञ्जाण्डं वेतालं, मारीण, ब्रह्मराक्षसगणान् सन्त्रासय सन्त्रासय, ममोभयं कुरु कुरु वित्रसंमामाऽव्यासयाऽव्यासय, नरकमहाभयान्मामुखरोदर संजीवनय संजीवनय, क्षुनृदध्याम मामानन्दयानन्दय, शिव-कवचेन मामाच्छादयच्छादय मृत्युं जयं इवंमंत्रं सदाशिवं नमस्ते॥

शिव साधना का यह प्रयोग मन व दृष्टि प्रतिदिन योंच बार जप किया जाए तो रोग तथा शोक साधक के पास कटक ही नहीं सकते। यद्यपि शिव की कृपा से साधक अपने मार्ग में आने वाली विपत्तियों को स्वल्पता से दूर कर जीवन में पूर्ण शिवत्व की ओर अग्रसर होता है, तथा पूरे परिवार की सुख सौभाग्य शान्ति प्राप्त होती है।

आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाए तथा कार्ड के दू पर अपने दोनों मित्र का पता लिखकर भेजे कार्ड भिलने पर रु. ४५०/- की बी.पी.पी. दारा आपको इस साधना की मंत्र मिठ्ठा प्राण प्रतिष्ठ सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

जीवन की दृष्टि व्यक्तिगत कानून

# दृष्टि व्यक्ति साधना

जिसे सम्पूर्ण कर मैं अपने जीवन की धारा ही बदलती

जीवन में प्राणों के साथ ही जिस वस्तु की सबसे अधिक आवश्यकता होती है उसे उत्साह कहते हैं। उत्साह की ऊर्जा प्रदान करने के लिए सबसे अधिक सहजपूर्ण समय यही होता है जब ऊर्जा के आदि और अन्त व्यक्ति भवान् सूर्य सकर राशि में प्रवेश करते हैं। इस समय की जहर साधना का सहज सबसे अधिक होता है।

मुझे अन्धी तरह याद है वे दिन, जब मैं किंशोरवय शालक ही था। धीरे और युवावस्था की ओर बढ़ते कदम, पर विश्वास में योग्यन के आने के प्रति जो उत्साह थोरा है, उमंग होती है, कुछ कर दियाने की जल्दी और जोश होता है, ऐसा कुछ भी

स्वयं पर सुझालाठट भी आती है, एक प्रकार में निरव्यक्त जीवन ही जी रहा था। कुछ भी करने से पहले सोचता, कि मैं यह कार्य करने में समर्थ भी हूं या नहीं?

निरंतर अविश्वास के धेरे में झूलता रहता। आगे दिन किती न किती बीमारी से चढ़ वह मनोरोग हो या शारीरिक शक्ति ही रहता। मेरे माता-पिता मेरे इस नेशनल पूर्ण स्वभाव के कारण परेशान रहते तथा मेरे निरंतर गिरते हुए स्वास्थ्य को देख कर दुखी भी रहते।

अकेला, नभीर या यों कहूं कि कुछ न कर पाने के कारण हताश, नेराश्य भावना से योड़ित बस निःश्वास ही था। कभी

मेरे माता-पिता ने योचा, कि संभव है जलवायु बदलने से

स्वास्थ्य में  
उन्होंने बहुत  
प्रियतरा किए  
यात्रा से सा-  
चल पढ़े।  
वातावरण से

प्रकृति के  
हुआ था।  
शेष दिन  
संस्कारी  
विखावे के  
प्रति अस्ती  
प्रत्येक गु  
व्यक्ति भाव  
ऐसे ही  
जह तो उ  
मिलते,  
अक्षियों  
दा। बहुत  
किया, उन  
दे दिया ते  
लगी हो,  
नहीं था,  
मेरी इच्छा

उन्होंने  
तेज डग  
उन्होंने ति  
देसे पुका  
वे किसी  
उच्चानक  
पित्री मे  
मिलता  
जब  
कि इसे  
पास पहुं  
उन  
की मैन  
धेरे से  
उन्होंने

नवाल्पन में कुछ सुधार आये, इसलिए उन्होंने बद्धानाथ तथा केदारनाथ जाने का निर्णय किया। यात्रा का कार्यक्रम बना, यात्रा में सम्बद्धित संसाधनों से युक्त हो जाना चाहे। उन्होंने शांत और रमणीय विज्ञान से मन आकृदित हो उठा।

ब्रह्मिन का समग्र रूप सजा और संवरा हुआ था। ऐसा लगता था, कि जीवन के ऐसे दिन वहाँ व्यतीत कर दें। साधु-बन्धानी कई गुफाओं में साधनारत विज्ञान विद्ये। मेरे माता-पिता में धर्म के लिए अत्यधिक आस्थाभाव है, इसलिए वे अनेक गुफा के सामने खड़े होते और बन्धानाव से यिर छुकाते।

जैसे ही एक गुफा के समक्ष जब हम जा, तो उसमें रहने वाले संन्यासी बाहर निकले, मैंने अपने जीवन में ऐसा अकिञ्चित व्यक्तित्व पहले कभी नहीं देखा था। बाहर आने पर हमने उन्हें प्रणाम किया, उन्होंने मुझे बुलाया और एक फल दे दिया और रहेह से बोले, कि तुझे भूख नहीं हो, इसे खा ले। यद्यपि ऐसा कुछ भी नहीं था, पर जैसे ही उन्होंने फल दिया, मैं इच्छा हुई, कि मैं इसे पूरा खा नूं।

उन्होंने मेरे माता-पिता को भी आशीर्वाद दिया और किरण डग भरते हुए, वे देखते-देखते दूर निकल गए। संयोग से ज्ञाने किन वे पुनः दिखाई और उन्होंने मेरे पिताजी को ऐसे प्रुकारा, जैसे वे जानते हीं और संयोग कुछ ऐसा ही था, कि वे किसी समय मेरे पिताजी के साथ ही कालेज में पढ़ते थे, पर अचानक एक दिन लॉकेज से गायब हो गए। पिताजी उनके पित्रों में से एक थे और अचानक सोनह-सबह वर्ष बाद पुनः मिलना आश्चर्यजनक ही था।

जब मेरे पिताजी ने उनसे मेरे विषय में ब्राताया, तो वो बोले, कि इसे मेरे पाल छोड़ कर जाओ और शान की मैं स्वयं तुम्हारे पास पहुंचा दूशा।

उन लोगों के जाने के बाद उन्होंने मुझसे बाने करनी आरंभ की। मैंने इननी तेजस्विता और आजस्तिता को देख कर बहुत धीरे से कहा, कि आप नुशे साधनाओं के बारे में बताइये। उन्होंने मुझे देखा और बताने लगे, कि साधना करने के लिए



मौ तो शक्ति का आवश्यकता होती है। साधक में वह प्रसुख गुण होना आवश्य है, कि उनका व्यक्तित्व प्रख्यात हो तथा वह दृढ़ विज्ञान और दृढ़ निश्चय से युक्त हो, कि जो कुछ सोच लिया, किरण उसे कर ही देना है, संकल्प के साथ किरण विजय प्राप्त कर ही लेनी है।

मैंने अनायास ही पूछ लिया, कि क्या किसी साधना के माध्यम से इसे प्राप्त किया जा सकता है? उन्होंने उत्तर दिया, कि हाँ अवश्य और इस प्रकार की शक्ति, तेजस्विता और प्रख्याता की प्राप्ति मात्रा सूर्य गायत्री साधना से ही सम्भव है।

जब भी प्रख्याता और तेजस्विता की बात होती है, तो एकमात्र सूर्य ही ऐसे देव है, जिनके समक्ष सभी नितमस्तक हैं। सूर्य ही समस्त चरणचर जगत में प्राणों का संचार करते हैं। सूर्य की साधना सम्पन्न करने से साधक के व्यक्तित्व में स्वतः ही परिवर्तन आने लगता है और उसके अन्वर अडिगता तथा दृढ़ संकल्प जैसे गुणों का समावेश होने लगता है, वह रोगों से

मुक्त हो जाता है और एक अद्वितीय तेजस्विता साधक की बेद में समाहित होकर समर्पन विषम परिवर्तनियों को समाप्त कर देती है।

भगवती गायत्री तो उस परम शक्ति का ही एक स्वरूप है, अतः भगवती गायत्री की साधना से साधक बलशाली हो जाता है। साधक के जीवन में शक्ति साधना की अनियायता से कोन असहमत हो सकता है? बिना शक्ति के न तो आध्यात्मिक देव में उच्चना प्राप्ति की जा सकती है और न ही भौतिक धोव में व्यक्ति कुछ करने में स्वर्य ही सकता है।

यही इस साधना का विशेष पक्ष है, जिसके माध्यम से वह सब कुछ पाया जा सकता है, जिसे जीवन कहते हैं।

जब सूर्य एक गणि से दूसरे शक्ति में प्रवेश करता है, पर इसका सर्वश्रेष्ठ विवर है मकर रेत्कान्ति, जब सूर्य वक्षिणीया से उत्तरायण में प्रविष्ट होता है। वह साधना मात्र संक्रान्ति के अवसर से सम्पन्न की जाती है।

साधनाओं को समय, शुभ मूहूर्त, दोग, तिथि, करण तथा दिवस के उन्नुसार किया जाए, तो फिर सफलता में संशयात्मक स्थिति आ ही नहीं सकती, क्योंकि वे सभी मिलकर एक विशेष अनुकूलता प्रदान करते हैं और साधक यदि ऐसे क्षणों में चुके बिना साधना सम्पन्न करता है, तो फिर वह असफल हो ही नहीं सकता।

और यही वह साधना है, जो उन्होंने मुझे सम्पन्न कराई थी और जिसके माध्यम से मेरे व्यक्तित्व तथा मेरे जीवन में जो परिवर्तन आया, उसे देख कर मैं स्वयं आश्चर्यचकित रह गया।

### साधना विधान

इस साधना में आवश्यक सामग्री है 'सूर्य गायत्री भिन्न यंत्र', 'आदित्य सिद्धिगुटिका' तथा 'सफेद इकीक माला'। यह साधना भक्ति भेकान्ति के आवश्यक पर सम्पन्न करें, ऐसा सम्पन्न न होने पर इसे किसी भी भेकान्ति पर इसे सम्पन्न किया जा सकता है।

- यह एक दिवसीय साधना है तथा इसे १४-१-२००२ मकर भेकान्ति के दिन प्रातः १ बजे से ८ बजे के मध्य ही सम्पन्न करें।
- लकड़ी के बाजौट पर सफेद वस्त्र चिठ्ठाकर उस पर केसर से सूर्य की आकृति बनायें तथा उस पर सूर्य गायत्री यंत्र का स्थापन करें। यदि आपके पास नहीं हो, तो उनको भी रखापित कर दें। यंत्र की दाढ़िनी और लाल रंग से रंग चावल के दानों पर आदित्य सिद्धि गुटिका स्थापित कर दें।

**सूर्य ही समस्त चराकर जगत में प्राणों का संचार करते हैं। सूर्य की साधना सम्पन्न करने से साधक के व्यक्तित्व में स्वतः ही परिवर्तन आने लगता है और उसके अन्दर अंगिता तथा दृढ़ संकल्प जैसे गुणों का समावेश होने लगता है।**

- यंत्र का पूजन केसर, पुष्प तथा आकृत से करें, इस प्रकार गुटिका का भी पूजन कर दी का दीपक एवं सुगन्धित उग्रबती लगायें।
- दोनों हाथ जोड़ कर सूर्य भगवान का ध्यान करें। उआकृत्येम रजसा वर्तमाने निष्पापत्रभूतं मर्त्यं च। हिरण्येन सविता रथेन याति भुवनानि पश्यन् ॥
- फिर सूर्य भद्र की एक माला मंत्र जप करें।

### मंत्र

ॐ धृणि सूर्यं नमः ।

- फिर उसी माला में गायत्री मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

### मंत्र

॥ उभर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भगेदिवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

- फिर सूर्य गायत्री मंत्र का ज्यारह माला नम्र जप करें।

### मंत्र

॥ उआदित्याय विश्वे मार्तण्डाय धीमहि तत्वोः सूर्यः प्रचोदयात् ॥

- पुनः एक माला गायत्री मंत्र का तथा एक माला सूर्य मंत्र का जप करें।
- उसी दिन शाम को ही समर्पन सामग्री नहीं में प्रवाहित कर दें। निश्चय ही यह साधना साधक के जीवन में अद्वितीय परिवर्तन के लिए उपादेय है, जिसे वह स्वयं ही साधना के अनन्तर अनुभव कर सकेगा। यदि साधक किसी भी साधना को वर्तचिन से सम्पर्श करे, तो सब प्रतिकल का अनुभूति सम्भव होती ही है।

साधना सामग्री : 300/-

# नव वर्ष के शुभ अवसर पर

## शिव शक्ति रायग्र दिव्याभिषेक दीक्षा

### ब्याहे शक्तितत्त्व और ब्याहे शिव भाव ?

जब दोनों का सामूह्य होता है तो वह प्रकृति पुरुष का भिल बहलाता है। शक्ति को साधना चाहिए और शक्ति स्थापित होती है शिव में जब शक्ति और शिव एकत्रित हो जाते हैं तो युक्त प्रदान करते हैं, वह महा अभिषेक जो विद्यमान से युक्त है व्याहोंके द्वारा में शिव भाव और शक्ति भाव भी है। प्रत्येक साधक में शक्तितत्त्व भी है और शिव तत्त्व भी, युक्त ही उन दोनों को एकत्रित कर अपने शिष्य को पूर्णत्व की ओर अवश्यकर करते हैं। शिव तत्त्व और शक्ति तत्त्व की व्याख्या सापेक्ष करता हूआ यह आनुषम विवेचन

जो विचरणोल ऐ नथा साधनाराज्य में प्रवेष है, वे जानते हैं कि साधनामात्र ही शक्ति की आराधना है, व्योंकि विसी भी नन्याकी अनन्दिति के नमगुरु नाहे कैसा भी आधरा नक्षरस्य ने प्रतिष्ठित क्यों न हो, यदि वह शक्तिसंबंध करने द्वारा अपनी दुर्बलता का परिहार न कर सके तो स्पष्टक रूप से उस आकर्ष की उपलब्धि कर उसे अत्मस्वरूप में परिणत करने में वह समर्थ न होता, समस्त शिद्धियों शक्तिसामेश्वर है। अतएव नाधक को बाहे-नेभा भिष्ठि अनोद हो, उसका आनंदशक्ति के अनुशीलन बिना प्राप्त होना सम्भव नहीं।

इस प्रकार विचार करने से समष्टि समझ में आ जाता है कि शिव विष्णु, गणेश, सूर्य वाचव अन्य किसी भी वेवता की उपासना मूलतः शक्ति की ही उपासना है। इस प्रकार से वैष्णवादि समस्त सम्प्रदायों को यह अध्यनाद शक्ति-साधना के अन्तर्गत हैं। इनके अतिरिक्त साक्षात् भाव से भी शक्ति की साधना हो सकती है। यहां साक्षात् शक्ति-साधना के सम्बन्ध में ही संशोध में कुछ निश्चय जा रहा है।

इस इन्द्रियप्रदार में रूप, रसायन निष्प वाऽवभीतिक स्थूल-जगत् का अनुमव करते हैं, वह इन्द्रियों की उपशमा अवन्या है। नाशोन्द्रियों की भाँति अन्न-कला के भी निरुद्ध-वृत्ति की

में नरूप में वर्तमान नहीं रहता। ब्रह्मनुत, एक तरह से बाह्य जगत् इन्द्रियों का ही बहिर्भूतसमात्र है। चक्षु से ही रूप का विकास होता है तथा चक्षु ही पुनः उस रूप का दर्शन करता है।

समाधि-चक्षु रूप का साइ वे और व्यष्टि-चक्षु उसका भोक्ता है। इसी प्रकार अन्याय इन्द्रियों के सम्बन्ध में भी समझना चाहिए। उत्तम गमाहि भावापन्न पञ्चेन्द्रिय से भौतिक जगत् का विकास होता है तथा व्यहिगत पञ्चेन्द्रिय उस जगत् का सम्भोग करती है। इन्द्रियों का प्रत्याहार करके मूल स्थान में

लीन कर सकने से एक ओर जहां बाह्य जगत् का लोप हो जाता है, वहां दूसरी ओर इन्द्रियों के अभाव के कारण उनकी समझ-सम्भावना ही निवृत हो जाती है। यदि पछ्ने से श्री चित्त-क्षेत्र में

जान का सार हो तो इस अवस्था में विशुद्ध अन्तः करण का अविभाव होता है नथा साथ ही साथ अन्तर्जगत् का स्फुरण होता है। बाह्य जगत् की भाँति अन्तर्जगत् में भी समष्टिमूल अन्तः करण साइ है तथा व्यष्टि-अन्तः करण उसका भोक्ता है। जिसे अन्त नगत् या अतिवाडिक नगत् के नाम से वर्णन करने हैं, वह वस्तुतः विशुद्ध अन्तः करण का बाह्य विकासमात्र है। नाशोन्द्रियों की भाँति अन्न-कला के भी निरुद्ध-वृत्ति की

अवस्था को प्राप्त होने पर अन्तर्गत का लोप हो जाता है। इसके पश्चात् जीव शुद्ध कारणभूमि में स्थान पाता है। तब समष्टिकारण बिन्दु का स्फुरणात्मक कारण जगत् ही वृश्य होता है और व्यष्टिकारण बिन्दु तदात्मक भाव में उसे वृश्य का दर्शन करता है। सौभाग्यवश यदि कोई भाग्यवान् जीव इस मूल शक्ति का भेदन कर पाता है तो वह मूल अविद्या के विलासरूप इस मिथ्या प्रपञ्च के पाशानाल से सदा के लिये छुटकारा पा जाता है। इसके पश्चात् जीव शुद्ध कारणभूमि में स्थान पाता है। तब समष्टिकारण बिन्दु का स्फुरणात्मक कारण जगत् ही वृश्य होता है और व्यष्टिकारण बिन्दु तदात्मक-भाव में उस वृश्य का दर्शन करता है।

इस तरह स्थूल, सूक्ष्म और कारण जगत् शक्ति के ही विकास मात्र हैं। शक्ति के इन तीन विभागों अर्थात् आत्मा, वेत्ता तथा भूतरूप में शक्ति की तीन प्रकार की अवस्थिति का अनुसरण करते हुए उसका परिणामस्वरूप जगत् भी कारणादि विविधरूप में प्रकट होता है। शक्ति के बहर्मुख होकर घनीभाव तथा स्थूलत्व को प्राप्त करने पर एक और जहाँ भीतिक तत्त्वों का आविर्भाव होता है, वहीं दूसरी ओर वह क्रमशः विरल होते-होते अन्त-संकोच-अवस्था को प्राप्त कर 'आत्मा' अथवा 'बिन्दु' पदवाच्य हो जाती है। अतएव तथा कथित आत्मा, वेत्ता और भूत एक ही आधाशक्ति की विविध अवस्था मात्र है। वेस ही कारण, लिंग तथा स्थूल- यह विविध जगत् भी एक ही मूल सत्ता के तीन प्रकार के परिणाम के सिवा और कुछ नहीं है। शक्ति के साथ सत्ता का क्या सम्बन्ध है, सम्प्रति हम उसकी आलोचना नहीं करेंगे। फिर भी यह स्मरण रखना होगा कि दोनों के वैषम्य से ही जगत् की सृष्टि तथा सम्भोग, अर्थात् ईश्वरभाव और जीवभावका उन्मेष होता है; किन्तु जब साम्य-अवस्था उदय होती है, तब एक और जहाँ जीव और ईश्वर का पाररूपिक मेद तिरोहत हो जाता है, वहीं दूसरी ओर मुहिं और दृष्टि एकार्थोधक व्यापार हो जाते हैं। तब भूमिभेद के अनुसार साम्य की उपलब्धि होते-होते विविध साम्य के बाव खाभाविक नियम से परमाद्वेष जयवा महासाम्य का आविर्भाव होता है। जो शक्ति और सत्ता स्थूलभूमि में आत्मप्रकाश किये हुए हैं, उनका साम्य ही प्रथम साम्य है। उसी प्रकार सूक्ष्म और कारण-जगत् के सम्पर्क में रहने वाली शक्ति और सत्ता का साम्य क्रमशः द्वितीय और तृतीय साम्य के नाम से पुकारा जाता है। यह विविध साम्य पाररूपिक भेद का परिहार कर जिस महासाम्य में एकत्र लाभ करता है, वहीं परमाद्वेष या ब्रह्मतत्त्व है। महाशक्ति के

उद्घोषन के बिना इस अड्डेत-तत्त्व में स्थित लाभ करना तो दूर रहा, प्रेवेशाधिकार पाने की भी संभावना नहीं है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भूमिभेद से प्रत्येक स्तर में शक्ति के उद्घोषन की आवश्यकता है। नहीं तो तत्त्व भूमि की सत्ता अचेतन-भाव को त्यागकर स्वयं प्रकाश चैतन्य के साथ एकभूत नहीं हो सकती क्योंकि अनुद्वेष शक्ति सत्ता की प्रकाशक नहीं होती और अप्रकाशमान सत्ता कभी विद्भावपन्न नहीं हो सकती। वह असत्कल्प एवं जड़ता का ही नामान्तरमात्र होती है।

उपर्युक्त विश्लेषण से समझा जा सकता है कि शक्ति की आवश्यकता के बिना एक और जिस प्रकार स्थूल भाव को आयत नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार दूसरी और आत्मसत्ता की भी उपलब्धि नहीं हो सकती। अतः पृथ्वी में जितने प्रकार के धर्मसम्प्रशाय हैं, उनमें शक्ति की आवश्यकता किये बिना किसी का काम नहीं चलता।

यह अनन्त वैचित्र्यमय विश्व, जिसे हम निरंतर नाना प्रकार से अनुभव करते हैं, वस्तुतः शक्ति के आत्मप्रकाश के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। सूक्ष्म कारण-जगत् और ईन्द्रियगैर स्थूल-जगत्, लिंगात्मक सूक्ष्म-जगत् और इन्ड्रियगैर स्थूल-जगत् शक्ति के ही विभिन्न विकास मात्र हैं। इस विश्व के मूल में जो पूर्ण सत्ता पारमार्थिक रूप में वर्तमान है, वहीं शक्ति का परम रूप है। विशुद्ध चैतन्य के नाम से वर्णन करने पर भी इसका ठीक परिचय नहीं दिया जा सकता। सच्चिदानन्द शब्द से वर्णन करने पर भी इसका ठीक-ठीक निर्वेश नहीं किया जा सकता। इस वाणी और मन के अणोचर अनिवेष्य अवर्णनीय परमार्थसत्ता को ही शास्त्र में 'परमपद' कहा गया है। यह सत् है या असत्-यह विषय लैकिक विचार के विषयभूत न होने पर भी विचारदृष्टि से देखने पर आलोचना प्रभंग से यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इसमें प्रकाश और विमर्श-ये दोनों अंश अविनाभूत रूप में वर्तमान हैं। प्रकाश के बिना जिस प्रकार विमर्श असम्भव है, उसी प्रकार विमर्श की त्यागकर प्रकाश की स्थिति भी सम्भव नहीं है। यह शिव शक्ति स्वरूप प्रकाश और विमर्श नित्य सम्बन्ध ही वैतन्य रूप से महापुरुषों की अनुमूलि में आता है तथा शास्त्र में प्रचारित होता है किन्तु चैतन्य होने पर भी वह प्रकाश और विमर्श की साम्यावस्था में अवश्य ही रह जाता है। इसी अवस्था का दूसरा नाम परम पद है। इस साम्यावस्था में महाशक्तिस्वरूप अनादिशक्ति परम शिव के साथ सामर्थ्य-भावापन्न होकर अद्वयरूप में विशेषमान रहती है। स्वरूपदृष्टि से इस अवस्था

को एक प्रका है, परंतु इस रहने के का स्वरूप इस भूमिका यह है: क्योंकि ही तीन अविश्वात्मक परम पद से इसी के स्वाम्य के भी अनन्तता है तथा इस गुणप्रधान तत्त्वसमन्वय आवश्यक अस्तित्व पर जीव-अभिज्ञ से स्वातान्त्र विक्षेप भवति उसके द्वा उसी में विश्वप्रपञ्च है अतएव विशिष्ट समाज का गुणित्व नहीं दिया जा सकता। सच्चिदानन्द शब्द से वर्णन करने पर भी इसका ठीक-ठीक निर्वेश नहीं किया जा सकता। इस वाणी और मन के अणोचर अनिवेष्य अवर्णनीय परमार्थसत्ता को ही शास्त्र में 'परमपद' कहा गया है। यह सत् है या असत्-यह विषय लैकिक विचार के विषयभूत न होने पर भी विचारदृष्टि से देखने पर आलोचना प्रभंग से यह स्वीकार करना पड़ेगा कि इसमें प्रकाश और विमर्श-ये दोनों अंश अविनाभूत रूप में वर्तमान हैं। प्रकाश के बिना जिस प्रकार विमर्श असम्भव है, उसी प्रकार विमर्श की त्यागकर प्रकाश की स्थिति भी सम्भव नहीं है। यह शिव शक्ति स्वरूप प्रकाश और विमर्श नित्य सम्बन्ध ही वैतन्य रूप से महापुरुषों की अनुमूलि में आता है तथा शास्त्र में प्रचारित होता है किन्तु चैतन्य होने पर भी वह प्रकाश और विमर्श की साम्यावस्था में अवश्य ही रह जाता है। इसी अवस्था का दूसरा नाम परम पद है। इस साम्यावस्था में महाशक्तिस्वरूप अनादिशक्ति परम शिव के साथ सामर्थ्य-भावापन्न होकर अद्वयरूप में विशेषमान रहती है। स्वरूपदृष्टि से इस अवस्था

को एक प्रकार से परब्रह्म-भाव का ही नाभान्तर कहा जा सकता है। परंतु इसमें इसके स्वरूप भूत स्वातन्त्र्यके नित्य वर्तमान नहीं के कारण यह ब्रह्मतत्त्व से विलक्षण ही है। महाशक्ति नवरूप इस परम पद की जो बात यहाँ कही गई है, उससे कोई सम्बन्ध यह न समझे कि वही निष्काल अवबोध पूर्णकल परमेश्वर है। इन्होंके विष्णु, निष्काल-सकल तथा सकल ये विश्व की ही तीन जपस्थाएँ हैं। परंतु महाशक्ति सर्वातीत होने के कारण विष्णवानक होने हुए भी वस्तुतः विश्वोत्तीर्ण है। इस विश्वातीत परम पदसे इसी के स्वातन्त्र्यस्वरूप आत्मविलास से नित्य

सत्त्व के भग्न न होते हुए भी एक प्रकार

की चम्पवत् अवस्था का उद्भव होता

है तथा इस वैषम्य के फलस्वरूप

गुणप्रधान भाव में छत्तीस

नन्दसमन्वित विश्व का

आविर्भाव होता है।

अद्वैत परमार्थ स्वरूप

के शिव-शक्ति से

जग्मान्न रूप होने पर

भी स्वातन्त्र्यग्रन्थित

विक्षेप के कारण

उसके द्वारा अध्यवा

उसी में वेदमय

विश्वप्रपञ्च का उदय होता

है। अतएव विविधविभाग-

विशिष्ट समस्त विश्व मूलतः

शक्ति का ही विकास है, यह

सुनिश्चित है।

### आद्याशक्ति का स्वरूप-निर्वचन

#### और आत्मदर्शन

आद्याशक्ति तत्त्वातीत होते हुए भी सर्वतत्त्वमयी और प्रपश्चरूपा है। वह नित्या, परमानन्दस्वरूपिणी तथा चराचर जगत् की बीजस्वरूपा है। वह प्रकाशात्मक शिव के स्वरूप ज्ञान का उद्बोधक दर्पणस्वरूप है। अहंज्ञान ही शिव का स्वरूप ज्ञान है। आद्याशक्ति का आश्रय लिये बिना इस आत्मज्ञान का प्रकाश नहीं हो सकता। आगमविद्वान् कहते हैं कि जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने सामने स्थित स्वच्छ दर्पण में अपने प्रतिविम्ब को देखकर उस प्रतिविम्बको 'अहं' रूप में

पहचान लेता है, उसी प्रकार परमेश्वर अपने अधीन स्वकीय शक्ति को देखकर अपने स्वरूप की उपलब्धि करते हैं।

आत्मशक्ति का दर्शन एवं आत्मस्वरूप की उपलब्धि और आप्नादान एक ही वस्तु है। यही पूर्णांहता का चमत्कार अथवा सचिदानन्द की घनाशून अभिव्यक्ति है। 'मैं पूर्ण हूँ' यह जान ही नित्यसिद्ध आत्मज्ञान का प्रकृत स्वरूप है। वस्तु का सामीक्ष्य-सम्बंध न होने पर जैसे दर्पण प्रतिविम्बको ग्रहण नहीं कर सकता अथवा वस्तु का सांनिष्ठ होने पर भी प्रकाश के अधाव से दर्पण में स्थित प्रतिविम्ब जैसे प्रतिविम्ब स्वरूप में नहीं

प्राप्त होता, उसी प्रकार पराशक्ति भी

प्रकाशस्वरूप परम शिव के

सांनिष्ठ के बिना अपने

अनन्तस्थित विश्वप्रपञ्च

को प्रकटित करने में

समर्थ नहीं होती।

इसी कारण शुद्ध

शिव अथवा

शुद्ध शक्ति

परस्पर

सम्बंधरहित

होकर अकेले

जगत् के

निर्माण का

कार्य नहीं कर

सकते। दोनों को

अपेक्षित सङ्कारिता

के बिना सृष्टिकार्य

असम्भव है। सारे तत्त्व इन

दोनों के पारस्परिक सम्बंध से ही

उद्भूत होते हैं। इससे कोई यह न समझे

कि शिव और शक्ति अथवा प्रकाश और विमर्श परस्पर विभिन्न और स्वतंत्र पदार्थ हैं।

### शिवशक्ति रिति होक तत्त्वमहर्मनीषिणः।

ज्ञान का वही अन्तिम सिद्धान्त है। तथापि संहार कार्य में शिवका और सृष्टिकार्य में शक्ति का प्राधान्य स्वीकार करना होगा। पराशक्ति स्वतंत्र होने के कारण परावाक्-प्रभृति ऋग् वा अवलम्बन कर विश्वसृष्टि का कार्य सम्पादन करती है और सृष्टि विश्व के केन्द्र स्थान में अवस्थित होकर उसका नियमन

करती है। यही स्वातन्त्र्य उपर्युक्त शैलि से कमरा, इच्छा, जग और किया का आकार प्राप्त कर वैचित्र्यका आविर्भाव करना है और विश्वरूप धारण करता है। शिव तटस्थ और उदरीन रहकर निरपेक्ष साधितरूप में आविर्भावित की वह जीला देखा करते हैं। वह नाना तत्त्वमय विश्वसृष्टि ही परायाकि का स्फुरण है। अतएव इकि को एक अव्यक्त वा प्रलीन अवस्था है, जहाँ इकि शिव के साथ एकाकार होकर शिवरूप में ही विरावान रहती है तथा उसकी एक अधिव्यक्त अवस्था भी है, जिसमें उसके द्वारा तत्त्वमय विश्व या देवताचक एक साथ ही एवं क्रमशः आविर्भूत होते हैं। परशक्तिद्वारा अपने स्फुरण का दर्शन और विश्वका आविर्भाव एक ही बात है, वज्रोंकि इस आदिग्रन्थि में दृष्टि और सृष्टि समानावेक है, परंतु इस झागिक आविर्भाव की एक प्रणाली है।

### महाशक्ति और शिव

सृष्टि आदि में अनदिकाल में जो अव्यक्त, दृग्ं निराकार और शून्यस्वरूप वस्तु विराजमान है, वह तत्त्वातीत, प्रपञ्चातीत तथा व्यवहार-पथ के भी अतीत है। वही शक्तों की महाशक्ति है और वैदेशों के परम शिव हैं। वाणी और मन के अगोचर होने के कारण ही इसे अनुत्तर कहा जाता है। वस्तुतः इसका वर्णन न तो कोई कभी कर सका है और न आगे कर सकने की ही सम्भावना है। इसे विश्व प्रकाश कहें तो अनन्तलीन विमर्श के कारण यह प्रकाशमान है। अतएव इसमें स्वयंप्रकाशभाव है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। इसी प्रकार इसे विशुद्ध विमर्श भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि प्रकाशहीन विमर्श अस्तकरूप है। इस तत्त्वातीत और अनुत्तर अवस्था के निये शास्त्र में वाचकरूप में आविर्भूत 'अ' कारका व्रयोग होता है। इसके बाद दोनों की सामरस्य-अवस्था है, 'अ' वारस्य प्रकाश के साथ 'ह' वारस्य विमर्श का उत्तीत अर्थन के साथ सोम का गायधार ही 'कान' उथाया 'रवि' नाम से प्रसिद्ध है। शास्त्र में जिस अन्नीषामात्मक बिन्दु का उल्लेख पाया जाता है, वह भी वही है। शिव ही 'अ' और इकि ही 'ह' है- बिन्दुरूप में यही 'अह' अथवा पृथग्हिता है। साम्यभेद होने पर यह बिन्दु प्रस्पन्दित होकर शुक्ल और रक्त बिन्दुरूप में आविर्भूत होता है। इस प्रस्पन्दन कार्य से जो अधिव्यक्त होता है उसे ही शास्त्र में संविन् अथवा चैतन्य के नाम से वर्णित किया जाता है। इसी का दूसरा नाम चित्कला है। अग्नि के सम्पर्क से धून जिस प्रकार गले कर धारारूप में बहने लगता है, उसी प्रकार प्रकाशान्तरक शिव के सम्पर्क से विमर्शरूप परायाकि दून होती है तथा उससे एक

परमानन्दमय अमृत की धारा का साथ होता है। यही धारा पक प्रकार से उपर्युक्त चित्कला एवं दूसरे प्रकार से ब्रह्मानन्द का स्वरूप है। निष्कल चैतन्य में कला का आरोप भग्मयनीय नहीं है। अतएव यह चित्कला महाशक्ति के स्वातन्त्र्य के उन्नेश के कारण शिव-शक्ति के आविर्भाव वैष्णव में उपनिषद्कि भाव के प्राधान्य से प्रकाशांश और विमर्शांशके गर्नीभूत संश्लेषण से उद्भूत होती है। शुक्ल प्रकाश किंतु शुद्ध विमर्श बिन्दुरूप धारण करता है। जिस विमर्शांशके में शिखिल प्रपञ्च विलीन रहता है, उसके संसर्ग से अनुत्तर अथवारूप प्रकाश बिन्दुरूप धारण करता है। यह संसर्ग विमर्शांशके में प्रकाश के अनुप्रवेश के द्विवा और कुछ नहीं है। इस बिन्दु का नाम नार प्रकाशबिन्दु है, जो विमर्शांशके गर्भ में स्थित रहता है। इसके पश्चात विमर्शांशके प्रकाश बिन्दु में अनुप्रविष्ट होने पर यह बिन्दु उच्छून हो जाता है अर्थात् पृथिव्याम करता है, तब उससे तेजोमय बीजस्वरूप नात निर्भात होता है। इस नात में यमस्त तत्त्व भूम्भारूप से निहित रहते हैं। नात निर्भात डोकर त्रिकाणकार रूप धारण करता है। यही 'अहम्' नामक बिन्दुनामात्मक प्रकाश विमर्श का शरार है। इसमें प्रकाश शुक्ल बिन्दु है और विमर्श रक्तबिन्दु तथा दोनों का पारस्परिक अनुप्रवेशात्मक साम्य भिश्वबिन्दु है। इसी साम्य का दूसरा नाम परमात्मा है।

### गुरुधाम और दीक्षा

योग वृष्टि से गुरुधाम को प्रथम योग क्षेत्र माना गया है। साधक अपना कर्म करते हुए भी गुरुधाम में आकर महाभाव का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। क्योंकि गुरु याक्षात् शिव स्वरूप होते हुए अखण्ड सत्ता के सूष्ठा होते हैं और शिव में ही शक्ति समाहित रहती है। इसी लिए गुरु को गुरुकी दाना शिव रूपरूप कहा जाता है। 'एको ही नामम एको ही ध्यानम्' जहाँ गुरु का प्रतीक है वही यह शिव का प्रतीक है।

गुरु का भूल्य कार्य शिष्य की आत्मा के साथ असिद्ध होकर उत्थाय स्वप्न यैतन्य की भाव भूमि को स्वप्नरूप से एक विशिष्ट प्रक्रिया द्वारा शुद्ध करना है। इस प्रथम कार्य के पश्चात ही मात्रात्मक कार्य होता है। जिसमें जान दीक्षा द्वारा विन आनन्द इच्छा शान और क्रिया शक्तियों का शिष्य में उद्भावन करना है।

दीक्षा के भी दो अंग हैं। एक है पाशों का नाश और दूसरा है शिव तत्त्व के साथ शिष्य का योग इसी लिए गुरु शिष्य के भीतर सम्ना शक्ति को आरोहित करते हैं। शिष्यात्मक के

नव वर्ष का अनुग्रह दीते ही वह सर्वतत्वों में व्यापक तत्व हो जाता है। क्योंकि सर्वतत्वों का सूचनान सम्मान से ही होता है। दीक्षा में भी कार्य मुख्य है। पहला शिष्य के पाशों का नाश और दूसरा शिष्य दीक्षा अर्थात् शिष्य में जो मर्लीनता है उसका निवारण कर उसे शिव भवरूप से युक्त कर देना। दीक्षा के सब वृक्ष गुरु की ही करने पड़ते हैं। उसमें गुरु के मंत्र वाकि प्रवान नाम है। गुरु भावना सिद्ध होते हैं अतः शिव विशेष में उन्हें नामन का भी उपयोग करना पड़ता है।

प्रबोधकर की अनुग्रह शक्ति गुरु के हृदय में पारमार्थिक स्वप्न से निवृत्त होती है। यह शक्ति शिष्य को पशुत्व से निवृत्त करने के लिए उसके मार्ग में आसी हृदय गमी बाधाओं को हटाने हुए प्रकाशित होकर दीक्षा, जाग, योग आदि के द्वारा हुए करती है। अतएव गुरु शक्ति के रूप में मंत्रावाद के शोधन है।

दीक्षा भी मूलतः दो प्रकार की होती है। सामान्य और विशेष अन्यथा दीक्षा साधारणतः समय दीक्षा कही जाती है। यह विशेष दीक्षा की भूमिका के रूप में है। इन दीक्षा में गुरु शिष्य को सद्ग पद से युक्त कर देते हैं। शिष्य के मस्तक पर आशीर्वाद के रूप में शिव हस्त का अर्पण ही समय दीक्षा है।

**ब्रह्मप्रपञ्चसंयुक्तः शिवेनाधिष्ठितः शिवः।  
पाशान्त्रेदकरः क्षमी शिवहस्तः प्रकीर्तिः ॥**

इस के प्रभाव से शिष्य के विभिन्न प्रकार के पाशों के अंकुर नष्ट हो जाते हैं और उसकी उत्पादन शक्ति, कर्म शक्ति, तीव्र हो जाती है। इस दीक्षा में अत्यंत मद शक्ति पास से शिष्य के हृदय में भर्ति और श्रद्धा का उदय होता है। इस दीक्षा में दीक्षित होकर ही शिष्य गुरु की सेवा और देवताओं की पूजा अचंना का अधिकारी होता है। दम्भी प्रकार की दीक्षा विश्व एवं काल्पहिण्ण शिष्यों के लिए है।

यह दीक्षा प्राप्त कर शिष्य के लिए कुछ विशेष आवश्यक विचार का पालन आवश्यक है। इस दीक्षा को पुत्रक दीक्षा और भावर्य दीक्षा कहा गया है। क्योंकि इसे ही उपर्युक्त होती है शिष्य के भावन गुच्छ विद्या वागेश्वरी। वागेश्वरी का तात्पर्य है सरस्वती शक्ति और इसी के प्रभाव से आत्मा सम्प्रक, गुरुद्वारा होता है और पूर्णत्व की प्राप्ति होती है। परं भाव में स्थित आत्मा पशुत्व से निवृत्त होकर शिवत्व को प्राप्त होते हैं।

## नव वर्ष का प्रारंभ

वर्तमान अवसर में नव वर्ष को ईस्टी सम के हिसाब से माना जाता है और वर्ष के प्रथम दिन ग्रन्तीक व्यक्ति कुछ न कुछ संकल्प अवश्य लेता है। यह संकल्प अपने जीवन में बीते साल के दोषों को भिटाकर अपने भीतर नवीनता भरने के लिए डीना है। यदि शिष्य संकल्प सिद्ध है और उसने अपने जीवन को पूणार्दित की और आग्रह करना ही है तो गुरु का सानिन्द्रिय और गुरु धाम से श्रेष्ठ व्यापक कथा हो सकता है।

आग्रह ग्रन्थों में अप्प स्वप्न ये लिखा है कि शक्तिपात होने पर ही मुक्ति निश्चित है और शक्तिपात की मात्रा दीक्षा के प्रकार भेद पर निर्भर करती है और इस भार तो शिष्यों को प्राप्त होने जा रही है नव वर्ष के प्रारंभ में दिव व शक्ति सायुज्य विव्याभिषेक महादीदा, निसमें तीव्र तम शक्तिपात होने पर एक ही क्षण में जीवन को गति प्राप्त हो जाती है।

**तस्य दीक्षां विनेद आत्मसंस्कारपरिणामतः।**

**सम्यग्गज्ञानं भवेत् सर्वशास्त्रेषु परिनिष्ठितम् ॥**

अर्थात् बाह्य दीक्षा ग्रन्त आवश्यक नहीं है परंतु आत्म संरकार खापी आनंद दीक्षा आवश्यक है।

आरोग्य धाम, गुरु धाम से आप सबका स्वागत है। जहाँ नव वर्ष का प्रारंभ पूर्ण गुद्धता के साथ भगवान शिव का अभिषेक करते हुए और महाभगवती शक्ति की आराधना करने हुए शिव और शक्ति दोनों तत्त्वों से युक्त होकर विन इकि को आमन्द शक्ति में परिवर्तित कर पूर्ण किलात्मक रूप से इस जीवन को जीना है। शिव रूपी गुरु ही कृषिलिनी जागरण की संपूर्ण क्रिया संपन्न कर मूलाधार से नाहसार तक जाग्रत कर देते हैं और सब शिष्यों का एक ही भाव है।

**-निखिल वन्दे जगदगुरुः-**

## विशेषसूक्ताना

जो शिष्य है जनवरी २००२ को आशीर्व धाम आकर विव्याभिषेक ग्रन्ति सायुज्य दीक्षा ग्रहण करना चाहते हैं उस शिष्यों से आग्रह है कि वे जिन '५ व्यक्तियों (वल्ले पृष्ठ ४२ पर) को सकारा बनाएं वे वारतव में श्रेष्ठ विचारों वाले यापक विन महयोगी इत्यादि हों जो पवित्र का सास्यना उपहार में पाकर पवित्र का अध्ययन भी करें। संत्र-तत्र-यत्र विज्ञान पवित्र का सद्गुरुद्वय के जान का स्पष्ट करना हुआ आधुनिक व्यग की गुरु नीता है। इस श्रेष्ठ कार्य में आप इत्यादि से ज्यादा सहयोगी बनें।

# जीवन यत्ता, एवं कर्त्ता का आनन्द

## धन यत्ता, एवं कर्त्ता का आनन्द

जीवन शोषण समिक्षा कर और जीवन की अवश्यकियों संग्रह कर बहुत शीघ्र उस स्थान पर आ जाता है जहाँ समिक्षा कर्त्ता और जीवन-यापन का समस्या भाग में आकर लड़ी जाती है। अर्थे इस नियमि के लिए व्यक्ति पहले ससानक न होया कोई प्रबोध न किया हो, तो सकारात्मक सामाजिक अस्त-व्यस्त होकर रह जाता है।

जीवन में कर्त्त्व आवश्यक हो सकते हैं लेकिन जिस प्रकार से कर्त्त्व आकर जीवन को उसित कर लेते हैं वह न तो आवश्यक होता है न सहज। बचपन, बद्धगत के बाद किशोरावस्था, किशोरावस्था के बाव योवन और इसी योवन की प्रथम सीढ़ी पर पांच रुकते ही कर्त्त्वों का संसार भी प्रारंभ हो ही जाता है। स्वयं खुद के भरण-पोषण के साथ-साथ माता-पिता का दायित्व, छोटे भाई-बहिनों का परोक्ष उत्थवा अपरोक्ष रूप से दायित्व एवं स्वयं अपने परिवार की निम्नेवारी-यही लगभग पचहतर प्रतिशत व्यक्तियों के जीवन की कथा है। शेष वर्षीय प्रतिशत में हो सकता है कि उन्हें पैतृक सम्पद मिली हो, पारिवारिक दायित्व, किन्हीं अन्य गुविधाओं से या तो न हो अथवा सीमित हो, किन्तु फिर भी जीवन-यात्रा तो शेष रह ही जाती है।

प्रायः २०-२२ वर्ष की अवस्था आते-आते व्यक्ति को अपने भविष्य और भावी जीवन की चिन्ताएं आकार धेर लेती होती हैं। सब, व्यवसाय अथवा नीकरी-इनमें से किसका चुनाव किया जाए, इस बात का द्वंद्र प्रारंभ हो ही जाता है। कुछ

सीभाग्यशाली होते हैं जिन्हें पैतृक रूप से जीवन-यापन का सार्व मिल जाता है। धर का व्यवसाय या पैतृक सम्पत्ति मिल जाती है किन्तु सम्पत्ति प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता और सफलता नहीं मानी जा सकती, इसके बाव भी विवाह, शुद्ध का स्वास्थ्य, शत्रु निवारण, धर की शान्ति जैसे बहुत से पक्ष शेष रह जाते हैं। दूसरी ओर भागान्य व्यक्ति को तो प्रारंभिक बिन्दु अर्थात् धन के उपार्जन से ही अपने जीवन का प्रारंभ करना पड़ता है।

जीवन के कर्त्त्वों और इन आवश्यक प्रारंभिक पक्षों के विद्युक्षण धर के लिये परे रखकर देखें तो व्यक्ति की अपनी इच्छाओं और भावनाओं का भी संसार होता है। और वह संसार ही उसके वैनिक जीवन में सरसता तथा गति का आधार होता है। लेकिन कब जीवन कर्त्त्व भावना और वास्तविकताओं के बीच गहू-महु ढोकर बीत जाता है इसका पता ही नहीं चलता और जब तक पता लगता है, जीवन में कुछ ठहराव आता है तब तक शुद्ध ही संतान बहु हो गई लगती है। पता लगता ही नहीं कि जीवन की उस पहली सीढ़ी के बाव कब २०-२२ वर्ष बीत

जहे और जीवन के उस चरण तक आने के बाद मन में उमंगे जाने वाया न बची हो, जीवन में आशा शेष रह गयी हो या न रह गयी हो, कुछ कहा नहीं जा सकता।

एक प्रकार से देखा जाये तो प्रायः पवीस वर्ष की अवस्था के क्षेत्र पर कर्त्त्वों का जो जुआ लाकर रुख दिया जाता है वह जिस मृत्यु के साथ ही उत्तरता है और उत्तरता कहा है? व्यक्ति जाने जाते अपनी सत्तानों के क्षेत्र पर रखकर चला जाता है, इसका क्या कारण है, इसका क्या उपाय है, यह सोचने के उद्देश्य जीवन में जाने ही नहीं क्योंकि धन कमा कर कुछ पुर्संत जाये तो पत्नी की बीमारी सामने आकर खड़ी हो गयी, पत्नी उद्देश्य लुड़ हो तो बेटा पढ़ाइ में कमज़ोर पड़ने लगा, उससे नहें तो कहीं धन फेस गया, ज्यों-त्यों उसको जीनिवाराया तो शुद्ध का रवास्थ्य....

साधक पत्रिका में वर्णित साधनाये पहुंचते हैं, उनका जाभ जो प्राप्त करते हैं किन्तु उनके मन में एक प्रश्न जोड़ रह जाता है कि जीवन पूरी तरह ऐसे क्यों नहीं संवर रहा है? उन्हें शंका होती है कि मैंने अमुक-अमुक साधनाएं की, हीक्षणाएं भी ली किन्तु पूर्णरूप से लाभ नहीं मिल सका और एक प्रकार से उनका सोचना गलत भी नहीं है क्योंकि प्रत्येक नागरुक साधक अपनी और से अपनी क्षमता भर प्रयास करता ही है, इसमें कभी केवल यह रह जाती है कि उनके जीवन में प्रत्येक साधना आवश्यक होते हुए भी फल अपने विशेष स्वरूप के अनुसार ही देती है, जबकि जीवन की सफलताएं अनेक पक्षों से निर्भित होती हैं।

जीवन के अनेक पक्ष और वे भी पूर्णता से, प्रत्येक साधना नहीं सनेट सकती जबकि एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा का

जन्म होता ही है, एक स्थिति में सफलता मिलने के बाद दूसरी स्थिति सामने आती ही है और इनकी पूर्ति करना भी कोई दोषशुल्क कार्य नहीं है। जीवन के ऐसे सिन्तान को लेकर योगियों ने वे सूत्र लूँगे चाहे जो जीवन के आवश्यक सूत्र हैं और उनके साथ ही साथ कोई ऐसी साधना भी प्राप्त करनी चाही जो जीवन के सभी प्रारंभिक और आवश्यक तत्वों को अपने साथ समर्दती हो। उन्होंने अपने निष्कर्षों में पाया कि जीवन के ऐसे पथ कुल १४ हैं जिनमें धन प्राप्ति, स्वारस्य, परिवारिक सुख, शुद्ध बाधा निवारण, राज्य सम्मान, विदेश यात्रा योग, पुत्र सुख, इत्यादि सम्मिलित किये और वह निष्कर्ष निकला कि जीवन में इन चौदह स्थितियों का प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता है जिसे

उन्होंने भाग्योदय के नाम से वर्णित किया,

जिसके द्वारा जीवन की प्रारंभिक

स्थितियों को सुधारने के साथ ही

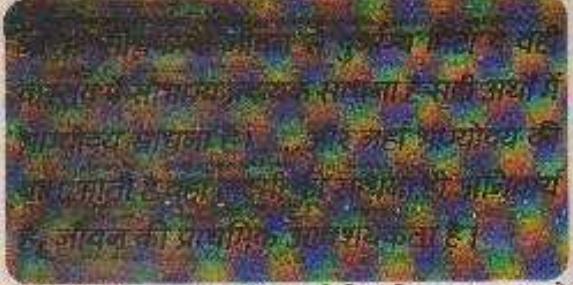
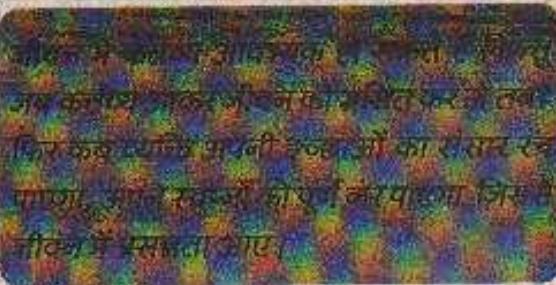
साथ जीवन की भावी

योगनाओं की पूर्ति भी हो

सके।

जीवन में साधनाये तो महत्वपूर्ण होती ही है उनके साथ ही साथ वे विवर भी महत्वपूर्ण होते हैं जिनका तावात्म्य साधना विशेष से किया जाए और जब ऐसा संभव हो सकता है अर्थात् उचित मुद्रूर्त का समन्वय उचित साधना से कर दिया जाता है तब तो विशेष कुछ घटित होता ही है। यों तो जीवन में कोई भी साधना कभी भी सम्पन्न की जा सकती है किन्तु जो साधनाये प्रारंभ की, आधार एवं एक प्रकार से अंकुरण की साधनाये होती हैं उनके सन्दर्भ में सुहृत्ते का महत्व सबसे अधिक होता है। ठीक यही बात उन साधनाओं के सन्दर्भ में भी कही जा सकती है जो सम्पूर्णता की साधनाएं- इन दो दशाओं में साधना विशेष का महत्व काल के किन्हीं विशेष क्षणों से पूर्णतः

४ 'वद्यमन' २००१ मंत्र-तंत्र-द्युति विज्ञान '३७' ४



बहु होता हो है।

भाष्योदय साधना एक ऐसी ही विशिष्ट साधना है जिसका सम्बन्ध निश्चित सिद्धिदिवस से किया गया है, जो हस्य वर्ष ११-१२००२ को घटित हो रहा है। सिद्धाश्रम पंचांग द्वारा प्रणीत यह मुहूर्त आत्मन्त्र उच्चकोटि का मुहूर्न है और जहां सिद्ध योगी इस दिवस का उपयोग किसी उच्चकोटि की साधना को सम्पन्न करने में करते हैं वहीं गृहस्थ व्यक्ति इस दिन का उपयोग भाष्योदय साधना में कर सकते हैं। उच्चकोटि की साधनाओं में प्रवेश लेने से पूर्व, महाविद्या साधना अथवा जगदम्बा साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करने हेतु भी भाष्योदय साधना सम्पन्न करना अति आवश्यक माना गया है।

इस साधना की मूलशक्ति यों भगवती महालक्ष्मी है और जहां केवल महालक्ष्मी साधना सम्पन्न करने से साधक को धन, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है वहीं महालक्ष्मी को आधार बनाते हुए इस दिवस की भाष्योदय साधना सम्पन्न करने से उसे सर्वविधि सौभाग्य प्राप्त होता है। एक प्रकार से महालक्ष्मी अपने एक हजार आठ वर्णित स्वरूपों के साथ पूर्ण कृपानु हो जाती है और विशेष यंत्रों के माध्यम से विशेष प्रक्रिया के द्वारा उनको चिरस्थायिन्व विद्या जा सकता है, जिससे साधक के जीवन में कदम-कदम पर आधार और अड़चने न आए।

साधक को चाहिए कि इस दिवस की साधना सम्पन्न करने के लिये समय से बहुत पहले ही सचेत होकर इस साधना की सामग्री को प्राप्त कर लें, क्योंकि यह अवसर प्रेसा विशिष्ट अवसर है जो वर्ष में केवल एक बार ही घटित होता है। अन्य साधनाएं तो किन्हीं भी शुभ दिवसों या नक्षत्रों में की जा सकती हैं बिल्कु भाष्योदय की यह साधना तो केवल निश्चित सिद्धिदिवस पर ही सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में केवल तीन सामग्रियों की आवश्यकता होती है- पारद श्रीधंत्र, सौभाग्य शंख एवं कमलगड्डे की माला इसके अतिरिक्त इस साधना में किसी विशेष विधि-विधान या पूजन की आवश्यकता नहीं है। यदि साधक के पास महालक्ष्मी का चित्र हो तो वह उसे मढ़वा कर स्थापित कर दे अथवा महालक्ष्मी

के किसी भी स्वरूप का प्राण-प्रतिष्ठित चित्र प्राप्त कर उसे साधना हेतु मढ़वा कर स्थापित कर लें।

साधना विवर के द्विन प्रातः नी बजे से दस बजे के मध्य साधना में अवश्य बेठ जाएं और समय को इस प्रकार से निश्चित कर लें कि साधना बारह बजे के पहले-पहले अवश्य पूर्ण हो जाये। महालक्ष्मी के चित्र के सामने भी का बड़ा वीपक लगाएं कुंकुम, केसर, अक्षत, पृथ्वी की पंखुडियाँ एवं नैवेद्य से उनका पूजन करने के उपरान्त केसर से स्वस्तिक चिन्ह अंकित कर उस पर सौभाग्य शंख स्थापित करें और पहले से ही चुनकर रखे चाबल के १०८ बिना दृटे दानों को मंत्रोच्चार पूर्वक सौभाग्य शंख पर स्थापित करें।

#### मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं कर्णी श्रीं लक्ष्मीरागच्छागच्छ मम मंदिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वास्था

इस पूजन के उपरान्त कमलगड्डे की माला से श्रीयंत्र पर बाटक करते हुए निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

#### मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं कर्णी श्रीं सिद्ध लक्ष्मी नमः

मंत्र जप के उपरान्त भगवती महालक्ष्मी की आरती करें और प्राप्तना पूर्वक अपने स्थान को छोड़ें। उस समर्पण दिवस पूजन सामग्री को स्थापित रहने दें लेकिन ध्यान रखें कि चूहे आदि पूजा स्थान को अव्यवस्थित न करें।

सायकाल गोधूलि के पश्चात उपरोक्त मंत्र की एक माला जप पुनः करें तथा सौभाग्य शंख पर चढ़ाए गये चाबलों अथवा पृथ्वी की पंखुडियों को किसी रेशमी कपड़े में बांध लें जो आपके जीवन में स्थायी सौभाग्य के रूप में विद्यमान रहेंगे। सौभाग्य शंख एवं कमलगड्डे की माला को अगले दिन प्रातः विसर्जित कर दें और श्रीयंत्र को किसी भी पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें। सौभाग्य प्राप्ति की यह विशेष सिद्धि सफल साधना किसी भी आयु वर्ग कोई भी साधक या साधिका सम्पन्न कर सकती है।

साधना सामग्री- ५५०/-

पूर्ण  
वालों  
एकत्र  
हैं....

गुरु वी  
का चबन  
लिए ही स  
का एक पु  
विव्य बना  
साधनाएं  
मन में जर  
'इन द  
साधनाओं  
किसी मह  
तभी मैं प्र

# साधना निष्ठा और धृति

इस प्रकृति में व्यर्थ कुछ घटित होता ही नहीं।

पूर्ण ललक, वैतन्यता व आत्मविश्वास का आश्रय ले कर साधना क्षेत्र में उतरने वालों को भी अनेक विसंगतियों का सामना करना ही पड़ता है, पर अन्ततः उनके एकनिष्ठ भाव के समक्ष प्रकृति के रहस्य भी अपनी गोपनीयता प्रकट कर ही देते हैं... और तब फिर एक ही राह शेष रह जाती है... एक साधक के जीवन की सत्य अनुभूति...

गुरु दीक्षा के उपरान्त घर लौट कर सर्वप्रथम एकांत स्थान का चयन किया और शत्रिकालीन समय एकमात्र साधना के लिए ही समर्पित करने का निश्चय कर लिया। उसने गुरु मंत्र का एक पुरश्वरण सम्पन्न कर अपने अन्तर बाह्य को पवित्र व दिव्य बनाने का प्रयास किया। इसके उपरान्त अन्य कई लघु साधनाएं भी सम्पन्न कीं और उनमें सफलीभूत भी हुआ, पर मन में नरा भी तृप्ति न थी।

‘इन छोटी-छोटी अप्सराओं, वक्षिणियों या भैरव की साधनाओं में जीवन खपाने की अपेक्षा एक निष्ठ भाव से किसी महाविद्या को सिद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिए। तभी मैं प्रकृति के उन सूक्ष्म गोपनीय रहस्यों को खेद पाऊंगा,

तभी मेरा इस क्षेत्र में आना सार्थक हो सकेगा।’

अशारीरी देवदूत का आवागमन

इसी मन, सकल्प को लिये एक दिन एकांत साधना कक्ष में प्रातः कालीन गुरु बंदना, स्तुति सम्पन्न कर रहा था, एकाएक पूजा कक्ष की खिड़की से एक छायाकृति को प्रविष्ट होते देखा। वह छायामूर्ति उससे लगभग छ. फीट की दूरी पर आ कर उसके समक्ष खड़ी मानव-मूर्ति के स्थूल देहधारी होने की सम्भावना रुमास हो गई। मन में आया- ‘अवश्य ही ये कोई दिव्य देहधारी महापुरुष हैं और किसी विशिष्ट प्रयोजन से ही यहां उपस्थित हुए हैं।’

मन में यह विचार उठते ही उस छायामूर्ति ने स्निग्ध

मुस्कुराहट बिखेर दी, स्वीकृति में सिर छिलाया और कहा-  
 “तुम्हारी उपासना और अकुलाहट साधना जगत के लिए  
 अत्यन्त श्रेष्ठ है। मेरा परिचय मात्र इतना ही समझ लो, कि मैं  
 एक सूखम देहधारी तुम्हारा ही वरिष्ठ सन्यस्त गुरुभाता हूँ और  
 परम पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से तुम्हारे समक्ष उपस्थित हुआ  
 हूँ। गुरुदेव ने तुम्हें काशीधाम जा कर भगवती निषुर सुन्दरी  
 की आराधना करने की अनुमति दे दी है, इसी संदेश का प्रेषण  
 मेरे द्वारा होना था”-इतना कह कर वह छायामृति अन्तर्धान  
 हो गई।

दिव्य अशरीरी सूक्ष्म सत्ता से युवा साधक का वह प्रथम संस्पर्श सम्भाषण था, प्रसन्नता के आवेद से उसके पांव धरा पर पड़ ही नहीं रहे थे। स्वयं आध्यात्मिक प्रकृति का होने के कारण उन्होंने अपने अनुज को सहर्ष ही अपने पास रख लिया और उसकी एकांत साधना की व्यवस्था भी कर थी।

नित्य प्रति ब्रह्म मुहूर्त में गुरु उपासना कर गंगा सेवन करने जाना और महानिशा काल में अत्यन्त गुप्त भाव से भगवती की साधना में तल्लीम हो जाना-यही उसकी नियमित दिनचर्या थी। अनेक स्थानों में सूक्ष्म शरीर से अद्भुत घटनाएं भी उसने देखीं, जाना प्रकार के देव गण, सिद्ध पुरुष, विद्य वन-उपवन, ज्योतिर्मय धाम, बहुत कुछ उसके दृश्य पटल के सामने गुजरता। यदि साधारण व्यक्ति इनमें से किसी एक स्थान को भी देखता, तो मुग्ध हो उठता, भगव युवा साधक जिस वस्तु को व्याकुल भाव से खोज रहा था, उसको समर्पण विश्व में कोने-कोने में खोजने पर भी कहीं भी न पाने से वह जरा भी तृप्त नहीं हो पा रहा था।

साधना का पुरश्चरण छः माह की अवधि का था । प्रथम पुरश्चरण यों ही थिना किसी अनुभूति के व्याप्तीत हो गया । साधक पुनः अपनी साधना में वत्तित हो गया । उसका लक्ष्य उसकी आंखों के सामने स्पष्ट था और मन में दृढ़ निश्चय था, कि मुझे इसी जीवन में भगवती को साक्षात् दर्शन कर उन्हें सम्पूर्ण करुणा व सोलह पूंगर के माथ अपने भीतर समाधित कर लेना है । इसी प्रकार क्रमशः दूसरा, तीसरा व चौथा पुरश्चरण भी समाप्त हो गया, परंतु इन्हीं कठिन तपस्या के बाद भी साधक के चेहरे पर न तो कोई सुश्लाघ्ट थी, न बेहिनी, न पीड़ा, बस एक ही भाव, कि मुझे भगवती के प्रत्यक्ष दर्शन कर उनको अपने जीवन में उतार दी लेना है ।

और कल रात्रि को उसका पांचवां पुरुषचरण भी बिना इष्ट प्रत्यक्षीकरण के समाप्त हो गया। इसी से मन बार-बार उद्देलित हो रहा था। जो हठ, आग्रह, तेजस्विता और धैर्य उसका

अविलम्बन थे, वे समाप्त हो चुके थे। बुद्धि बार-बार उसे साधना पद्य से विमुख करने की चेष्टा बत रही थी— “कथा मिला यौवन के कीमती चार वर्ष गंदा कर? कथा मैं इतना अधम हूं, कि पूर्ण निष्ठा व विश्व-विधान के साथ मंत्र जप करने के बाद भी सफलता का कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता? आखिर मुझ से कहां त्रुटि रह गई?”

“पर अब तो पीछे लौटा भी सम्भव नहीं। इस प्रकार असफल हो कर तो मैं सप्तर के समक्ष नहीं जा पाऊँगा। घर के द्वार मैंने स्वर्य बंद किये थे और प्रारब्ध ने सिद्धि के द्वार बन्द कर रखे हैं। अब अब ही विधाता प्रतिकूल है। कुछ भी हो, अमूल्य जीवन को इस प्रकार वर्षा में नष्ट करने का कोई प्रयोजन नहीं।”

## सिवात जीवन का इयावलोकन

जशात मन से बुद्धिवादे हुए, कलान्त अवस्था में युवा तपस्यी बापस पूजा कक्ष में प्रविष्ट हो गया और उसने छार बंद कर लिया। मन में सौचने-विचारने की शक्ति समाप्त हो चुकी थी। पधराई आँखों से सामने ख्यापित गुरु चित्र को देखा और अन्नर में धनीभूत सारी वेदना अशुद्धों के रूप में बाहर निकल पड़ी। अत्यन्त शीन भाव से वह अपना सिर गुरु चरणों में टिकाये फूट-फूट कर रोने लगा। आँखों में अबोध शिशु के समान आग्रह और कानरता उत्तर आयी, जो बार बार मानों पूछ रही थी— “क्या जीवन पर्यन्त इसी प्रकार इष्ट दर्शन को तरसता ही रहेंगा? क्या मेरे भाग्य में चित्रि का वरदान नहीं। इस दारुण वेदना की अवस्था में एक मात्र आप ही तो मेरा सम्बल है, मेरे गुरु, मेरे पथ प्रदर्शक हैं, किर आपकी कृपा दृष्टि आखिर कब मझ पर पड़ेगी।”

एकात्मकता में सर्वत्र पद्धतिगति की विव्यता आप्तावित हो चुकी थी। साधक का अस्तित्व उस विशद् सूक्ष्म सत्ता से जुड़ा



कर एक के बाद एक दूसरों का अवलोकन कर उठा। अतीत की रहस्यमय परतें उखड़ती जा रही थीं। कब, कैसे, कहां उसने जन्म लिये, किन दुष्कर्मों के फलस्वरूप ब्रह्मबार जन्म-मृत्यु के चक्रों से गुजरता रहा और अनन्त: इस बार सद्गुरु चरणों का आश्रम मिल सका। पिछले पांच जीवन के प्रत्येक दृश्य वह चलवित्र की भाँति स्पष्ट देख रहा था हर जीवन में पाप कृद्यों का समावेश था। निष्कपटना के मीठे, गुवगुवे छब्ब आवरण को अपने ऊपर ओढ़े वह भूल गया था, कि पिछले जन्मों में वह इतना परित रहा होगा। आत्मज्ञान से भरा साधक का अन्तर्मन रो पड़ा, उसकी आत्मा स्वयं को धिक्कारने लगी, अपराध बोध से भरा वह स्वयं तो क्षमा करने के बोझ भी नहीं पा रहा था, देव दर्शन तो कल्पना से भी परे था।

पुनः उसी दिव्य देहधारी महापुरुष की मूर्ति सामने प्रत्यक्ष हुई, बाणी में वही निश्चल प्रेम, वही स्मिथता- 'तपस्वी। उठो, तुमने स्वयं देख लिया। तुम्हारे एक-एक पुरश्चरण से पिछले पांच जन्मों के पाप कर्मों का परिशोधन हुआ है। पांच जन्मों के संभित पाप प्रारब्धों के दुष्परिणाम पिछले तीन वर्षों की साधना से नष्ट हुए हैं, तुम्हारा एक भी मंत्र जप व्यर्थ कभी नहीं गया, अपितु तुम्हारे डी परिष्कार में व्यय होता रहा है।'

'इसीलिए विवेकशील साधक किसी भी साधना में प्रवृत्त होने से पूर्व गुरुदेव को प्रसन्न कर उनसे आश्रह पूर्वक 'पापमोचनी दीक्षा' प्राप्त कर लेते हैं, इसके अनन्तर 'साधना सिद्धि दीक्षा' रूपी वरदान ले कर ही मंत्र जप कर प्रारंभ करते हैं, ताकि

सिद्धि फलीभूत होने में तनिक भी संदेह या विलम्ब न हो। तुम अपने आत्माभिमान व वर्ष के कारण ही इस तथ्य को समझ नहीं सके और बार-बार असफलता का सामना करना पड़ा...'

"...पर अब नैराश्य को स्थान मत दो, गुरुदेव निरन्तर तुम्हें अपनी कृपा वृष्टि से सिंचित कर रहे हैं, तुम्हारे एक-एक पल का हिसाब उनके पास है, नये सिरे से पुनः साधना प्रारंभ करो, सिंचित प्रारंभ की निवृत्ति हो चुकने के कारण इस बार तुम्हें वेदी का साक्षात्कार होना ही है।"

"महाविद्या साधना इतनी हल्की नहीं, कि उसे जब चाहें, तब सिद्ध कर लें, शोदशी साधना के लिए स्वयं देवतामय बनना पड़ता है, साधक को प्रारंभ में ही काम, बोध, ईर्ष्या, अडंकार इत्यादि पाश्चों से स्वयं को सर्वथा मुक्त कर लेना पड़ता है, तभी साधना की प्रारंभिक भाव-भूमि स्पष्ट होती है। आज गुरु चरणों में अश्रुपात के रूप में तुम्हारा अडंकार ही विगतित हुआ है, इसी ओष्ठ स्तर तक लाने के लिए तुमसे इतनी तपस्या करवानी पड़ी। अब पूर्ण मनोयोग पूर्वक भगवती के ही चिन्नन, उन्हीं के स्तवन, मंत्र जप में लीन ढो जाओ, सिद्धि जयमाला लिये सम्पूर्ण खड़ी मिलेंगी। गुरुदेव का यही आशीर्वाद मैं तुम्हारे लिये ले कर आया हूँ।"

युवा तपस्वी के मन का मालिन्य दूर हो चुका था, साईंग गुरु चरणों में प्रणिपात करते हुए वह पुनः अश्रु प्रवाह में डूब गया..., पर वे अश्रु अब विषाद के नहीं, अनन्त प्रसन्नता व उल्लास के परिचायक थे।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का जन्मित्त अंग है। इसके साथनाट्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

सभी प्रकार की कियाएं मानव सिर्फ सफलता प्राप्त करने के लिए ही करता है। इस कार्य में सभी साधना सहायक हों और उन सबका उसे मनचाहा लाभ हो वही प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। परंतु जब स्वयं अपना मन ही उदास, हताश या निराश हो, स्वयं हम यदि उत्साहित हों, हमारे ही अन्दर यदि हीनभावना भर गई हो, तो ऐसे में एकाग्रता हो ही नहीं सकती। उत्साह और एकाग्रता के अभाव में व्यक्ति के मन में उदासी या हीनभावना इतने प्रबल स्तर से अधिकार जमा तेती है, कि व्यक्ति किसी भी कार्य में सफल नहीं हो पाता है। तब वह बात-बात में दृढ़ासाने लगता है, उसका प्रत्येक निर्णय गलत बैठता है और ऐसे में भीषण विपर्तियां उसे बेर लेती हैं। मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका ने इन परेशानियों का सटीक उपाय योजकर विशिष्ट यदि-पृष्ठ एवं अद्वितीय विद्वान् योज में तीव्र प्रभाव युक्त अल्प यंत्र तेवार कराए हैं। उग्र स्वयं इस देवी शक्ति युक्त यंत्र की विलक्षणता अनुभव करेंगे तथा मन में उमंग, उत्साह, पूर्ण योवज्ञ, रस, आनन्द, प्रसङ्गता एवं सफलता का वातावरण बनेगा।

इस यंत्र को प्राप्त कर पूजा की जगह स्थापित कर ले, किसी भी दिन नित्य प्रातः काल मात्र ५ बार ३००० ब्रह्माण्ड तिजसे नमः मंत्र का नप कर ३० दिन बाद उसी पवित्र जलधारा में विसर्जित कर देया मार्दिन में चढ़ाव।

सह दुर्लभ उपहार ही आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने केली मित्र, रिश्तेदार या उपजन को छलाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, तो आप सद्य भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित योगदानार्ड नं ४ को उपर अक्षरों में भरकर हमारे पास मैं दें, एष कार्य हम सतरं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त 40/-



मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राज.)

फोन: ०२९१-४२२२०१, फैक्टरी - ०२९१-४२२२०१०

ज्ञ वर्ष 2001 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '42'

# शिष्य धर्म

■ तुम्हें अपने जीवन में रुकना ही नहीं है, तुम्हें अपने जीवन में एक क्षण भी विचार नहीं करना है, क्योंकि तुम्हारा जीवन बहुत थोड़ा सा बच गया है और पण्डिती बहुत लम्बी है, हिमालय से पूरी समुद्र तक की यात्रा, जीवन में धीरे-धीरे चलने से समुद्र नहीं मिल सकेगा, क्योंकि नदी धीरे-धीरे चलेगी तो बीच में ही सूख जाएगी।

■ यह रास्ता तुम्हारा नहीं है, तुम मेरी तरफ आओ।

■ बाधाएं आज भी तुम्हारे सामने हैं, मगर इन बाधाओं को पार करते हुए तुम्हें बढ़ना है.... और जिस समय तुम मुझमें... अपने-आप में विसर्जित हो जाओगे, लीन हो जाओगे। वही जीवन का लक्ष्य, जीवन का आनन्द और जीवन की चेतना है।

■ इस बार तुम्हें जीवन में अपने-आप को पहिचानना है, इस बार तुम्हें रेगिस्ट्रेशन की ओर अटकना नहीं है, इस बार पहाड़ से टकराना है, पहाड़ से भी नहीं, हिमालय से टकराना है।

■ ये चारों तरफ की बाधाएं, चारों तरफ की अड़चनें, चारों तरफ की कठिनाइयां तुम्हें जीवन में आनन्द प्रदान करने की ओर अग्रसर नहीं कर रही हैं, क्योंकि तुम्हारा मूलभूत चिन्तन, तुम्हारा मूलभूत विचार, तुम्हारी मूलभूत धारणा वासनामय है.... यह अपने-आप को सौत की ओर अग्रसर करने की क्रिया है। तुम्हें यह क्रिया नहीं करनी है।

■ दीन-हीन बनना शिष्य बनने की क्रिया नहीं है, दीन-हीन बनकर पिता और पुत्र बनने की क्रिया भी नहीं है, दीन-हीन बनकर जीवनयापन और जीवन में चिन्तन करने की जरूरत भी नहीं है, दीन-हीन बनकर जीवनयापन और जीवन में चिन्तन करने की जरूरत भी नहीं है, इस समय तुम्हें अपने पूरे प्राणों का विस्फोट करना है, और ऐसा विस्फोट करना है जो कि जीवन का एक अद्वितीय क्षण बन सकें।

■ जब उछल जाने की क्रिया तुम्हारे जीवन में बनेगी, जब तुम्हारे प्राणों में विस्फोट होगा, जब तुम्हारे प्राणों में चेतना बनेगी, जब तुम्हारे प्राणों में ऊर्ध्वमुखी बनने की क्रिया बनेगी, तब तुम रही अर्थों में शिष्य बन सकोगे।

■ इस बार वापस तुम जन्म लेने की क्रिया नहीं करो, इस बार तुम वापस मल-मूत्र में विसर्जित नहीं होओ, इस बार तुम वापस क्षुद्रता नहीं प्राप्त करो, इस बार तुम्हें एक ब्रति प्राप्त करनी है... और यह जीवन तुम्हारा एक अनित्म जीवन बने, अपने-आप में विमुक्त जीवन बने।

# शृङ्खलावाणी

\* मैं जगाकर तुम्हें उस आनन्द को दिखाना भी चाहूं तो तुम कहाँ  
ले देखोगे, वन्दींकि देखने का भाव तुम्हारे पास नहीं है और उस देखने  
के भाव ले लिए तुम्हें युक्त जगत में जाना पड़ेगा।

\* अन्दर जो कुछ तुमावस्था में है उसको जगाने की क्रिया को 'कुण्डलिनी जागरण' कहते हैं। सूक्ष्म  
जगत में व्यक्ति कुण्डलिनी के माध्यम से जाता है, उस गुरु की कृपा से, गोकर से, चेतना से, उसके विचार से,  
उसके व्यवहार से, उसके कहने के अनुभार।

\* जब तुम सूक्ष्म में जाओगे तब तुम्हारे देखने का भाव कुछ और होजा, तब तुम्हें  
देखने का आनन्द अर्थेगा। जिस दिन तुम्हारे अनन्द ऐसा भाव अर्थेगा तुम अपने-  
आप सूक्ष्म जगत में बते जाओगे।

\* मनुष्य सूख और आनन्द तभी अनुभव कर सकता है जब वह आन्तरिक  
रूप से भी सुखी व सफल हो, और आन्तरिक रूप से सुखी होने के लिए यह आवश्यक  
है कि वह धर्म का आसरा ले, शास्त्र का आसरा ले।

अनुभूत  
लोक हो  
चाहे सत्त  
हैं। और  
हैं।

चिन्तन को  
नहीं कर स  
क्रिया को ह  
इस व्यापक  
तत्त्व माना

कह दड़ा है  
हो सकता  
से प्राप्त हो  
द्वाढ तक

\* सातों शरीरों को भेदन करने की क्रिया जीवन की उन्मूलन क्रिया है। वह चाहे शूः लोक हो, भुवः लोक हो, स्वः लोक हो, महः लोक हो, जनः लोक हो, तपः लोक हो और चाहे सत्यं लोक हो, ये समस्त लोक शरीर के अन्दर के लोक हैं। और सातवें द्वार पर पहुंचने की क्रिया को अध्यात्म कहते हैं।

\* विज्ञान की एक लिमिट है, एक सीमा है, वह बाहरी जीवन के चिन्नन को तो दे सकता है, पर आनन्दिक जीवन के आनन्द को वह प्रदान नहीं कर सकता... और आनन्दिक जीवन के आनन्द को प्रदान करने की क्रिया को ही “ध्यान” कहते हैं, “साधना” कहते हैं, “समाधि” कहते हैं। इसध्यान, समाधि और साधना को जीवन का आवश्यक तत्व और अनिवार्य तत्व माना गया है।

\* अनुष्य पूर्ण आनन्द है... मैं ‘आनन्द’ सब का प्रदीप कह रहा हूँ, ‘सुख’ सब का बहीं। सुख तो बाहरी उन्नाओं से प्राप्त हो सकता है, आनन्द नहीं। आनन्द तो आनन्दिक अनुभूतियों से प्राप्त हो सकता है, और आनन्दिक अनुभूतियां अब हम सातवें द्वार तक पहुंचती हैं, तब प्राप्त हो सकती हैं।

# निश्चित है तन्त्र की क्रियाएं



## जीवान्तराव में प्रमुख तंत्रों का जाह्नु है

शिव ने अपने पुत्र दत्तात्रेय द्वारा की गई तपश्चय के दशदाव स्वरूप उन्हें जो तंत्र का ज्ञान दिया, वह कलान्तर में दत्तात्रेय तंत्र के नाम से विख्यात हुआ, वास्तव में यह शिव दत्तात्रेय संवाद है, गूल ब्रह्म में ६९१ श्लोक हैं और प्रत्येक श्लोक एक-एक तंत्र को व्यष्टि करता है।

डैशी कि कहावत है- प्रत्यक्ष के लिए प्रगाण क्या, हाथा कंजन को आश्शी क्या? उसी प्रकार दत्तात्रेय तंत्र को परश्चय जा सकता है, प्रत्येक प्रयोग को प्रत्यक्ष अलूभव किया जा सकता है।

आदि ग्रन्थ वेदों की रचना का उद्देश्य मनुष्य को परमात्मा परम ब्रह्म तत्त्व से साक्षात्कार कराना और मनुष्य के जीवन में हर समय साधिक तत्त्व जापन करना या जिसमें क्रियों, धनियों ने अपना ज्ञान, अपना अनुभव भी समिलित किया, ये क्रिये मूल आधर के थाम्य हैं, जो वास्तविक रूप में जीवन में उस स्थिति को प्राप्त कर चुके थे, जिसमें सांसारिक तन्त्रों से लगाव समाप्त हो जाता है, लेकिन वास्तव में जीवन तो बहुत ही उबड़-खाबड़ एवं कठप्रद मार्ग ही भरति है, उसे तो भली भांति पार करना ही है, अन्यथा जीवन की क्या सार्थकता है? इसी कारण तन्त्रविद्यान की रचना त्रुटि कर्योंकी तंत्र में जीवन की समस्याओं, बाधाओं से मुक्ति पाने का विद्यान था, मूल ग्रन्थों में जिस रूप में प्रयोग दिये गये हैं, उसी रूप में सम्पन्न करने से ही अनुकूलता प्राप्त होती है, मूल ग्रन्थ बहुत कम व्यानियों के पास है और

उनमें से अधिकतर तंत्र विद्या के बुझायें के डर से इन ग्रन्थों को समाज के सामने प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं।

बंगल के महान तांत्रिक नीलमणि मुख्यनी बाबू से हमें दत्तात्रेय तंत्र का एक ग्रन्थ प्राप्त हुआ है और यह ग्रन्थ कम से कम ६०० से ८०० वर्षों पुराना प्रतीत होता है, यह ग्रन्थ उन्हें अपने गुरु शिष्य परंपरा के अन्तर्गत प्राप्त हुआ तथा संस्कृत और बंगला भाषा में दस्तालिखित है इसमें तंत्र के सभी प्रकार के प्रयोगों जिसमें भूत-प्रेत सिद्धि आकर्षण, रसायन विद्या, बुद्धि-वृद्धि, आदि वृद्धि, निधि वर्णन, संतान उत्पत्ति, यशोणी साधना, बाधा हरण प्रयोग, कामना पूर्ति प्रयोग, स्तंभन, मीहन, वशीकरण, विष बाधा-निवारण, गर्भ स्तन्पन, भारण प्रयोग के अतिरिक्त रूप कियाओं से सम्बद्धित प्रयोग भी समिलित हैं, वास्तव में यह तंत्र का सम्पूर्ण ग्रन्थ कहा जा

सकता है  
उन स  
वनस्पतिय  
सिद्धि वर  
विधि से  
सावधानी  
तभी सम्प  
आ जाए,  
सिद्धि हेतु  
चाहिए ति  
गृह और  
इस साथ  
बुरे काये  
करने से  
तंत्र स  
को भी न  
कर रहे हैं  
से निकट  
से जुम र  
इस विद्या  
साधना

दत्तात्रेय  
कितना है  
उसे प्रयोग  
साधना  
को सर्व  
आवश्यक  
सिद्धि व  
तांत्रालं  
है, इस व  
प्रयोग न  
संबन्ध  
लगाए र  
दत्तात्रेय  
दुर्जन स  
पीछे का  
बिल्ल्य प  
जल ले

卷之三

इन सभी प्रयोगों में विषिन्न प्रकार की वस्तुओं का, जनसंपत्तियों का, यंत्रों का प्रयोग किया जाया है, साथ ही मंत्र चिन्ह पर भी विशेष जोर दिया जाया है, अतः साधक को पूर्ण चिन्ह से ही प्रयोग करना चाहिए, कुछ प्रयोगों में विशेष साधनी रखनी आवश्यक है, जैसे मारण प्रयोग, व्यक्ति को नहीं सम्पन्न करना चाहिए जब उसके नवयन के प्राणों पर संकट आ जाए, साथ ही वशीकरण प्रयोग भी अपने श्रेष्ठ कार्य की सिद्धि हेतु करना चाहिए, तथा उच्चाटन प्रयोग उस पर करना चाहिए जिस शत्रु ने पुत्र हानि, भन हानि, पहुंचाई हो अथवा नह और भूमि छीन ली हो, यक्षिणी साधना में लिखा है कि इस साधना से प्राप्त धन को श्रेष्ठ कार्यों में ही लगाना चाहिए, वे कार्यों में साधना एवं सिद्धि से प्राप्त धन का दुरुपयोग करने से स्थिर और बढ़ि दोनों नष्ट हो जाती है।

तंत्र साधना के सम्बंध में अपने प्रयोगों को जानकारी किसी को भी नहीं देनी चाहिए, कब प्रयोग कर रहे हैं, क्या प्रयोग कर रहे हैं तथा क्यों कर रहे हैं, इसकी जानकारी अपने निकटस्थ से निकटस्थ को भी नहीं देनी चाहिए अर्थात्, प्रयोगों को गुप्त से गुप्त रखना चाहिए और भक्तिहीन, आस्थाहीन व्यक्ति को इस विद्या का ज्ञान दान नहीं करना चाहिए।

साधजा विधान

दत्तात्रेय तंत्र साधना भूल रूप से शिव साधना है और साधक कितना ही प्रयोग करे, जब तक शिव कृपा नहीं होगी तब तक उसे प्रयोगों में सफलता नहीं मिल सकती, अतः दत्तात्रेय तंत्र साधना के अन्तर्गत किये जाने वाले सभी प्रयोगों में साधक को सर्वप्रथम शशि शंखर शिव पूजा आवश्य सम्पन्न करनी आवश्यक है, सभी प्रयोगों में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त शिव सिद्धि दत्तात्रेय महायंत्र स्थापित करना आवश्यक है, यह यत्र तांत्रोक्त विधि से अभिमान्त्रित तथा उन्कीलित किया हुआ होता है, इस कारण साधक को अपने प्रयोगों में न्याय तथा उन्कीलन प्रयोग नहीं सम्पन्न करना पड़ता।

सबसे पहले शुद्ध वस्त्र धारण कर पूना स्थान में शिव चिन्ह लगाएं तत्पश्चात अपने सामने एक पात्र में इस शिव सिद्धि वत्तीर्ण बहायत्र को स्थापित कर दें, इस भहायत्र को जल स्नान, दुष्प स्नान तथा पंचमृत स्नान सम्पन्न कराकर साफ कपड़े से पीछ कर दूसरे पात्र में स्थापित कर इस पर चन्दन, केसर, बिल्व पत्र, गंग, धनूरा इत्यादि अर्पित करें, फिर उपने हाथ में जल ले कर निम्न संकलन पढ़ें-

तंत्र में जीवन की समस्याओं, बाधाओं से मुक्ति पाने का विधान था, गूल अथवा गेंजियरूप में प्रयोग हिये जाये हैं, उसी रूप में सम्पूर्ण करने से ही आनुसूलता घास होती है, दत्तात्रेय तंत्र साधना गूल रूप से शिव साधना है और साधक कितना ही प्रयोग करे, जब तक शिव कृपा नहीं होती तब तक उसे प्रयोगों में सफलता नहीं जित सकती ।

संक्षिप्त

ॐ अस्य श्री वत्तावत्य तत्र मंत्रस्य मम (अपना नाम, जोड़) अभीष्ट कार्य सिद्धायर्थं शशिशेखर देवः अनुष्टुप् छन्दः ही वीज स्वाद शक्ति प्राप्ति मंत्र विद्धि अहं कृत्ये ॥

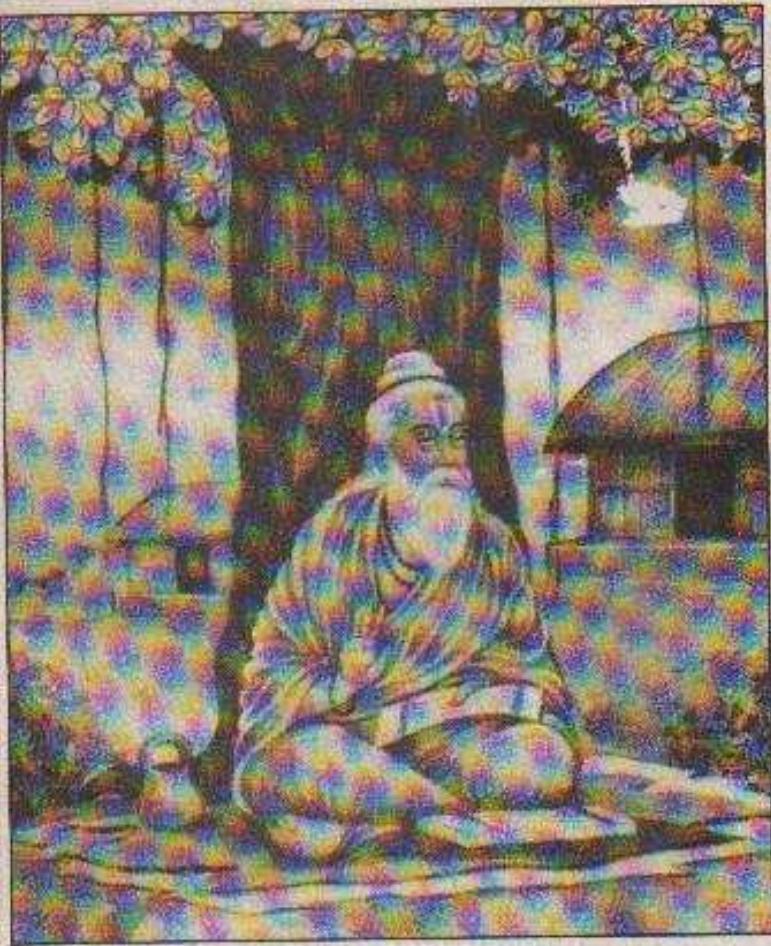
अब एक माना शिव मेव 'ही उनमः शिवाय हीः' का जप कर मल साधना प्राप्त करें।

दत्तात्रेय तंत्र के अन्तर्गत आने वाली सभी साधनाओं में अपर लिखा पूर्ण तो सम्पूर्ण करना ही है, किन्तु प्रत्येक साधना के लिए अलग अलग शिव पितृ दत्तात्रेय महायंत्र स्थापित करना आवश्यक नहीं है।

दत्तात्रेय त्रिलोह पवित्री

दसवें तंत्र विधान के अन्तर्गत साधक को अलग-अलग कार्यों द्वारा अलग-अलग विलोह पवित्री धारण करना आवश्य है, विलोह पवित्री का निर्माण एक विशेष प्रक्रिया द्वारा विशेष मुहूर्त में ही किया जाता है, यह अष्टधातु का बना एक छल्ला होता है, जिसमें प्रत्येक धातु का अंश निश्चित रूप में होना आवश्यक है, इसका निर्माण केवल शुक्रल पक्ष में पड़ने वाले रविवार युक्त पृथ्ये नक्षत्र वशवा गूरुवार युक्त पृथ्ये नक्षत्र को ही किया जाता है, और उस विशेष मुहूर्त में इसको दसवें तंत्र में जिता है-

त्रिलोहस्थ पवित्री जानव्या च धारितं सर्वकर्मणि ।  
सर्वस्येतिप्रदा महाबलो महातेजो जायते न संशयम् ॥



वर्णन, विवाद-विजय, भूतादि बाधा निवारण, हेतु अलग-अलग त्रिलोह पवित्री है, एक कार्य के लिए प्रयुक्त त्रिलोह पवित्री का प्रयोग दूसरे कार्य हेतु नहीं करना चाहिए।

पूजा विधान के अन्तर्गत जो पूजा लिखी है, वह पूजन पूर्ण कर साधक अपने ज्ञात में विशेष त्रिलोह पवित्री धारण कर मंत्र जप, कार्य सम्पन्न करें, प्रत्येक कार्य के लिए अलग-अलग मंत्र, मंत्र संस्कृता निश्चित है, नीचे इसका विवरण स्पष्ट किया जा रहा है। इन सभी प्रयोगों को शुद्धचित्त से करना चाहिए। साधक का उद्देश्य किसी को हानि पहुंचाना नहीं हो अन्यथा इन मंत्रों का कोई प्रभाव नहीं होगा। उदाहरण के लिए उच्चाटन प्रयोग का अर्थ है किसी व्यक्ति का किसी वस्तु या अन्य व्यक्ति के प्रति उच्चाटन करना। इसका प्रयोग तभी करना चाहिए जब कोई व्यक्ति किसी गलत रास्ते पर चल पड़ा हो। मान लें कोई व्यक्ति किसी अन्य गलत व्यक्ति के चक्कर में फँस गया हो तो उसके लाप्त के लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जा

सकता है।

शिव सिद्धि दत्तात्रेय महावंश- ३००/-

### १. आकर्षण प्रयोग

यह प्रयोग किसी विशेष व्यक्ति की अपनी ओर आकर्षित करने के लिए किया जाता है। आप का उद्देश्य सामाजिक एवं नेतृत्व दृष्टि से अनुकूल हो। अन्यथा कोई प्रभाव नहीं होगा। इस प्रयोग द्वारा अधिकारियों को एवं अन्य व्यक्तियों को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। इस मंत्र में अमुक के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लें।

दिन : सोमवार

साप्तरी : आकर्षण त्रिलोह पवित्री

मंत्र : ॥ ऊनमो आविषुकवाय अमुकस्याकर्षणं

कुरु-कुरु स्वाहा ॥

जप संस्कृता : सात माला

साधना साप्तरी १५०/-

अर्थात् जो साधक दत्तात्रेय तंत्र सिद्धि त्रिलोह पवित्री अपने हाथ में धारण कर लेता है, वह सब प्रकार के कार्यों में सिद्धि प्राप्त कर महाबल तथा महात्मेज प्राप्त करने में समर्थ रहता है।

त्रिलोह पवित्री का निर्माण और उसे अमिसाधित करना एक जटिल प्रक्रिया है, सर्वप्रथम इसे रुद्र-तंत्र प्रयोग से, फिर मंगलवार को दत्तात्रेय तंत्र अल्प मंत्रों से, शुक्रवार को राधा तंत्र प्रयोग से, गुरुवार को धारा तंत्र प्रयोग में, शुक्रवार को सुर सुन्दरी तंत्र से नद्या शनिवार को काली चण्डीश्वरी तंत्र प्रयोग से सिद्ध किया जाता है, प्रत्येक कार्य पूर्ण विधि-विधान सहित होना आवश्यक है तभी वह त्रिलोह पवित्री पूर्ण फलदायक रहती है।

पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में तंत्र विशेषज्ञों द्वारा कुछ विशेष त्रिलोह पवित्री मुद्रिकाएं तैयार की गई हैं, इसमें प्रत्येक प्रयोग अर्थात् आकर्षण, उच्चाटन, वर्णकरण, स्तम्भन, मोहन, निधि-

२. गो  
इस प्र  
करने  
ठीक  
है।  
दिन  
सामग  
मंत्र

३. रुह  
इस प्र  
अपने  
दिन  
सामग्र  
मंत्र

४. स्तम्भ  
शमुआं  
साधक  
षड्यन्त्र  
दिन  
सामग्र  
मंत्र

५. उच्चाट  
अग्र द  
मै फँस  
आता  
किया  
दिन  
सामग्री

## २. माहिनी प्रयोग

इस प्रयोग को किसी अविवाहित स्त्री या पुरुष को सम्मोहित करने के लिए किया जा सकता है। परंतु साधक का उद्देश्य ठीक हो अर्थात् विवाह के लिए यह प्रयोग किया जा सकता है।

दिन : शुक्रवार

सामग्री : माहिनी त्रिलोह पवित्री

मंत्र : ॥ ऊनमो यहात्यक्षिण्ये मम अमुक मे वश्ये  
कुरु-कुरु स्वाहा ॥

जप संख्या : न्यारह माला

साधना सामग्री ₹५०/-

## ३. राह पीड़ा नाश प्रयोग

इस प्रयोग द्वारा किसी अथवा सभी अनिष्ट कारी गहों को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है।

दिन : रविवार

सामग्री : अमुक ग्रह त्रिलोह पवित्री

मंत्र : ॥ ऊनमो भास्कराय अमुकस्य सर्वशहाणां  
पीडानाशनं कुरु-कुरु स्वाहा ॥

साधना सामग्री ₹५०/-

## ४. स्तम्भन प्रयोग

शत्रुओं को बलहीन करने के लिए यह प्रयोग चमत्कारी है। साधक का उद्देश्य किसी को हानि पहुंचाना नहीं होता अपितु शत्रुओं से स्वयं की रक्षा करना होता है।

दिन : मंगलवार

सामग्री : स्तम्भन त्रिलोह पवित्री

मंत्र : ॥ ऊनमो भ्रमक्षते महाबल पराक्रमाये मम  
शत्रुणां शुचि बलं बन्धय बन्धय दृष्टि स्तम्भय स्तम्भय पातय  
पातय महीनले हु फट् स्वाहा ॥

साधना सामग्री ₹५०/-

## ५. उच्चाटन प्रयोग

अगर घर का कोई व्याकुल किसी अन्य गलत व्यक्ति के चंगुल में फंस गया है। और समझाने पर भी सही रास्ते पर नहीं आता तो उसका उस ओर से मन हटाने के लिए यह प्रयोग किया जा सकता है।

दिन : मंगलवार

सामग्री : उच्चाटन त्रिलोह पवित्री

मंत्र :

॥ ऊनमो भ्रगवते रुद्राय कशालाय अमुकं  
पुत्र बान्धवैस्सह शीघ्रमुच्चाटय उच्चाटय  
स्वाहा ठःठःठः ॥

जप संख्या

न्यारह माला

साधना सामग्री ₹५०/-

## ६. विवाद विजय प्रयोग

कोर्ट केस में या किसी विवाद में विजय के लिए यह प्रयोग उत्तम है। इस प्रयोग में अमुक के स्थान पर अपने विरोधी का नाम लै।

दिन : शनिवार

सामग्री : जया त्रिलोह पवित्री

मंत्र : ॥ ऊनमो विज्व रूपाय अमुकस्य अमुकेन  
सह विजयं कुरु-कुरु स्वाहा ॥

जप संख्या : एक माला

साधना सामग्री ₹५०/-

## ७. भूत-प्रेत बाधा निवारण प्रयोग

भूत-प्रेत बाधा निवारण के लिए यह प्रयोग अचूक है।

दिन : रविवार

सामग्री : नृसिंह त्रिलोह पवित्री

मंत्र : ॐ नमो नृसिंहाय छिरण्ये कश्यप-वक्ष-  
स्थल-विदारणाय विभूवनव्यापकाय भूत, प्रेत, पिशाच,  
दाकिनी कुलोन्मूल नाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदेशान छर-  
हर विसर-विसर पच-पच हन-हन कम्पय-कम्पय भय-भय  
ही ही फट फट ठःठः एषोऽहि रुद्र आजापयति स्वाहा ।

जप संख्या : १ माला

साधना सामग्री ₹५०/-

अग्र लिखे प्रयोगों के अतिरिक्त भी अन्य प्रयोग सम्पन्न किये जा सकते हैं, प्रत्येक प्रयोग के लिए मंत्र तथा जप संख्या अलग-अलग हैं और अलग-अलग दत्तात्रेय त्रिलोह पवित्री धारण करना आवश्यक है।

इस वर्ष ३० दिसम्बर रविवार को दत्तात्रेय जयती है और इस दिन से दत्तात्रेय कल्प प्रारंभ होता है। इसकी पूर्णता मात्र पूर्णिमा २९ फरवरी को पूर्ण होती है। साधक इस कल्प में दत्तात्रेय साधनाएँ संयज्ञ कर सकता है।

दत्तात्रेय तंत्र तो एक प्रवार से सभी तंत्रों का सार स्वरूप ही है, इसका प्रत्येक अनुभव तो साधक इन तंत्र साधनाओं को सम्पन्न कर सकते हैं।

युनिवरि  
में लगा  
हुआ।

जिस  
करता

गुरुकृ  
गुरु  
लड़की  
दिनों के  
लड़की  
मवासे  
मार्ग दश  
गुरु को  
आंपरेश  
के शिवि  
उन्होंने  
बाबू गुर  
विन कृ  
लड़का  
गुरुदेव

गुरु द  
हैं।  
मेरे निर  
महिना  
११ दि  
की।

नित  
रहा था  
रहा था  
बहुत स  
की आ  
पूर्ण की  
मांगने

# गुरु गुरु गुरु

श्रीकृष्ण चैतन्य पुत्र प्राप्ति धीक्षा से पुत्र प्राप्ति

१९२३ ई. मेरे विवाह के बाद ४ लड़कों जन्म नी थीं, सभी हेठी उड़ाते थे और ७० में पूज्यगान्धर्वगुरुसंदेव से सिद्धांश्रम में दीक्षा ली थी तो मुझे विश्वास था कि अवश्य गुरुदेव पुत्र देंगे।

२२ अक्टूबर २००० को सप्तलीक दिल्ली सिद्धांश्रम पहुंचे वहाँ गुरुदेव के चरणों में निषेदन किया तो गुरुदेव ने कहा अभी तक कोई लड़का नहीं हुआ? सद्गुरुदेव जी वी असीम अनुभव द्वारा श्रीकृष्ण चैतन्य पुत्रप्राप्ति धीक्षा प्रदान की।

पूज्यगान्धर्वगुरुसंदेव दा. श्रीमाली जी नुस्कालये उपके बाद लड़े गुरु जी एवं कैलाश जी छोटे गुरुदेव जी नवुपरल्त पूज्यनीय माता जी फिर उंत में दा. श्रीमाली जी अपने सामने मां दुग्ध जी उपके आगे भगवान् श्री कृष्ण का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। रवरूप को देखते देखते आंखों से अशुश्वत होकर भाव विहाल होकर अपने गुरुदेव जी के चरणों में नतमस्तक हो गया।

उसी रात्रि में २.५० पर एक स्वरूप प्रसन्न, तेजस्वी बालक का आसानी पूर्वक, धर में जन्म हुआ। मैं गुरु जी का बहुत आभासी दूँ। गुरुदेव का आशीर्वाद सदृश हमारि साथ है। उसी आशा के साथ आपका शिष्य।

मुरलीधर जा

बोलहा, मधुबनी, बिहार



गुरु कृपा से परीक्षा में सफलता

दूसरे आदरणी गुरुदेव तथा वेदनीय माताजी आपको कोटी-कोटी प्रणाम।

मेरी एम. कॉम (दूसरे वर्ष) की परीक्षा २९ मई से शुरू हो गई थी। परीक्षा के पहले ही मैंने श्री वांच्छाकल्पलता स्तोत्र धान भास्त्रना तीन बार संपूर्ण कर ली थी। जब पहले विषय की परीक्षा में बेटा तो मैं २ प्रश्न ५० मार्कर के भूल गया, किर मी मैंने गुरु मंत्र का जप करते हुए लिख दिया, मेरे चार विषय की परीक्षा ८ दिन के लिए चल रही थी। दूसरे दिन मैंने दिल्ली फोन कर 'पूज्य गुरुदेव' को इस स्थिति से अवगत करवाया, तो उन्होंने कहा कि बाकी तीन परीक्षाएं शांती से हो, तथा मेरा नाम जगह पूछा और आज्ञा दी कि एक पत्र परीक्षा के बाद लिख देना।

मैंने पत्र लिखा जोधपुर कुह समय पश्चात एक जबाब आया। कार्यालय के पत्र में लिखा था। चिता की कोई बात नहीं मानसिक रूप से 'गुरु मंत्र' का जप करें तथा निम्न मंत्र का भी १५ मिनट जप करें।

'ऊं ए सर्वतोन्मद्राय निखिलेश्वराय मनोवाञ्छिन देहि ऊंकद'

दुनियासिटी में मार्च २० प्रतिशत लोग पास हुए और मेरे गुप्त  
ने लगभग ४० मेरे भित्र थे जिसमें सिफेर में ही पास  
हुआ।

जिस तरह पुज्य गुरुदेव ने मुझपर कृपा दृष्टि को मैं प्रार्थना  
करता हूं, कि ऐसी ही कृपा सभी को मिलती रहे।

गिरुव गोवी  
कार्यकर्ता (गुरु)

### गुरुकृपा से स्वस्थ शिशु जन्म

गुरुदेव से जुड़ने के पहले मैं बहुत परेशान था। मुझे पहले  
लड़की हुई तो उसे संदास करने का मार्ग ही नहीं था। कुछ  
दिनों के बाद लड़की का देहांत हो गया। दुर्भाग्य से दूसरी भी  
लड़की का जन्म इसी तरह हुआ। उस दरम्यान गुरुभाई गणेश  
मवासे (परतवाडा) से चर्चा हुई, उन्होंने गुरु दीक्षा लेने का  
मार्ग दर्शन किया उस समय उनके कहने पर मैंने मन-ही-मन में  
गुरु को स्वीकारा और गुरुदेव के कृपा से मेरी दूसरी लड़की का  
अंपरेशन द्वारा संदास का मार्ग खुल गया और मैंने परतवाडा  
के गिरियां में गुरु दीक्षा लेकर कैलाश गुरु जी को बताने पर  
उन्होंने शापोदार दीक्षा लेने को कहा और मैंने दीक्षा ली उसके  
बाद गुरुदेव की कृपा से मुझे दि. १२-८-२००३ रविवार के  
दिन कृष्णजन्म अष्टमी के विन रात के ९, बजे लड़का हुआ और  
लड़का पुर्णरूप से शरीर का सब अवयव ठीक है। इस तरह  
गुरुदेव की कृपा मुझ पर हुई ये सा ही आशिवादि मुझे देते रहे।

गाय का शिष्य  
प्रेमचंद्र मीनीलाल राठोर  
(महालक्ष्मी राज्य)

### गुरु कृपा से साधान दर्शन

हे गुरुदेव मैं वह क्षण भूल नड़ी सकता जब आपने  
मेरे निराशा को आनन्द में बदल दिया। मैं उस रोज सितम्बर  
महीना में कृष्ण गोपीजन वल्लभ राधा कर रहा था। साधना  
११ दिन की थी। बहामुहूर्त में सुबह पांच बजे साधना प्रारंभ  
की।

नित्य ३१ माला जप करना था। साधना में विष्णु बहुत आ  
रहा था किन्तु मैं साधना में लगा रहा बैठे-बैठे पैरों में उर्द भी ही  
रहा था, कई बार तो मैंने अपने पैरों की धोड़ी हिलाया और समझो  
बहुत सी गलतीयों के कारण मैं गुरु से साधना फल  
की आशा भी कैसे करता। आशिर्वाद दिन था मैंने जब साधना  
पूर्ण की तो गुरु से निशाश मन ले कहा है गुरुदेव मैं अपने कुछ  
मांगने के योग्य तो नहीं हूं क्योंकि मैंने साधना में बहुत सी

गलतीयों की है। जिसके कारण साधना के फल कैसे प्राप्त  
होंगे। इस साधना के दौरान कुछ अनुभूति होती तो मैं भी साधना  
का आनन्द प्राप्त कर लेता और बारहवें दिन रात के समय में  
सोया था कि अचानक गुरुदेव सफेद वस्त्र पहने आये और मेरी  
बाहं पकड़कर कहा तुझे अनुभूति ही चाहिए थी ना, चल इन्हा  
कहते मुझे आखमान में ले जाने लगे और मुझे लेकर विष्णु  
लोक पहुंचे। गुरुदेव के पहुंचते ही भगवान विष्णु की नजर  
गुरुदेव पर पड़ी फिर भगवान विष्णु मेरी तरफ देखा और  
गुरुकुराकर सिर हिलाया।

भगवान विष्णु का सिर हिलने का संकेत मैं समझ गया कि  
मेरा कार्य पूर्ण हो इसलिए सिर हिलाकर संकेत दिया। और  
जब मेरी आंख खुली तो सुबह के छ, बज रहे थे मैं चुशी के मारे  
फूले ना समाया।

‘काणा सब तन खाइयो  
चूनि-चूनि खाइयो मांस  
दोऊनयना मत खाइयो  
मोहे गुरु मिलन की आस’

गुरुदेव निष्ठुलेपकर शिष्य  
बप्तरनीत गुरु

### ‘गुरु कृपा से पुनः स्थानान्तरण संभव’

सम्वत् २०५६ साल फाल्गुन २५ का पत्र एवं निर्णय  
अनुभार मेरा ट्रान्स्फर (स्थानान्तरण) राजविराज से उदयपुर  
जिला अन्तर्गत गाईधाट कर दिया गया। इसका पत्र प्राप्त होते  
थे मैं बहुत चिन्तित हो गया। क्योंकि वही जाने से गुरु भाई  
सबसे सम्बन्ध दृट जाता पहाड़ी ऐरिया होने से तराव जैसा हवा  
पानी मीसम और सुविधा नहीं है, जिससे दैनिक साधनाओं के  
कुछ समस्या हो जाती, साथ ही नया घर बना रहा हूं सब जरूर  
व्यस्त हो जाता पत्र पाने ही हमने गुरुदेव का ध्यान किया और  
मन ही मन कहा कि हे गुरुदेव मेरा स्थानान्तरण रुक जाये या  
गजविराज में ही पुनः हो जाए।

गुरुदेव को पत्र भी लिखे। गुरुदेव नी से आज्ञा हुआ कि  
सिद्ध चण्डी महामंत्र का पाठ करे और तारा मंत्र जपते रहे गुरु  
आज्ञा अनुसार तारा मंत्र जप आ रहा हूं। प्रयास करने पर गुरु  
देव कृपा से सम्वत् २०५८ साल भाद्रो २५ के निर्णय अनुसार  
मेरा राजविराज में ही दूररा कायान्तर में हो गया। गुरुदेव से  
मैंने निवेदन है कि हम सब गुरु भाई एवं बहनों पर सदैव कृपा  
बना रहे। जय गुरुदेव।

राय सेवक साह  
राजविराज, सप्तरी नेपाल

# शिव शक्ति दिव्याभिषेक दीक्षा

## पांच मित्रों के लाग

१. नाम.....  
पूरा पता.....  
.....  
२. नाम.....  
पूरा पता.....  
.....  
३. नाम.....  
पूरा पता.....  
.....  
४. नाम.....  
पूरा पता.....  
.....  
५. नाम.....  
पूरा पता.....  
.....

उस यशस्वी साधक का नाम जिसने पांच सदस्य बनाकर दीक्षा में भाग लेने की प्राप्ति प्राप्त की है

१. नाम.....  
पूरा पता.....  
.....

**विशेष :** जो साधक पत्रिका के पांच नवे सदस्य (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएंगा, उसे ही यह 'शिव शक्ति दिव्याभिषेक दीक्षा' उपहार स्वरूप निःशुल्क प्रदान की जाएगी। पांच मित्रों के पूर्ण प्रामाणिक पते, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, इस प्रपत्र में लिखाकर जीधपुर के पते पर भेज दें।

प्रपत्र के साथ रुपये ११७५/- १९५. (१२५+४०) = २३५×३/- का बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर की रूपीद प्रपत्र के साथ भेज दें, जिससे कि आपका स्थान हस्य महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरक्षित किया जा सके।

मन्त्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली गार्जा, हार्डकोर्ट कॉलोनी जोधपुर-342001, (राज.),  
फोन- 0291-432209 टेली फेक्स : 0291-432010  
सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एंकलेव पीताम्बरा, नई दिल्ली-34  
फोन- 011-718228 टेली फेक्स : 011-7196700

# जीवन का संब्यास

पिछले अंक में संब्यास का मूल अर्थ और संब्यास के भेद जिसमें वैशाख संब्यास, ज्ञान संब्यास, ज्ञान वैशाख संब्यास और कर्म संब्यास की व्याख्या की गई थी। जीवन में कर्म करते हुए किस प्रकार से संब्यासी बन सकते हैं। इस संबंध में महर्षि पराशर द्वारा दी गई विवेचना कर्म संब्यास के संपूर्ण सूत्रों को स्पष्ट करती है।

महर्षि पराशर को पूर्ण जन्मासी कहा जाए तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं ढौंगी। वे महान कांतिकारी राष्ट्र निर्माता चाहिए थे। वे विष्णु ऋषि के पौत्र और शक्ति के पुत्र थे। मुख वशिष्ठ के सामिन्द्र में रहने के कारण वे प्रकाशद हत्या जानी और प्राकर्मी थे। उन्होंने अपने ज्ञान के आधार पर चित्तन मनन कर एक महान की शृन्घ की रचना की जिसे पराशर सूति कहा जाता है। इस महान शृन्घ में उन्होंने कर्म संब्यास की विस्तृत विवेचना की।

उनकी मान्यता थी कि पृथ्वी को पूर्ण रूप से स्वर्ण बनाने के लिए ई मनुष्य का जन्म हुआ है। स्वर्ण एक सर्वान्तम कल्पना अवश्य हो सकता है। परंतु यदि मनुष्य अपने जीवन में कर्म संब्यास के आचरणों का पालन करे तो वह अपने राष्ट्र को ही नहीं अति संपूर्ण पृथ्वी को स्वर्ण बना सकता है उनका रिक्षान या कि केवल अग्नि में स्वाहा, स्वाहा करने से भगवान प्रसन्न नहीं होते हैं अपितु अग्नि की तरह तेजस्वी बनने से ही परमात्मा पूर्ण रूप से प्रसन्न होते हैं।

पराशर विष्णु ने १० सिद्धांतों की रचना की और ये १०

सिद्धांत प्रलेक मनुष्य के लिए जीवन के मूलभूत सिद्धांत बन जाए वही मनुष्य पूर्ण रूप से 'जीवन्त संब्यासी' बन सकता है। प्रथम सिद्धांत-सार्व भौमिक सत्य

तीन प्रकार सत्य कहे गये हैं, वे हैं- तात्त्विक, व्यवहारिक और कोटुनिक सत्य और ये सत्य विकाल बाधित जीवन के निदान होने वाहिए। अन्तां सत्य सदैव मन्य ही रहता है, वह किसी भी काल में किसी भी बाधा में परिवर्तित नहीं हो सकता। ऐसा नहीं है कि आज का सत्य आलग है और कल का सत्य आलग। वेद और उपनिषद काल में भी जो सत्य है वही सत्य आज भी सत्य है। देशकाल और पात्र के अनुसार उसमें परिवर्तन नहीं विद्या जा सकता जो एक के लिए और एक समय के लिए रात्य है वही सत्य सब के लिए और सार्वकालिक सत्य है।

गीता में जो भगवान श्रीकृष्ण ने उपदेश देने हुए कहा है कि सत्य को विजय प्राप्त होने में थोड़ा विलम्ब अवश्य हो सकता है लेकिन सत्य जभी परास्त नहीं हो सकता। जिसमें अपने जीवन में निश्चिन सत्य को अपना लिया वह संब्यास मार्ग पर गृहस्थ जीवन जीते हुए भी यूर्जता की ओर अग्रसर हो सकता है।

## द्वितीय सिद्धांत-ज्ञान कर्म और धन का प्रवाह

अधिक ने सिद्धांत दिया कि नन्यनिषु समाज के प्रतिरोध में ज्ञान, कर्म और धन जा ज्वाह रखना चाहिए और यह प्रवाह सत्य निष्ठ चाहिके जीवन में प्याह स्पर्य ये निरुद्दृ देना चाहिए। धन का प्रवाह रखने से समाज का निधन होता है। उसी प्रकार ज्ञान के हाथ में कर्म और कर्म के हाथ में ज्ञान नहीं होते ये समाज पहुँ जन जाता है। ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में ज्ञान, कर्म और धन को स्थिति विरंतर भी रहनी चाहिए तभी वह श्रेष्ठ कर्म संव्यासी बनकर स्वरक्ष समाज का निर्गांग कर सकता है।

## तृतीय सिद्धांत-ज्ञान कर्म और धन की दिशा

ज्ञान, कर्म और धन समाज के इरीर में एक ही दिशा में प्रभावित होने चाहिए। ऐसा न हो कि धन कुछ व्यक्तियों के हाथ में एकत्र हो जाए, ज्ञान कुछ व्यक्तियों के पास एकत्र हो जाए और कुछ व्यक्ति के बाल कर्मशील ही हों। जहाँ भी ऐसी स्थिति बनेगी वहाँ जानी व्यक्ति समाज छोड़कर अपनी तपस्या के लिए चले जाएंगे और समाज में धन द्वारा कर्म का धोषण होता रहेगा। इसलिए जानी व्यक्तियों को समाज में ही रहकर मन्यमत भाव में रहकर धन और कर्म के द्वारा में समन्वय स्थापित रखना चाहिए। ज्ञान भी धन है और संव्यासी का मूल उद्देश्य ही ज्ञान सूपी धन द्वारा समाज को चैतन्य करना है।

## चतुर्थ सिद्धांत-फल की प्राप्ति

मनुष्य जो भी कर्म करे उसका फल उसे अपने जीवन में अवश्य ही प्राप्त होता चाहिए। ऐसा नहीं हो कि कर्म इस जन्म में करें और फल की ग्राहि उपर्युक्त में हो। यीना का यह सिद्धांत उचित है कि व्यक्ति को फल की चिना लिये बिना कर्म करना चाहिए। उससे उसकी सारी शक्ति कर्मशील बनने में लगती है और इस भाव से कर्म करने से ही फल की प्राप्ति संभव है। निरुद्देश्य भाव से साधना, लर्म द्वारा विक्रियाएं संपर्क बरने से पूर्णत्व की प्राप्ति नहीं हो राकी है। हर व्यक्ति में व्यक्ति को नक्षत्र उपने सामने अवश्य रखना चाहिए। वही सच्चा तथ्यदर्शी, कर्म संव्यासी बनना चाहिए।

## पंचम सिद्धांत-नग्रता और शीर्ष

कर्मशील संव्यासी के जीवन में नष्टता और शीर्ष दोनों ही भाव अवश्य होने चाहिए। संसार में सब को उच्छ्वास होने से संसार नहीं चल सकता है, इसी तरह नवाचन में जैव धन रहा है, ऐसा ही चलने देने की भावना भी कर्म संव्यासी के मन में नहीं आनी चाहिए। असत्य का नवता में प्रतिकार और सत्य का दृढ़ता में प्रतिन कर ही अन्याय और अत्याचारी से बचने

जनुशासित समाज की रचना की जा सकती है और ऐसे समाज की रचना करना कर्म संव्यासी का करत्त्व है।

## षष्ठम सिद्धांत-प्रभावशाली नेतृत्व

हर व्यक्ति अपने धर में अपने ध्यान पर नेतृत्व करने की क्षमता रखता है, आवश्यकता उस बात की है कि अपने भीतर उस क्षमता का विकाल किया जाए। यह गलत बात है कि नेतृत्व समाज होगा वैसा ही नेतृत्व भी डोगा। नेतृत्व सत्रेव प्रभावशाली और सत्य से युक्त होना चाहिए विराम समाज को नई विश्वासी व्यक्ति प्राप्त होती रहे, जो सड़े गले समाज में परिवर्तन लाने के लिए प्रभावशाली नेतृत्व दे सकता है वहीं संव्यासी है।

## सप्तम सिद्धांत-स्त्री शक्ति का जागरण

जिस समाज में रिक्तियों वा शोषण होता हो, उन्हें उचित मान सम्मान प्राप्त नहीं होता हो ऐसा समाज उत्तरि नहीं कर सकता। ऐसे समाज में व्यक्ति समाज की आधी शक्ति को व्यव्य, नष्ट कर रखा होता। स्त्री शक्ति जो कि सुष्ठि को चलाने के लिए आवश्यक तत्व माने गई है उसका ही अभ्यास होगा तो संसार में तेजस्विता नहीं आ सकती और नहीं तेजस्वी पुरुष धन सकते हैं। इसलिए हर व्यक्ति में स्त्री शक्ति को नाशृत करना संव्यासी का परम कर्तव्य है।

## अष्टम सिद्धांत-श्री, सरस्वती और शक्ति

हर संव्यासी का करत्त्व है कि वह समाज को स्वरूप, सुर्खी और समृद्ध बनाने के लिए श्री, सरस्वती और शक्ति की समिलित उपासना करे। जब इन शक्तियों का दुर्घयोग होता है तो समाज में अव्यवस्था बढ़ती है। ज्ञान का उद्देश्य जब विकाय हो जाता है अर्थात् ज्ञान को धन के लिए बेचा जाए और पैसे का उपयोग शोषण के लिए हो तो समाज का अहित ही होता है। ऐसी स्थिति में सच्चा संव्यासी ही तीनों शक्तियों को समिलित कर समाज का मार्ग दर्शन कर सकता है। लक्ष्मी का अर्थ है उत्पादन एवं का 'उत्पादन' बहुते से दूसरा गरीब नहीं हो सकता। सरस्वती का अर्थ है 'ज्ञान' एवं के ज्ञानवान् बनने से दूसरा अलानी नहीं बनता है और शक्ति का अर्थ है स्वास्थ्य, एक के स्वरूप धन से दूसरा अस्वस्थ नहीं हो सकता। इन तीनों के समन्वय से ही सुदृढ़ समाज की रचना हो सकती है।

## नवम सिद्धांत-संगठन

पाराशर ऋषि ने उपने सिद्धांती में कही भी वर्ग व्यवस्था का उल्लेख नहीं किया है। ब्राह्मण वहीं जो जानी हो। क्षत्रीय वहीं जो कर्मशील हो। और वैश्य वहीं जो उत्पादक हो वे तीनों बहुतेज, भाव धर्म और उत्पादन धर्म के प्रतीक हैं। इन तीनों के

समन्वय में और उग्री से न्याय सम्बन्ध उत्तित है कि कर्म के लिए के लिए ज्ञान को रास द्वारा आनन्ददुर्लभ करत्त्व है।

## दशम सिद्धांत

दशम सिद्धांत लिए यह का प्रसारिता के बातावरण अन्यतो नहीं होता है राधा, तप नहीं धन भव

रा

यह नमव्याप्ति एक प्रद हजारी यह सम दिवस म यह सम आयोजन प्रत्येक कर्म औ वित्ती उच्च साधक

सन्यवय से ज्ञान, कर्म और उत्पादन का योग्य होता है। और इसी द्वे ही श्रमनिष्ठ, शोषणविहेन अहिंसक समाज की नृत्या भी भवत है। प्रत्येक साधक को उन्यासी कहना इसी लिए उचित है कि वह इन दोनों कार्यों के लिए जयान जान, धन और जन के लिए सदैव शिद्धार्थिन रहता है। केवल स्वात्म सुखाय, लिए की गई काई भी किया संन्यासी के लिए उचित नहीं है। जात्मा को युरु अवश्य ही ग्रास होना चाहिए, अनन्द अवश्य जाप होना चाहिए, लेकिन उनके लिए समाज में श्रेष्ठ आनन्दद्युत, वातावरण की रचना करना भी संन्यासी का ही कर्तव्य है।

### दशाम सिद्धात-आत्मीयता

दशाम स्वार्थीक महत्वपूर्ण चिल्डांत है जिस में संन्यासी के जेए यह कर्तव्य निश्चियत किया गया है कि समाज में जीवन उन्यासा के प्रति प्रीति, और एवं आपस में आत्मीयता का वातावरण अनन्या चाहिए। जिस समाज में विली प्रकार का ध्यान नहीं होता हो, किसी प्रकार की निश्चियत ध्यान नहीं हो और साधना, तपश्चा जैसे वर्ग नहीं हो तब योग्य रुप तक समाज नहीं बन सकता है।

संन्यासी ही समाज में रहकर व्यक्ति रूप में रहकर समाज में उपरोक्त दरों सिद्धांतों का निर्वहन कर सकता है। संन्यासी ही साधक होता है और साधक ही संन्यासी होता है। व्यक्तिकी साधना का नात्यर्थ ही जीवन में निश्चियत सिद्धांत अपनाकर निश्चियत उद्देश्यों की पुनिः के लिए सदैव कर्मशाल रहना है।

वर्गका रंग बदल देने से, बाल बढ़ा देने से या कटा लेने से, समाज से दूर रहकर व्यक्ति का मन नहीं बदल सकता है और न ही वह सही मनन, चिन्तन कर सकता है। सही मनन, चिन्तन करने के लिए वह आवश्यक है कि संन्यासी समाज में ही रहे और अपनी समरयाओं तथा समाज की समस्याओं को अपने ज्ञान से अपनी साधना से अपनी शक्ति से गुलझाए वही व्यक्ति जीवन संन्यासी कहा जा सकता है।

निदाश्रम साधक परिवार की यही धारणा है, यही परंपरा है और यही सदगुरुदेव ने शिक्षा-दीक्षा दी है कि समाज में रहकर ही समाज को बुराहों से लड़ा जा सकता है और हर साधक को समाज में ही रहना है। समाज में रहते हुए सामाजिक कर्तव्यों का निमंत्रण हुए। उपने श्रेष्ठ निदाश्रम उन्यास धर्म को निरान्तर ही जीवन संन्यास लत्व है।

## रायपुर में संन्यास सिद्धि समारोह

यह लिखते हुए गौरव हो रहा है कि रायपुर में हर वर्ष की भाँति कार्तिक पूर्णिमा २१-३० नमवत्सव के द्वाम अवसर पर संन्यास, सिद्धि समारोह संपन्न होने जा रहा है। सप्रेशाला का प्रागण एक प्रकार से ऋषियों-मुनियों, साधकों की आद्वितीय मिलन स्थली बन गया है, जहा हर वर्ष हजारों की संख्या में साधक एकत्र होकर अपने जीवन में संन्यास तत्त्व को जाग्रत करते हैं। और यह संन्यास लत्व कैश्चा हो इसका थोड़ा विवरण मैंने ऊपर दिया है। इसीलिए इस बार संन्यास दिवस महोत्सव के रूप में और स्वर्ण खप्पर महालक्ष्मी साधना शिविर के रूप में संपन्न होगा। यह समारोह छत्तीसगढ़ का दिव्यतम महोत्सव है और प्रत्येक साधक इस में साधक भी है और आयोजक भी है गुरुतत्व से युक्त शिष्य भी है और शिष्य तत्व से युक्त गुरु भी है। छत्तीसगढ़ के प्रत्येक शिष्य का यह कर्तव्य है कि इस शिविर में आयोजकों से स्वयं संपर्क कर अपने ज्ञान, कर्म और धन से सहयोग देकर अपने सिद्धाश्रम परिवार के इस महान उत्सव को ऋषि परंपरा की उच्चतम श्रेणी में स्थापित करे। आप सबका स्वागत है और स्वागत के लिए तत्पर हैं संपूर्ण सिद्धाश्रम साधक परिवार तथा आशीर्वाद है सदगुरुदेव परमहंस निश्चिलेश्वरानन्द जी महाराज का-

आनंद का उपनाम।

नन्द किशोर और शाली

# लक्ष्मणगाविद्याएऽरुद्रकीर्त्तिप्रसादा

विश्व में श्रेष्ठतम साधनाओं में दस महाविद्या साधना है, जो साधक उच्चकोटि के छेत्रेम हैं वे धैरि-धैरि दसों महाविद्याओं को सिद्ध कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

गद्यपि यह एक कठिन किला है। फिर भी साधक यदि नित्य दसों महाविद्याओं का ध्यान और मात्र एक बार मंत्र का उच्चरण कर लेता वह इन उसके लिए अत्यन्त ही शुभदायक और उत्तितदायक रहता है।

जो सामान्य साधक है, उनके लिए यह आवश्यक लेख है, उनको चाहिए कि वह मित्र निन लिखित ध्यान और मंत्र का उच्चरण अपने निजा पूजा में शामिल करें।

## दसों महाविद्या का प्रादुर्भाव

दसों महाविद्याओं का संबंध सती से है, महाभागवत में स्पष्ट कथा आती है, कि व्रक्ष प्रजापति ने शिव को आमंत्रित नहीं किया, सती ने अपने पिता के इस यज्ञ में भग्न लेने की अवौकृति चाही तो अन्तर्मन चाह से शिव ने रवौकृति दे दी। वहां जा कर जब सती ने देखा कि सभी देवताओं के आगम यज्ञ में अपने अपने स्वान पर हैं पर उनके पाति भगवान शंकर का कोई स्वान निर्धारित नहीं है, तो यह अत्यन्त झोप्तित हो गई, औरवे लाज सुर्ख हो गई, झोप से नार गर्हीर बहकने लगा, जिर के केश चारों तरफ बिखर गये और वह कालामिन के स्तम्भ में दिव्याइ देख लगी। जले में मुण्ड माता पहने हुए भी भयानक गोम बाहर निकली हुई थी और वह बार-बार विकट हुक्कार कर रही थी। देवी का यह स्वरूप देखकर देवता तो कथा भगवान शिव भी विचरित हो गये, उस समय उनके गरीब का तेज क्षोषण जूमे के समान तेजस्वी था, और वे बार-बार उड़ाकर कर रही थी। देवी के इस विकलाल भयानक रूप को देख कर शिव भगवन लगे भग्न स्तुतों लियों में रोकने के लिए भगवती दसों ने अपनी लंगभूता दस देवियां प्राप्त की जो कि इस महाविद्याएँ कठलाइ जिनके नाम हैं- काली, तारा, छिरगम्भा, भूमाकरी, वरालामुखी, कम्बा, त्रिपुर शैवी, भुवनेश्वरी, त्रिपुर भूनवी और मातेशी।

जब शिव नियंत्रण में आये तो भगवती देवी ने कथा जो साधक मित्र में इन दस देवियों के ध्यान और मंत्र का एक बार उच्चरण कर लेगा वह निष्ठय ही सभी देवियों से परे, सुखी, सम्पन्न, सम्पत्त और यशस्वी होगा, उसके जीवन में किसी प्रकार की कोई बाधा नहीं आयेगी वहस प्रकार का पाठ करने से साधक शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने में सफल हो सकेगा, और उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिल सकेगी।

## काली

### ध्यान

शवारुदाम्ममहाधीमांघोरवंषां हसन्मुखीम्।

चतुर्भुजांखडगमुण्डवराभयकरां शिवाम् ॥१॥

मुण्डमालाभरादेवीं ललनिह वान्दिगम्बराम्।

पदं संविन्तयत्काली श्मशानलयवाशिनोम् ॥२॥

## मंत्र

क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हीं हूं हूं स्वाहा॥

## २- तारा

### ध्यान

प्रत्यालीष्टपदार्थितां धीशवहृदयोराहुदासापरा

खंडगन्दीवरकत्तिव्यवर्परभुजा हुक्कारबीजोदभवा

सवर्वा नीलविशालपिगलनटा जूटेकनामेष्यु ता

जाह्यन्नस्य कपालकर्तृ जगतां हन्त्युगतारा स्वयम्

## मंत्र

॥ ऐहीं क्रीं हूं फट ॥

## ३- षोडशी

### ध्यान

बालाकेमण्डलाभासां चतुर्बाहुनिलोचनाम्

पाशांकुशधररांश्चापन्द्रारयन्तीं शिवामभजे।

## मंत्र

॥ हींकाम्

४- भुवनेश्वरी

उद्यवदिवन्

स्मरमुखी

## मंत्र

॥ हीं ॥

छित्रमस्तु

प्रत्यालीष्ट

दिव्यस्त्रां

नामावच

रत्यासत्

## मंत्र

॥ श्रीह

५-त्रिपुर शैवी

उद्यवभानु

रक्तालिम्

हस्ताब्जी

देवीम्बद्ध

## मंत्र

॥ हृष्णै

६-शूमावत

विवरणी

विमुक्तकु

काकम्बूज

शूष्पृष्ठस्तु

प्रवृद्धधो

भुन्निपार

प्रवर्षन स

नाहिए। ८

मंत्र

॥ हीकर्दूलही हसकहलही सकल ही ॥

८- भृतजेश्वरी

ध्यान

उद्यदिनद्यु तिमिन्दुकिरीटान्तुङ्गाकुचान्यनव्यमुक्तम्  
स्मरमुखींवरदांज्ञुशपाशाभीतिकरम्प्रभुजे भुवनेशीम्

मंत्र

॥'हीं॥

छित्रमस्ता

ध्यान

प्रत्यालीढपदां सदैव दथतीं छित्रं शिरः कर्तुं कां  
दिग्वरत्रां स्वकवन्धशीणितसुधाधारां पिबन्तोमुदा  
नागावद्वशिरोमणि त्रिनयना हृषुप्तलालंकृतां  
रत्यासत्तमनोभवोपरिदृढा ध्यायेज्जवासंनिभाम् ॥

मंत्र

॥ श्रीहींकलीं ऐ बज्ज्वैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा ॥

९- त्रिपुर भैरवी

ध्यान

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरणक्षीमां शिरोमालिकां  
रकालिमपयोधराजपयटी विद्यामभीतिं व्वरम्  
हस्ताभ्जेदधतीन्त्रिनेत्र विलसद्वक्त्रार विन्दश्रियं  
देवीम्बद्धहिमांशुरत्नमुक्टांव्वन्दे समन्दस्मिताम् ॥

मंत्र

॥ हसेहसकर्णोहसे ॥

१०. धूमावती

ध्यान

विवर्णा चंचला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा  
विमुक्तकुन्तला रुक्षा विधवा विरलद्विजा  
काकध्वजरतास्लदा विलम्बितपयोधरा  
शूर्पप्पहस्तातिरुक्षाक्षा धृतहस्ता वरान्विता  
प्रवृद्धधोणा तु भृशंकुटिला कुटिलेक्षणा  
क्षुत्पिपासार्विता नित्यमभयदा कलहास्पदा ॥

प्रत्येक साधक को अपने कार्य के अनुग्रह अपनी इच्छाओं की पूर्ति हन् आवश्यक महाविद्या याधना अवश्य व्यवहा करनी चाहिए। याधना हेतु संत मिल प्राण प्रतिश्यमुक्त महाविद्या याधना सामर्थी आप कर्मी भी जोधपुर काशालय से मंगा सकते हैं।

मंत्र

॥ धूं धूं धूं मावती ठःठः ॥

१- बगलामुखी

ध्यान

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्ड परत्नवेदीसिंहा सनोपरि  
गताम्परि पीतवण्णम्  
पीताम्बराभरणमालयवि भूषितान्गीन्देवी  
नमामिधृतमुदगर वेरि जिह वाम  
जिहवांग्मावाय क्लेण देवो व्वामेन शकूपरिणीं उपन्तीम्  
गदामिधातेन च दक्षिणेन पीताम्बराह्याठिभुजानमामि

मंत्र

॥ ऊँहीं बगलामुखि सर्वदुषानां वाचम्मुखं स्तम्भय  
जिहवाकीलय कीलय बुलित्राशय हीं ॐ स्वाहा ॥

११. मातंगी

इयामांगी शशिशेखरात्रिनयनां रत्नसिंहासन  
स्थिताम् ॥

वेदेवाहुदण्डेरसि-खेटक-पाशाकुशाधाराम् ॥

मंत्र

॥ ऊँहीं वलीं हूं मातंगै फट् स्वाहा ॥

१२- कमला

ध्यान

कान्त्या काचनसन्निधां हिमगिरिप्रख्येऽचतुर्भिर्गजे-  
हस्तोत्क्षिम हिरण्यमयमृतधरासिच्यमानां त्रियम्  
विभ्राणां व्वरमब्जयुग्मभयं हस्तैकिरीटोऽच्यतां  
क्षेमावद्वनितम्ब विम्बललितां व्वन्दे रविन्दस्थिताम्

मंत्र

॥ ऊँऐ हीं श्रीं कलीं हूं स्तौ : जगत्प्रसूत्यै नमः ॥

वस्तुत, इसी महाविद्या एं जीवन की व्यवस्था महाविद्या है, और इसपे संबंधित ध्यान और मन वा नित्य एक बार पाठ करने से उस दिन जीवन सम्पूर्ण दृष्टियों से पूर्णता एवं सफलता तेजे में सहायक है। प्रत्येक साधक को अपनी व्यक्तिगत पूजा में इसको अवश्य ही स्थान देना चाहिए।

कार्तिक मास संवत् २०५८

# कक्षांकों की वापी

भेष

(चू, चै, तो, ली, लू, लो, आ)  
आने वाला समय कुछ दुनिश्चापन होगा। आर्थिक अवश्यकों की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में एवं शानियों नमूने हैं जिन्होंने की ओर से सहयोग मिल पाना चाहता है। व्यावर्षण होते हैं। नीकरी पेशा लोगों के लिए समय अच्छा रहेगा। आधिकारियों से सहयोग प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह समय संघर्ष का होगा। उन्हें अपना समय पढ़ाइ में आधिक लगाना चाहिए। इस समय 'गुरु साधना' संपन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ १, ६, १२, १०, १५, २१ और २६ हैं।

वृष्टि

(इ, उ, ए, वा, वी, दू, वे, वी)  
मन में उत्साह होगा तथा कुछ जरुर विषयों की भावना प्रबल होगी। आधिकारिक मावनाओं का विकास होगा, जिन्होंने भी सहयोग मिलेगा। इस मारा कुछ विशेष गुण प्रतित होगा। कुछ समझाओं के बाद सफलता अवश्य प्राप्त होगी। समाज में मान सम्मान होगा तथा धार्मिक महान पर नाम के योग हैं। यह समय अच्छा है। इसका उपयोग करें 'स्वर्ण साधना' अवश्य करें। इस मास की शुभ तिथियाँ २, ५, १६, २०, २१, ३०, और ३१ हैं।

मिथुन

(का, की, कू, घ, छ, को, हा)  
आप स्वभव से गिरना सार एवं ह्रस्मै रख दें। करी त्रिपुरा लोग आप से प्रभावित होते हैं। इस ग्राम्य इस स्वभाव द्वारा आप उच्च सफलता प्राप्त कर सकते हैं। नीकरी पेशा लोगों के लिए यह समय मध्यम ही सिख होगा। विद्यार्थियों को परीक्षा एवं साकार में सफलता अवश्य मिलेगी। धार्मिक वर्ग के लिए समय अनुकूल है। उनके कार्य पूरे होंगे। इस मास आप 'भूवनेश्वरी साधना' अवश्य समरप्त करें। इस मास की शुभ तिथि ३, ५, ११, ३८, २५, २७ और ३१ है।

कर्त्तव्य

(ठी, हृ, हो, डा, डी, है, हा)  
कारोबार में व्यापकता बढ़ती तथा आधिक विधि ही सुधरेगी। विदाद की स्थिति में संयम और भूलबूल से कार्य करें।

साक्षात्कारों से सन्कर होते हैं। अपने वर्तमान कार्य में अनुग्रह होने के लिये एवं स्थान में परिवर्तन संभव है। अदालती मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। नीवन राशी से मधुर सर्वेष ढोंगे। अभी यहां कुछ विकल्प न करें। इस मास 'दुर्गा साधना' अवश्य सम्पन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ- ३, ५, १७, २४, ३१, ३२ और २९ हैं।

शिंह

(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, दू, टा)  
आध्यात्म में इस समय विशेष सुचिहेजी। वात्र के देश बनें। आधिक दृष्टि से समय अच्छा रहेगा। बेग नगर व्यासियों के लिए समग्र व्यवस्था अनुकूल है। इटल्लू में सफलता मिलेगी तथा अच्छी नीकरी मिल सकती है। इस मास कोई नया व्यापार या काम शुरू न करें। वाहन प्रयोग करने से मधुर सर्वकर्तव्य दुर्बल हो जाता है। 'धैर्य साधना' अवश्य सम्पन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ- १, ११, १६, १८, २२, २३ और २८ हैं।

कठिन्या

(टी, फा, फी, पू, छ, छा, ट, फे, फो)  
अपने बोध पर निरंतर रखें अन्यथा हानि हो सकती है। नीकरी में बधा उपचार हो सकती है। सद्यम एवं सम्बद्ध ने कार्य करें। आधिक दृष्टि से यत्प्रद न उपचार होने दें। यहां इस समय विशेष सकारात्मक होगा। उत्तम सतर्क रहें। महिलाओं एवं विद्यार्थियों के लिए यह समय संघर्ष का है। 'हनुमान साधना' भवश्य सम्पन्न करें। इस मास की शुभ तिथियाँ- १५, १६, १८, २५, २७ और ३१ हैं।

तुला

(रा, री, झ, ता, ती, तू, ते)  
आपका समय अच्छा चल रहा है फरवरी आप उसका उचित लाभ नहीं ले जा सकते। आप पूर्ण रूप में अपने गुणों को उभारें तथा कार्य क्षेत्र में उत्तरांति उत्त प्रयत्न करें। सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगी। व्यापारी वर्ग के लिए भी समय अनुकूल है तथा नये व्यवसाय को आरंभ करने के लिए श्रेष्ठ समय है। समाज में लोग आपकी नियता करेंगे तथा नीलरा में उत्तरांति श्रेष्ठ प्राप्त

सर्वार्थ,  
सिद्धयोग  
सर्वार्थ सि  
अमृत रिय  
द्विपुष्कर  
द्विपुष्कर  
होगा। इस  
शुभ तिथि- १  
वृद्धिवक्त  
विक्री है। व  
नाइवेदारों से  
एवं संगतिव  
प्रयात्र है। व  
आगमन से उ  
गेहनत का है  
शुभ तिथि १

षष्ठी

क  
स्थिति हो स  
का होगा। इ  
परंतु सद्यम  
रहेगा। साध  
है। स्वास्थ्य  
विद्यार्थी में  
माह आप 'ह  
तिथियाँ २, ३  
मरक्कट

शी  
लिए बहुत ही  
आत्म की व  
प्रबलतामय  
की स्थिति बना  
बनाए रखें।  
लिए यह सम  
'सरसदती स  
३, ८, ११, १४,

जूनीये, अगुल, रुदि, पूर्व, द्विपुष्कर, तिर्हि योग	
सिंहयोग	21-29 विसम्बर
वर्षार्थ शिव योग	9-13-20-25-28 दिसम्बर
अमृत शिव योग	1-25 दिसम्बर
तिर्हि पुष्कर योग	22 दिसम्बर
तिर्हि पुष्कर योग	02 विसम्बर

होगा। इस मास 'गणपति साधना' अवश्य करें। इस मास की शुभ तिथि- ४, ९, १४, २०, २३ और २५ हैं।

### वृष्टिचक्र (तो, ना, जी, नू, जे, जो, या, ठी, यु)

किसी के बहकावे में न आएं नहीं तो गंभीर हानि हो सकती है। व्यावसाय में सावधान रहें विशेषकर प्रतिनिधियों एवं यात्रियों से। अधिक रियों से भय रहें। भूमिक एवं मान्यताकार्य में सचि रहें। ज्ञानस्त्रय की ओर विशेष ध्यान दें। बाह्य चलाते समय भी सावधानी बरतें। अतिथि आगमन से मन में प्रवृत्ति होगी। विद्यार्थियों के लिए समय कही मेहनत करें। इस मास आप 'महाकाली साधना' अवश्य करें। शुभ तिथि १, ३, ६, १२, १८, २४ और २८ हैं।

### धरु (दे, दो, द्रा, द्री, द्वा, द्वा, द्वे)

कम समय में अधिक काम करने से अन्यथिक तनाव की स्थिति हो सकता है। नीकरी पेशा के लिए यह समय कठे संघर्ष का होगा। इस समय कार्य में बाधाएं उत्पन्न होने से ताक्ष रहेगा। परन्तु संघर्ष न होए, श्रमिक वर्ग के लिए भी यह समय प्रतिकूल हो रहेगा। साधनाओं द्वारा नुस्खा वितरण द्वारा लिखित में सुधार संभव है। ज्ञानस्त्रय की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। उत्तर विद्यार्थी मेहनत करेंगे तो निश्चित ही अनुकूलता प्राप्त होगी। इस माह आप 'लक्ष्मी साधना' उपचार करें। इसी माह की अनुकूल तिथियां २, १४, १५, १७, २५, २९ और ३१ हैं।

### मकर

(भ्री, ज्वा, जी, नू, ज्ये, ख्यो, गा, वी)

शीघ्र ही आप शुभ कार्य संपन्न करेंगे। समय आपके लिए बहुत ही अनुकूल है। अपनी बुद्धि से अधिक अपनी अंतर्द्वारा काम करें। पर्यावारिक एवं वैदेशिक नीतियां प्रसन्नतामय रहेगी। यिन्होंने एवं संवाधियों से पूर्ण सहयोग प्राप्त होने की संमानना है। श्रमिक वर्ग के व्यक्ति अधिकारियों से भय रखें। बनाए रखें। कोटि कर्चहरी के मामलों से दूर रहें। महिलाओं के लिए यह समय उत्तम प्रदृश अनुकूल रिक्ष होगा। इस माह आप 'सरस्वती साधना' उपचार करें। इस मास की शुभ तिथियां १, २, ३, ८, ११, १५, २१ और २५ हैं।

### ज्योतिष की दृष्टि से मार्च शीर्ष २००१

यह मास आप विशेष के लिए तनाव से युक्त हो रहेगा। उच्चवाव की घटनाओं में बढ़ोत्तरी अवश्य होगी। भारत यात्र के लिए यह संकेतण का काल है। पुराने शिवों से संबंध और भी अधिक प्रगाढ़ होगे। भारत के लिए विशेष बात यह रहेगी कि अन्य देशों से मिश्रता में दृक्षि होगी। और देश की राजनीतिक स्थिति डांवाड़ोल हो रहेगी।

### तुल्यम्

(शु, ले, नी, सा, सी, यु, से, लो, दा)

इस मास बोहे भी कर्य जल्दबाजी में न बरे। सोच भमज्जकर एक संघर्ष से ही निर्णय लें, विवाद की स्थिति में अपने क्रोध पर कब्ज़ रखें। संघर्ष लो देने से विपरीत परिणाम हो सकते हैं। इस मास यात्रा का योग प्रवल है। शुभ नांगलिक कार्यों में लवि रहेगी तथा व्यवहार भी होगा। परिवार की उपेक्षा न करें तब जीवन साथी के साथ मतभेद न उत्पन्न होने दें। नीकरी पेशा वर्ग के लिए समय कुछ पुनर्नीतीपूर्ण होगा। इस माह में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त करने के लिए 'शुभ हृदयस्त्रय साधना' उपचार करना शह रहेगा। इस मास आपकी अनुकूल तिथियां ५, ९, १४, १९, २०, २६, २७ और ३१ हैं।

### मीठ

(जी, नू, थ, इ, वे, लो, दा, ची)

यह समय गांगलिक कार्यों के लिए बहुत अनुकूल है। जिस चीज़ की आपके बहुत समय ये पाने को इच्छा भी वह आपको प्राप्त होगी। यह समय आपके लिए श्रेष्ठ एवं अनुकूल है। युस्का कृपा से आपके मनोरथ पूर्ण होने वाला आपको नन्हाही रामलना अवश्य ही, प्राप्त होगा। मन उत्पन्न रहेगा एवं ज्ञानस्त्रय भी अनुकूल होगा। विद्यार्थियों एवं महिलाओं के लिए समय कुछ कठिनाइयों के बाद अनुकूलता पूर्ण होगा। इस समय आप 'प्रत्येगिरा साधना' उपचार करें। इस मास आपकी अनुकूल तिथियां ८, ८, १२, १५, २३, २८ और ३० हैं।

### इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

- 7 विसम्बर- मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष तिथि- 7 शुक्रवार मेश्यादी
- 10 दिसम्बर- मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष तिथि- 10-सोमवार-एकादशी
- 12 दिसम्बर- मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष तिथि- 13 बुधवार प्रत्याप्रत
- 14 दिसम्बर- मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष तिथि- 14 शुक्रवार-अमावस्या
- 26 दिसम्बर- मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, तिथि- 11, बुधवार, मोक्षदा एकादशी व्रत
- 28 दिसम्बर- मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, तिथि- 13 शुक्रवार, प्रदोषव्रत
- 30 दिसम्बर- मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष, तिथि- 15 रविवार, पूर्णिमा

# रामाया

साधक, पातक तथा सर्वजन सामान्य के लिये उमय का वह रूप यहां प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यापिक के जीवन में उत्तरते का कारण होता है तथा जिसे जब कर आप सब अपने लिये उन्नति का मार्ग प्रबासत कर सकते हैं। जीवन के लिये जीवन में उमय को ऐसा रूप में प्रस्तुत किया जाता है - जीवन के लिये जीवन के लिये, वह वह व्यापार से सम्बन्धित हो, जो करने से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा उन्नति की भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस प्रेरितम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9, आपके आशय में अंकित हो जावेगा।

बहु मुहूर्त का समय प्रातः ४.२४ से ६.०० बजे तक ही रहता है।

वार/दिवांक	श्रेष्ठ समय
रविवार ( २ ९ १६ २३ ३० दिसम्बर)	दिन ७.३६ से १०.०० १२.२४ से २.४८ रात्रि ७.३६ से ९.१२ तक ११.३६ से २.०० तक
सोमवार ( ३ १० १७ २४ ३१ दिसम्बर)	दिन ६.०० से १०.४८ तक १.१२ से ८.०० तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ तक २.०० से ३.३६
मंगलवार ( ४ ११ १८ २५ दिसम्बर)	दिन ६.०० से ७.३६ तक १०.०० से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक रात्रि ८.२४ से ११.३६ २.०० से ३.३६ तक
बुधवार ( ५ १२ १९ २६ दिसम्बर)	दिन ६.४८ से ११.३६ तक रात्रि ६.४८ से १०.४८ तक २.०० से ४.२४ तक
गुरुवार ( ६ १३ २० २७ दिसम्बर)	दिन ६.०० से ६.४८ तक १०.४८ से १२.२४ तक ३.०० से ६.०० तक रात्रि १०.०० से १२.२४ तक
शुक्रवार ( ७ १४ २१ २८ दिसम्बर)	दिन ९.१२ से १०.३० तक १२.०० से १२.२४ तक २.०० से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १.१२ से २.०० तक
शनिवार ( १ ८ १५ २२ २९ दिसम्बर)	दिन १०.४८ से २.०० तक ५.१२ से ६.०० तक रात्रि ८.२४ से १०.४८ तक १२.२४ से २.४८ तक ४.२४ से ६.०० तक



‘दिसम्बर’ २००१ मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान ‘६२’

कि  
हैं वि  
पता व  
या व  
प्रत  
उत्तरके  
वरालवि  
प्रस्तुत

दिसम्बर

१. इष्ट
२. गुरु
३. तीन
४. प्रातः
५. किंस
६. दृधर
७. बाहर
८. काली
९. प्रातः
१०. दिन
११. हनुमा
१२. दस म
१३. प्रातः

# गद्यानुषासनी विद्यालय मिहिर कृष्ण

किसी भी कार्य को प्राप्त करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना हस्ती है, कि वह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, परन्तु नहीं दिव का प्राप्तमा किस प्रकार हो होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तकादरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाका बाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल हवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे नी उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वरहाणीहिंर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें वहाँ प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतावान्यक बन सकेगा।

## दिवसम्बार

1. इष्ट का ध्यान कर सफ्टक पर तिलक लगाएं, दिन में शुभ समाचार मिलेंगे।
2. गुरु मंत्र का 21 बार जप कर अपने ऊपर जल छिड़के।
3. तीन बिल्ब पत्र शिवलिंग पर चढ़ाएं, सफलता प्राप्त होगी।
4. प्रातः रुनुमानाष्टक का पाठ करके ही घर से जाएं।
5. किसी भी शुभ कार्य से पहले श्री गणेश जी का ध्यान करें।
6. दूध से बने स्नायु पदार्थ को गुरु की अर्पित करें एवं स्वयं शहण करें।
7. बाहर जाने समय चुटकी भर हींग को शिशण दिशा की ओर फेंक दें।
8. काली सरसों अपने ऊपर से तीन बार धूमाकर घर से बाहर फेंक दें।
9. प्रातः, कल सूर्य दर्शन करें तथा सूर्य देव को जल अर्पित करें।
10. दिन भर दीले रंग की प्रधानता अपने वस्त्रों में रखें।
11. रुनुमान जी के चित्र के सामने पांच दीपक जलाएं। विपदा दूर होगी।
12. दस्य महाविद्या का ध्यान कर घर से जाएं ध्यान-शक्ति नमामि दस वक्त्र जीताम।
13. प्रातः, गुरु घूरन सम्पन्न करें। सफलता प्राप्त होगी।
14. भगवति दुर्गा के चित्र पर पांच गुलाब अर्पित करें।
15. ओर्ही जूँ स: मंत्र का उव्वारण 11 बार करें।
16. प्रातः, दीपल के वृक्ष में जल चढ़ाएं तथा अपनी सफलता की मनोकामना करें।
17. घर से बाहर कुंकुम से स्वास्थ्यिक का निर्माण कर उस पर पुष्प अक्षत चढ़ाएं।
18. सिंचि गुटिका को पूरे दिन अपनी बेब में रखें।
19. घर से निकलते समय दाहिना पोव पहले बाहर निकालें।
20. दो लकेद पुष्प गुह बों अर्पित करें।
21. गुरु जन्म दिवस पर निखिलेश्वरानन्द स्तवन का पाठ करें। गुरु सेवा का संबलपूर्वक लें।
22. एक काले कुत्ते को रोटी दें।
23. प्रातः, काल भगवान सूर्य की कुंकुम अक्षत, पुष्प सहित जल अर्पित करें।
24. प्रातः, काल 7 बार ऊनमः शिथाय का जप करे तथा शिवलिंग पर जल चढ़ाएं।
25. प्रातः, दीपक लगाकर उसमें दो लौग डाल दें। उसके पश्चात घर से प्रस्तुत करें।
26. भगवान गणपति को दूर्वा एवं लङ्घ का भोज लगाएं।
27. प्रातः, काल बिसर्ग से उठने से पहले गुरु वा ध्यान करें।
28. भगवति लहमी के चित्र के सामने धी का दीपक जलाएं।
29. सरसों का तेल तथा काली उड़द का दान करें।
30. पूरे दिन गुरु का स्मरण करें। बाधाएं समाप्त होंगी।
31. प्रातः, तुलसी के पौधे में जल अर्पित करें।

# एकोही नामम् एकोही अद्यात्मम्

## छान्दोव्य उपनिषद्

अब तक अपने इत्यावास्योपनिषद्, केन उपनिषद् कठोपनिषद्, प्रश्न उपनिषद्, मुण्डकोपनिषद्, माण्डूक्यो-पनिषद्, वैतिरीयोपनिषद्, ऐतरेच उपनिषद् का अद्यात्म पत्रिका के पूर्ण अंकों में पढ़ा है। इस अंक में छान्दोव्य-उपनिषद् का व्याख्यात्मक विवेचन स्पष्ट किया जा सका है।

छान्दोव्य-उपनिषद् उपनिषदों में सबसे अधिक विस्तृत उपनिषद् है। इस उपनिषद् के आठ अद्यात्म हैं और प्रत्येक अद्यात्म में विशिष्ट-विशिष्ट चरण हैं। इस उपनिषद् में मूल रूप से यामवेद के व्याख्या की गई है। यामवेद संगीतमय वेद है और पहले चौ अद्यात्मों में ओकार की महिमा का विवेष रूप से वर्णन है। प्रथम अद्यात्म में १३ चरण हैं जिसमें से स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार उत्तर की उपासना की जाए।

# ॐ परम तत्त्वायः ॐ परम तत्त्वायः

छान्दो  
अद्यात्म

ओमित्येत्

आद्यात्म

पृष्ठा भूता

ग्योऽपाम्

रसः ॥२

स एष रस

यदुदग्नीथ

कतमा कत

विमृष्टं भवी

वागेवर्कं प्रा

..... च

तदेतन्मिथु

वे.....

आपयिता

विद्वानक्षरम्

तदा एतदनु

.....

तेनेयं त्रयी

.....

तेनोभी कु

.....

भवति ॥१०

अर्थ प्रथ

'उद्गीथ' की

से गान कहत

अर्थ वित्त

## छान्दोग्य-उपनिषद्-प्रथम अध्याय (प्रथम खण्ड)

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत, ओमिति  
द्वद्गायति तस्योपव्याख्यानम् ॥१॥

एषां भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्य आपो  
स्तोऽपामोषधयोः..... साम्न उद्गीथी  
रसः ॥२॥

स एष रसानां रसतमः परमः पराध्योऽष्टभो  
यदुद्गीथः ॥३॥

कतमा कतमवर्कतमलक्तमत्प्याम कतमः..... इति  
विमृष्टं भवति ॥४॥

वागेवर्कं प्राणः ओमित्येतदक्षरमुद्गीथः .....  
..... च साम च ॥५॥

तदेतन्मिथुनमोमित्येतदस्मिन्नक्षेरे स सृज्यते यदा  
वै..... वै तावन्योन्यस्य कामम् ॥६॥

आपयिता है वै कामानां भवति य एतदेवं  
विद्वानक्षरमुद्गीथमुपास्ने ॥७॥

तदा एतदनुजाक्षरं यद्विकिञ्चानु  
..... विद्वानक्षरमुद्गीथमुपास्ने ॥८॥

तेनेयं त्रयी विद्या वर्तते  
..... महिमा रसेन ॥९॥

तेनोभीं कुरुतो यश्चैतदेवं वेद यश्च  
..... खल्वेतस्यैवाक्षरस्योपव्याख्यानं  
भवति ॥१०॥

अर्थ प्रथम श्लोक- 'ओम्' - यह अक्षर 'उद्गीथ' है, इस  
'उद्गीथ' की उपासना करे। गायक 'ओम्' ही का उच्च-स्वर  
ने गान करता है, उसी का आगे व्याख्यान है ॥१॥

अर्थ द्वितीय श्लोक- पांचों महाभूतों का रस पृथ्वी है, पृथ्वी

का रस नहीं है, जलों का रस औषधियों का रस  
पुरुष है, पुरुष का रस वाणी है, वाणी का रस कक्ष, अर्थात्  
भगवान् की स्तुति है, अक का रस साम, अर्थात् प्रभु के नाम  
का गायन है, साम का रस उद्गीथ, अर्थात् ओंकार का 'उत्'-  
-अर्थात् उच्च-स्वर से, 'गीथ' -- अर्थात् गान है ॥२॥

अर्थ तृतीय श्लोक- यह जो 'उद्गीथ' है-- ओंकार का  
उच्च-स्वरनि से गान है-- वह रसों का रस है, सर्वोच्च-स्थानी  
रस है, रसों की शृंखला में, पृथिवी-जल-ओषधि-पुरुष-वाणी-  
कक्ष-साम-उद्गीथ के रस-क्रम में वह आठवां रस है ॥३॥

अर्थ चतुर्थ श्लोक- कक्ष कीन-कीन सी है, साम कीन-  
कीन-सा है, उद्गीथ कीन-कीन-सा है-- इसका विमर्श भी  
तो करना चाहिए ॥४॥

अर्थ पंचम श्लोक- वाणी ही कक्ष है, प्राण साम है, ओम्  
जो अक्षर है यही उद्गीथ है। अथवा, वाणी और प्राण का एक  
मिथुन है, एक जोड़ा है, और कक्ष और साम का दूसरा मिथुन  
है, दूसरा जोड़ा है ॥५॥

अर्थ षष्ठम श्लोक- जैसे जोड़े के मिलने से नवीन-सृष्टि  
उत्पन्न होती है, वैसे वाणी और प्राण तथा कक्ष और साम के  
जोड़े से 'ओम्'-- इस अक्षर की सृष्टि होती है। वाणी द्वारा प्रभु  
का नाम प्राण-शक्ति से जब गाया जाता है, तब ओंकार प्रकट  
होता है, इसी प्रकार जल, अर्थात् भगवान् की स्तुति के वाक्य,  
साम-गान, उर्थात् संगीत में पड़कर, ओंकार को जन्म देते  
हैं। जब दों परम्पर मिलते हैं, तब वे एक दूरे की कामना को  
पूर्ण करते हैं, इसी प्रकार जब वाणी के साथा प्राण तथा कक्ष  
के साथा साम मिलकर प्रभु के ओंकार नाम का गान करते हैं,  
तब एक-दूसरे की पूर्ति करते हैं ॥६॥

अर्थ सप्तम श्लोक- जो इस प्रकार जानता हुआ अक्षर  
उद्गीथ की उपासना करता है, वह निश्चय ही आस-काम हो  
जाता है ॥७॥

अर्थ अष्टम श्लोक- 'ओम्'-- यही अक्षर अनुज्ञा में भी  
प्रयुक्त होता है। जब किसी बात की अनुज्ञा-स्वीकृति-देनी  
होती है, तब 'ओम्' कहकर दी जाती है। अनुज्ञा देना-- किसी  
बात की स्वीकृति देना-- समृद्धि का सूचक है, जो समृद्ध है,  
आस-काम है, वही तो अनुज्ञा देता है। जो इस प्रकार जानता  
हुआ अक्षर उद्गीथ की उपासना करता है, वह कामनाओं को  
पूरा करने वाला हो जाता है ॥८॥

अर्थ नवम श्लोक- 'ओंकार' से ही त्रयी विद्या का प्रारंभ

होता है, सोम-यज्ञ में अध्यय्य, होता, उद्घाता औंकार से ही अपना काम प्रारंभ करते हैं इसी अक्षर की पूजा के लिये, इसी की महिमा से और इसी के रस से संसार के सब काम चलते हैं ॥९॥

**अर्थ शशम श्लोक-** प्रभु के औंकार नाम की जिस महिमा का वर्णन किया गया, उसे जो जानता है और जो नहीं जानता-उन दोनों का उसी की कृपा से काम चल रहा है। विद्या तथा अविद्या भिन्न-भिन्न हैं- जो विद्या से, औंकार की महिमा को जानता हुआ काम करता है, श्रद्धा से और उपनिषद् के ज्ञान से काम करता है, उपका काम वीर्यशाली होता है। यह सब कुछ उस अक्षर औंकार का ही व्याख्यान है ॥१०॥

**सम्पूर्ण व्याख्या-** जिन के अक्षर, पद और समाप्ति ये नियत संख्या के अनुसार होते हैं उन मंत्रों को 'ऋक्' कहा जाता है। कल्यादि में मैं ऐसे ही सारे मंत्र हैं जिनके अक्षर आदि की क्रोडी नियत संख्या या क्रम न हो उन्हें 'यज्' कहते हैं। 'ऋक्' संज्ञक मंत्रों में ही जो गीत प्रधान है और जाये जा सकते हैं उन्हें 'साम' की संज्ञा दी गई है। सामयेद में सम्पूर्ण मंत्र इसी प्रकार के हैं। साम मंत्रों द्वारा ही विभिन्न वेक्ताओं की स्तुति की जाती है।

**छान्दोग्य-उपनिषद्-प्रथम अध्याय** के प्रथम अध्याय के प्रथम खण्ड के सुष्ठु के प्रथम शब्द ॐ को उद्गीथ कहा गया है और परमात्मा की उपासना इसी रूप में करनी चाहिए। और यज्ञ में भी इसी ॐ शब्द का उच्च स्वर में गायन का होता है। प्रथम खण्ड में रूपरूप से बताया गया है कि सब जीवों का आधार पृथ्वी है और पृथ्वी का रस आधार जल है, जल का रस उस पर निर्भर करने वाली औषधियां हैं और औषधियों का रस उनसे पौष्ण पाने वाला मनुष्य का शरीर है। और मनुष्य के शरीर में सबसे महत्वपूर्ण अंग स्वरूप वाणी है और वाणी का सार कहा है इस में भी जो सबसे उत्तम रस है वह उद्गीथ रूप ॐ है।

उपनिषद् कारों ने सबसे अधिक महत्वपूर्ण वाणी को ही दिया है क्योंकि वाणी के द्वारा ही मनुष्य संसार में अपने जीवन को उच्चतम बना सकता है। इसी लिए वाणी कहा है और प्राण साम है। इस प्रकार वाणी और कहा तथा प्राण और साम एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि प्राण से वाणी और साम से कहा उत्पन्न होती है। जिस प्रकार वो श्रेष्ठजन आपस में प्रेमपूर्वक मिलते हैं तो निश्चय ही एक दूसरे की कामना पूर्ण करते हैं। इसी प्रकार वाणी और प्राण का यह जोड़ा जब औंकार के

उच्चारण में साधना में ध्यान में लग जाता है तो वह पूर्णत्व प्राप्त कर लेता है, ऐसा व्यक्ति निश्चय ही सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति करने में समर्थ रहता है।

यह ॐ रूप अक्षर अनुमति सूचक भी है क्योंकि मनुष्य जब किसी बात के लिए अनुमति देता है तब उस शब्द का ही उच्चारण करता है। किसी को कुछ करने के लिए अनुमति देना समृद्धि और उच्चता का लक्षण है और जो साधक इस रहस्य को जान लेता है वह उद्गीथ रूप में उस परम अक्षर परमात्मा की उपासना करता है वह अपनी और दूसरों की समस्त कामनाओं के साथ-साथ भोग्य वस्तुओं को बढ़ाने में भी समर्थ होता है। ॐ से ही ऋक् यजुः और शाम ये तीनों वेद और इन तीनों वेदों में वर्णित कर्म प्रारंभ होते हैं। इस औंकार अक्षर की प्रिती के लिए इसके प्रभाव और इसकी रस शक्ति से जो व्यक्ति आळान करता है, मंत्र सुनता और सुनाता है, मंत्रों का पाठ करता है वह वास्तव में अविनाशी परमात्मा का ही उद्गीथ गान कर रहा है। संसार के सारे व्यक्ति जो कि यज्ञादि कर्म इत्यादि करते हैं वे दोनों ही प्रारंभ इसी प्रणव अक्षर से ही करते हैं। लेकिन इस ॐ को जानना अत्यन्त आवश्यक है जो साधक श्रद्धापूर्वक इसके वास्तविक रहस्य को बताने वाली विद्या और उसके तत्व को समझ कर क्रिया करता है वही जीवन में पूर्णत्व प्राप्त करता है।

## छान्दोग्य-उपनिषद्-प्रथम अध्याय (द्वितीय खण्ड)

देवासुरा ह वै यत्र संयेतिर उभये .....  
रनेनैनानभिभविष्याम इति ॥१॥

ते ह नासिक्यं

प्राणमुद्गीथमुपासांचक्रिरे .....  
पाप्मना होष विद्ध ॥२॥

अथ ह वाचमुद्गीथमुपासांचक्रिरे .....  
पाप्मना होषा विद्धाः ॥३॥

अथ ह चक्षुरुद्गीथमुपासांचक्रिरे .....  
च पाप्मना ह्यतद्विद्धम् ॥४॥

अथ ह श्रोः

अथ ह मनः

अथ ह य ए

एव यथाऽऽ

नेवेतेन सुरः

तै हांगिरः

तेन तै ह बृहस्पतिः

तेन तै ह बाह्यः

तेन तै ह बाह्यः

आगाता ह

अर्थ प्रथम की सन्तान 'उद्गीथ' के हम पराभव

अर्थात् 'प्राण' उसकी उपास पराभव करते मनुष्य प्राण वोनों को, क

अथ ह श्रोत्रमुद्गीथमुपासांचक्रिरे तद्वासुरा  
 ..... च पाप्मना ह्येतद्विक्रम ॥५॥  
 अथ ह मन उद्गीथमुपासांचक्रिरे.....  
 ..... च पाप्मना ह्येतद्विक्रम ॥६॥  
 अथ ह य एवायं मुख्यः .....  
 ..... विध्वं सेत ॥७॥  
 त्वं यथाऽशमानमाखणमृत्वा.....  
 ..... स एषोऽशमाखणः ॥८॥  
 नेवेतेन सुरभिन दुर्गन्धि .....  
 ..... व्याददात्येवान्तत इति ॥९॥  
 त छांगिरा उद्गीथमुपासांचक्र एतम् एवांगिरसं  
 ..... यद्रसः ॥१०॥  
 तेन तं ह वृहस्पतिरुद्गीथमुपासांचक्र एतम् एवं  
 वृहस्पति..... एष पतिः ॥११॥  
 तेन तं हायस्य उद्गीथमुपासांचक्र .....  
 ..... आस्याधदयते ॥१२॥  
 तेन तं ह वको दालभ्यो विदांचकार ।.....  
 ..... कामानागायति ॥१३॥  
 आगाता ह वै कामनां भवति य एतदेव  
 ..... इत्यध्यात्मम् ॥१४॥

अर्थ प्रथम श्लोक- 'दिव' और 'असुर'-- ये दोनों 'प्रजापति' की सन्नतान हैं। जब ये आपस में लड़ने लगे, तब वेवताओं ने 'उद्गीथ' को इसलिए यहण कर लिया कि इससे असुरों का हम पराभव कर देंगे ॥१॥

अर्थ द्वितीय श्लोक- उन्होंने नासिका में रहने वाले प्राण, अर्थात् 'ध्राण-शक्ति' को शरीर में उद्गीथ का प्रतीक मानकर उसकी उपासना की, यह सोचा कि इससे हम असुरों का पराभव कर देंगे। ध्राण को असुरों ने पाप से बीध दिया, इसलिए मनुष्य ध्राण से दोनों बातें कहता है-- सत्य और असत्य-ये दोनों, क्योंकि वाणी पाप से जो बिधी हुई है ॥२॥

अर्थ तृतीय श्लोक- तब देवों ने वाणी को शरीर में उद्गीथ का प्रतीक मानकर उसकी उपासना की, और सोचा कि वाणी से हम असुरों का पराभव कर देंगे। उसे भी असुरों ने पाप से बीध दिया, इसलिए मनुष्य आखों से दोनों पदार्थ देखता है-- दर्शनीय तथा अदर्शनीय-- इन दोनों को, क्योंकि आंख पाप से जो बिधी हुई है ॥३॥

अर्थ चतुर्थ श्लोक- तब देवों ने चक्र को शरीर में उद्गीथ का प्रतीक मानकर उसकी उपासना की, और सोचा कि चक्र से हम असुरों का पराभव कर देंगे। उसे भी असुरों ने पाप से बीध दिया, इसलिए मनुष्य आखों से दोनों पदार्थ देखता है-- दर्शनीय तथा अदर्शनीय-- इन दोनों को, क्योंकि आंख पाप से जो बिधी हुई है ॥४॥

अर्थ पंचम श्लोक- तब देवों ने श्रोत्र को शरीर में उद्गीथ का प्रतीक मानकर उसकी उपासना की, और सोचा कि श्रोत्र से हम असुरों का पराभव कर देंगे। उसे भी असुरों ने पाप से बीध हुए हैं। क्योंकि कान उच्छ्वासी और बुरी दोनों वचन सुनते हैं ॥५॥

अर्थ षष्ठम श्लोक- तब देवों ने मन को शरीर में उद्गीथ का प्रतीक मानकर उसकी उपासना की, और सोचा कि मन से हम असुरों का पराभव कर देंगे। उसे भी असुरों ने पाप से बीध दिया, इसलिए मनुष्य मन से दोनों प्रकार का संकल्प करता है-- विचारणीय तथा अविचारणीय, क्योंकि मन पाप से जो बिधा हुआ है ॥६॥

अर्थ सप्तम श्लोक- तब देवों ने मुख में रहने वाले प्राण को शरीर में उद्गीथ का प्रतीक मान कर उसकी उपासना की, और सोचा कि इससे हम असुरों का पराभव कर देंगे। अन्य इन्द्रियों में स्वार्थ की भावना है, मुख में स्वार्थ की भावना नहीं है। मुख जो लेता है, अपने पास कुछ न रखाकर, सब में ब्राह्म देता है। प्राण भी दिन-रात चलता हुआ आंख, कान, नाक आदि सभी इन्द्रियों को सजी बनाये हुए हैं। जब असुर मुख में रहने वाले प्राण अथवा 'मुख्य-प्राण' को पाप से बीधने के लिये उसके पास पहुंचे, तो ऐसे नष्ट हो गये जैसे कठोर पत्थर से टकराकर मिट्टी का ढेला नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है ॥७॥

अर्थ अष्टम श्लोक- जैसे कठोर पत्थर से टकराकर मिट्टी का ढेला चूर-चूर हो जाता है, इसी प्रकार वह नष्ट हो जाता है-- जो ओकार के उपासक के लिये पाप की कामना करता है, या उस पर आकरण करता है। उपासक एक अदिग चहान है ॥८॥

अर्थ नवम श्लोक- मुख-स्थित प्राण जे न मनुष्य सुगन्धि को जानता है, न दुर्गन्धि को- -यह प्राण पाप-रहित है, स्वार्थ-

शून्य है, तभी तो यह जो-कुछ खाता है, पीता है, उससे अन्य इन्द्रियों की पालना करता है। अन्त में मृत्यु-समय पर इस प्राण के न मिलने पर मनुष्य चल देता है, और आखिरी बड़ी में मुंह फ़ाड़ देता है, मानो उसे लौटा लाना चाहता है॥१॥

**अर्थ द्वादश श्लोक-** मुख-स्थित प्राण को उद्गीथ का प्रतीक मानकर अंगिरस ने ओंकारोपासना की, इससे उसका कल्पयन हो गया। इसलिए प्राण को 'अंगिरस' माना जाता है, शरीर के अंगों का यह रस है॥१०॥

**अर्थ एकादश श्लोक-** इसी प्रकार मुख-स्थित प्राण को उद्गीथ का प्रतीक मानकर बृहस्पति ने ओंकारोपासना की, इससे उसका भी कल्पयन हो गया। इसलिए प्राण को 'बृहस्पति' माना जाता है, बाणी 'बृहती' है, महान् है, और प्राण उसका 'पति' है॥११॥

**अर्थ द्वादश श्लोक-** इसी प्रकार मुख-स्थित प्राण को उद्गीथ का प्रतीक मानकर अदाय्य ने ओंकारोपासना की, इससे उसका कल्पयन हो गया। इसलिए प्राण को 'अदाय्य' माना जाता है, 'आद्य' अर्थात् मुख, 'अद्य' अर्थात् जाना-अर्थात् जो मुख से जाता-जाता है॥१२॥

**अर्थ त्रयोदश श्लोक-** इसी प्रकार मुख-स्थित प्राण को उद्गीथ का प्रतीक मानकर वर्तम के पत्र ब्रह्म ने ओंकारोपासना की। वह इसके प्रत्याप से निवासारण्य के निवासियों का उद्गता बन गया। वह गा-गकर नैषिधारण्य-वासियों के मनोरथों को पूर्ण किया करता था॥१३॥

**अर्थ चतुर्दश श्लोक-** जो ओंकारोपासना के रहन्द को जानता हुआ इस प्रकार अदाय उद्गीथ की उपासना करता है, वह ओंकार के स्वयोष-नाद से क्रामना भी को पूर्ण करने वाला ही जाता है। शरीर की इन्द्रियों की दृष्टि से ओंकारोपासना का जो रहस्य था, वह 'अध्यात्म'-वर्णन कर दिया गया। उपनिषदों में 'अध्यात्म' का अर्थ है- आत्मा जिस शरीर में, पिंड में रहता है, उस शरीर को, अर्थात् पिंड को लक्ष्य में रख कर किया गया वर्णन॥१४॥

**सम्पूर्ण व्याख्या-** द्वितीय खण्ड के श्लोकों के अर्थ में ही उनकी व्याख्या एक प्रकार से स्पष्ट है कौन देव है, कौन असूर है और कौन मनुष्य है, यह ब्रह्म विशेष विवेचना का विषय है। यह स्पष्ट है कि तीनों एक ही पिता 'प्रगापति' की संतान हैं। उसके उपरांत भी तीनों में इनना अधिक अंतर क्यों है और क्यों देवता ही सर्वमूल्य माने जाते हैं।

देवताओं ने 'उद्गीथ' को शब्द किया। उन्होंने शरीर में

स्थित ध्राण शक्ति को प्रतीक माना लेकिन ध्राण शक्ति भी रुग्णध-दुर्गन्ध दोनों को ही शब्द करती है। बाणी में ही ओंकार को शब्द किया जा सकता है क्योंकि बाणी सत्य और असत्य से बंधी है इस प्रकार चक्षु भी दर्शनीय और अदर्शनीय दोनों प्रकार के दृश्य देखते हैं। कान अर्थात् श्रवण शक्ति भी श्रवण योग्य और श्रवण के अयोग्य अर्थात् अन्धे और बुरे वयन दोनों को ही सुनती है। मन के द्वारा भी ओंकार को शब्द किया जा सकता क्योंकि मनुष्य विचारणीय अविचारणीय दोनों प्रकार के संकल्पों से बंधा हुआ मन में संशय ग्रस्त रहता है।

तब देवताओं ने मुख में रहने वाले प्राण को शरीर में उद्गीथ का प्रतीक मानकर ओंकार की उपासना की क्योंकि मुख में अन्य इन्द्रियों के अनुसार किसी भी प्रकार की स्वार्थ की प्राप्ति नहीं है उसे जी भी प्राप्त होता है वह पूरे शरीर को ब्रांट देता है।

मुख में रहने वाले प्राण को उद्गीथ का प्रतीक मानकर उसकी उपासना का अभियान मुख द्वारा उच्च घोष से ओंकार के नाद को गुणाने से है- इसी को उद्गीथ कहते हैं, 'उत' अर्थात् उच्च-स्वर से, 'गीथ' अर्थात् गाना। अन्य इन्द्रियों से उद्गीयों प्राप्ति ने शुभाग्रुह वासना बनी रहती है, 'मुख' में 'प्राण' के घोग द्वारा उद्गीथोपासना करने से, अर्थात् उच्च-घोष से ओंकार के नाद को गुणाने से पाप का स्पर्श नहीं होता क्योंकि मुख तथा प्राण दोनों में स्वार्थ का सम्पर्क नहीं है।

ब्रह्मियों ने मुख को प्रधानता दी है क्योंकि शरीर के अन्य सभी अंग किसी न किसी दोष से वृक्ष हो सकते हैं लेकिन मुख और प्राण किसी भी प्रकार के दोष से वृक्ष नहीं है। और जो साधक ओंकार की उपासना करता है वह संसार में भय-संशय से मुक्त हो जाता है अंगीरस क्रांति ने ओंकार की उपासना की इसी लिए प्राण को अंगीरस माना गया है। बृहस्पति देव ने भी ओंकार की ही उपासना की। क्योंकि 'बृहती का तात्पर्य' ही बाणी है और जिसने मुख में स्थित बाणी को अपने वश में कर लिया वह बृहस्पति स्वरूप बन जाता है वही सच्चा ब्राह्मण कहा जा सकता है।

ॐ की उपासना केवल एक स्थान पर बैठ कर करने की आवश्यकता नहीं है हर समय मुख से ॐ और हरि ॐ ही निकले, ऐसी मावना से संसार में जो व्यक्ति कर्म करता है वह देव बन जाता है उसे किसी भी प्रकार की असुरी शक्तियों का भय नहीं रहता। भय से विमुक्त होकर वह परमतत्व परमात्मा में विलीन हो जाता है। उसको प्राप्त कर लेता है।

## १. पर्दि

उत्तमः  
उपमे प्रम  
का जीवन  
हो, परंतु  
नहीं होता  
रह जाता।

... जी  
एक दूसरे  
कार्यों में व  
तौर पर दू  
न होने से  
फिर घर मे

दोष न  
समान सा  
दूसरे से व  
द्वारा सम  
सकता है,  
यदि इस  
प्रसन्नताम  
इस प्रयोग  
उपने।

# जीवन लाभ



वीं तो किसी भी रोग के शमन हेतु आज चिकित्सा विज्ञान के पास अचूक इलाज है, परन्तु मंत्रों के लाभ्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा वाह है, कि सभी रोगों का उद्भव मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभावों को वाहि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी स्वप से शावृत हो जाते हैं।

## १. पति पत्नी में कलाह कुर करें।

आज नगरों में जीवन इनना अधिक घंतवत से गया है, कि उसमें प्रेम यमास सा हो गया। आभूतिकता की दीड़ में व्यक्ति का जीवन भले ही बहुत प्रातिष्ठित और सूख्यापित सा दिखता हो, परन्तु अक्सर घर में शान्ति का एक परिवारिक माहौल नहीं होता, घर एक हट-पत्थरों का रेन बर्सरा मात्र बन कर रह जाता है।

और इसके पीछे मूल कारण होता है, कि पति-पत्नी एक दूसरे को पर्याप्त सम्यक नहीं दे पाते, तोनो ही अपने-अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं और धीरे-धीरे एक दूसरे से मानविक नीर पर दूर होते जाते हैं। पति और पत्नी के विचारों में नालंबित न होने से घर में कलह का स्थिति नित्य बनने लगती है और फिर घर में रहने की इच्छा समाप्त हो जाती है।

दोष न तो पति में होता है, और न ही पानी में- दोनों ही समान रूप से इस स्थिति के लिए जिम्मेदार होते हैं। एक दूसरे से अलगा करना कोई समस्या का हल नहीं है, प्रयास द्वारा सम्बद्धी को एवं परिस्थितियों को मधुर रूप दिया जा सकता है, कलुष भरे जीवन में पुनः अमृत बोला जा सकता है यदि इस प्रयोग को सम्पन्न कर लें, तो जीवन फिर से प्रसन्नतामय हो सकता है। पति अथवा पत्नी दोनों में से कोई इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है।

अपने गामने बाजौर पर पीला वस्त्र बिलाकर उसपर दोनों

पति एवं पत्नी का फोटो रख दे। उसके अंदर एक ताम्बे का पात्र स्थापित करें। पात्र में एवं पत्ने के आश्वासन पर 'नामार्जुनी' को स्थापित करें, तथा 'हकीक बाला' से निम्न मंत्र की ५ माला ११ दिन तक नित्य करें।

मंत्र

॥ॐ लीकेशाशाय विवादं विदारणाप् ए ऊफट॥

Om Kleem Keshnaashaay Vivaadam

Vidaaranaaay Ayeem Om Phat

साधना समाप्ति एकल २५०/-

## २. अगर आपके घर में कोई व्यक्ति रोग से पीड़ित है तो एक बार अवश्य इसमें अजमाएं।

घर में कोई सदप्य बहुत दिनों से रोगित है, और वह बार-बार इलाज करने पर भी स्वस्थ नहीं हो रहा हो, तथा पूरा परिवार उप्यके कारण परेशान रहता हो तो एक बार इस प्रयोग को आप अवश्य ही करें फिर देशिकरे आप के घर में रोग केरा जाता है। आप अपने हाथ में वैश्वनाथ गुटिका को लेकर रोगी के पूरे घरीर में २१ बार स्पर्श कराएं। प्रत्येक बार स्पर्श करने समय निम्न मंत्र का जप भी करें।

मंत्र

॥ॐ शुक्ले गहायुवले रोगलाशय शामय ऊफट॥

इसके बात वैश्वनाथ गुटिका को रोगी के सिरहाने तकिए

के नीचे रख दें। ऐसा आप २१ विनों तक नियमित करें, साधना समाप्ति के बाद वैद्यनाथ गुटिका को किसी नलाशय में विसर्जित कर दें। इससे रोग का शमन प्रारंभ हो जाता है।

साधना सामग्री - ६०/-

### ३. मन में एकाशता निर्मित ही सकती है इस दरह दें भी-

केवल बुद्धिजीवी वर्ग में आमे वाले व्यक्तियों के लिए ही नहीं, किसी भी स्त्री या पुलूष के लिए मन में एकाशता का होना नितान्त अवश्यक होता है, क्योंकि जिसका मन ही एकाश नहीं ही सकता, वह किसी कार्य को पूर्णता दे भी सकता तो क्यों? मन का बेवेन रहना एक अलग स्थिति होती है, जबकि एकाशता न होने की स्थिति वह होती है जहां मन में कोई चिंता न होते हुए भी वह किसी एक कार्य या विचार पर अधिक देर ठिक नहीं सकता है और ऐसी ही स्थितियों के लिए एक पृथक प्रयोग का विवरण प्राप्त होता है। यथापि मन का बेवेन होना और एकाश न होना ये दोनों बातें सामान्य रूप से एक ही प्रतीत होती हैं, किन्तु दोनों में सूक्ष्म सा भेद होता है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए साधक के पास एक मंवसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित पंचमुखी रुद्राक्ष होना आवश्यक होता है, जिसे वह किसी भी सोमवार की प्राति, किसी ताम्र पात्र में केल्लर से स्वस्तिक बनाकर उसके ऊपर स्थापित कर निम्न मंत्र का ११ बार उच्चारण करें। यह सात दिवसीय प्रयोग है।

मंत्र

॥ के उद्दाय मत्तीकात्यां त्यापतं ऊरु ततः ॥

मंत्र जप के पश्चात आठवें दिन रुद्राक्ष को गले या डाढ़ी भूजा में धारण कर लें तथा २१ विनों तक धारण करने के पश्चात किसी इव मंदिर में विसर्जित कर दें। चंचल बुद्धि वाले बालक के लिए उनके माता-पिता भी यह प्रयोग संकल्प करके सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना सामग्री - ६०/-

### ४. अब कौई स्त्री कांक्षा नहीं रह सकती

जिस तरह रेगेस्नान में एक बंद की ललाश व्यक्ति को रहती है, उसी तरह किसी स्त्री को भी आमे सुने जीवन का खुशियों से भरने के लिए एक नन्हे शिशु की ललाक मन में रहती ही है। आज यदि विवाह के दो तीन साल बाद भी कोई स्त्री मां नहीं बनती, तो उसे हीन दृष्टि से देखा जाने लगता है, और यदि वह मां बनने योग्य न हो, तो समाज उसे हीन दृष्टि से देख, घटयुत कर जीने पर मजबूर कर देता है। संतान का न होना अर्थात बालसन सामाजिक दृष्टि से स्त्री के जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप माना जाता है।

स्त्रियों में बांहपन गर्भायां में विकार उत्पन्न होने के कारण ही होता है, क्योंकि स्त्री के जननांगों की विकृति ही उसके गर्भ में अवश्य उत्पन्न कर, उसे कमज़ोर बनाकर बाहा बना देती है। गर्भायां वेष्य या अन्य रोगों के कारण शारीरिक बल शीण हो जाना आविषेष हो कारण है, जो किसी स्त्री को गर्भ धारण नहीं करने देते, इसके लिए निराश होने की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है हमारे व्रतियों द्वारा प्रदत्त ज्ञान से लाभ उत्पन्न की।

ऐसी स्त्रियों को चाहिए कि वे प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, स्नान आविषेनक द्वियाज्ञों से निवृत्त होकर, पूर्व विशा की ओर मुङ्ह करके निम्न मंत्र का खड़े होकर 'जयंती माला' से ११ माला जप कर ११ बार अक्षत सामने रखे जल पात्र में डालें।

मंत्र

॥ उकुण्णाय यामुरेवाय प्राता देहि ततः ॥

फिर इसी मंत्र से सूर्य को अच्य दें तथा ७ बार प्रवश्निपाक करें, ऐसा साल रविवार तक करें। उस दिन केश शुले होने चाहिए और मन में अपने इष्ट या गुरु का चिन्तन मनन कर उनसे प्रार्थना करते हुए ही इस प्रयोग को सम्पन्न करें।

बांझ शब्द से कलंकित स्त्रियों के लिए यह प्रयोग शीघ्र सफलतादायक सिद्ध होगा, और वे शीघ्र ही गर्भ धारण कर इस अद्भुत प्रयोग की सफलता अनुभव कर सकेंगी।

साधना सामग्री - २५०/-

### नीकरी में धकीस्ति के लिए

सुके हुए जल में से सदानन्द आने लगती है, उसी प्रकार एक ही पद पर कई वर्षों तक बने रहने के बाद भी नव व्यक्ति की उत्तरि नहीं होती, तो उसका जीवन भी उस सुके हुए जल की ही भाँति ही जाता है। दूसरे अन्य व्यक्तियों की पदोन्नति होती है, और आप योग्यता एवं अनुभव दोनों की पात्रता लिए हुए भी खाली हाथ बैठे रह जाते हैं। इसका कारण नीतियों की रूपरेखा भी ही हो सकती है, परंतु इसका असर व्यक्ति की आत्म शक्ति पर अवश्य पड़ता है। इस साधना द्वारा आपके मार्ग में आ रही रुकावट व बाधाएं समाप्त होने लगती हैं और वर्ष भर के अन्दर ही आपकी पदोन्नति होती है।

यह ११ शुक्रवार की साधना है। प्रत्येक शुक्रवार को अपने सामने रखे पात्र में 'शीघ्र कार्य सिद्धि यंत्र' पर निम्न मंत्र का 'विघ्नेश्वरी माला' से ५ माल जप करें।

मंत्र

॥ उपर्ती ए शौः उपर्त ॥

इसके बाद यंत्र को काले कपड़े में लपेटकर कहीं सुरक्षित रख दें। अगले शुक्रवार को पुनः यही कप मुहराएं। १३ शुक्रवार के बाद समस्त सामग्री को जल में विसर्जित करें।

साधना सामग्री - २५०/-

आज  
में यह  
शक्ति  
वह म  
को स

स्पश्चात्रा  
विकिन्सः

यह सर  
उपचार-प्राप्त  
महोगी भी  
उष्मविनियो  
जन्त-प्रेरणा  
बढ़ाने वाल  
ध्यानक्रिया  
और प्रतीको  
रेकी है क्या  
'स्पश्चा'  
प्रेता दा. मि  
है। ऐसा का उ  
अर्थ है 'प्राप्त  
रेकी-ज्ञात त  
दा. उपर्ति

# ६ स्पर्श-चिकित्सा विवाद

## रेकी-चिकित्सा

आज वर्ग हर कोई अपने आप को ऐकी चिकित्सा पद्धति का विद्वान बताता है, वास्तव में यह चिकित्सा पद्धति स्पर्श चिकित्सा और दीक्षा चिकित्सा का ही स्थान है। इस शक्ति को ग्राम करने के लिए साधक के पास स्वयं शक्ति का अपडार होना चाहिए और वह अपडार ग्राम होता है गुरु द्वाश तीव्र शक्ति पात दीक्षा के गार्ड्यम से, जिससे ग्राम ऊर्जा को शमाज के हित में प्रवाहित किया जा सके।

स्पर्शद्वारा ऊर्जा का शल्पन की चिकित्सा-सेत्र में रेकी-चिकित्सा' पद्धति के नाम से प्रसिद्ध है।

यह सरल-प्रिधानक, सरनी और दुष्प्रभावरहित उपचार-पद्धति है। अन्य चिकित्सा-पद्धतियों का प्रतिकूल नहीं, सहयोगी भी है। यह रेग-शोक, विना से मुक्तकर नाना दुष्प्रवृत्तियों का समूल नाश करने में भी उपयोगी है। अन्त-प्ररणा, अतीन्द्रिय ग्रवण-वृष्टिकी लक्षण, बन-बुधि को बढ़ाने वाली और काया-कल्प कर मनको शांति तथा व्यानक्षिया में लहयेग प्रदान करने वाली है। साथ ही संकल्प और प्रतीकों द्वारा प्रेषण से दूर्लभ उपचार में भी सक्षम है।

रेकी है क्या?

'स्पर्श-चिकित्सा' बनाम 'रेकी-चिकित्सा'-पद्धति के प्रयोगों द्वा, मिक्रो उर्ध्व ही और उनका 'रेकी' शब्द जापनी है। 'रेकी' का अर्थ है 'ईश्वरीय-सुणि' (ब्रह्मण) और 'की' का अर्थ है 'प्राण-ऊर्जा' (जीवनी-शक्ति)।

रेकी-स्रोत कहां?

हा, उसुईद्वारा प्रस्तुत 'रेकी' अर्थात् 'ऊर्जा-प्रवाह'-का

जान मानव को सृष्टि के आदि में ही हो चुका था। महापुरुषों ने चाहे हृदय की एकाग्रता में स्वयं उनुभव किया या अन्य से प्राप्त किया, यह है उसी जान की पुनरावृत्ति। यह जान मारत से निवृत-चीम होते हैं जापान पहुंचा और दा, उसुई (पूर्व ईसाई) - ने भारत-निवृत यात्रा और बौद्ध धर्म के साथ इस जान की दीभाली ली। भारत से जापान तक की यात्रा में इस जान का कलेवर बदल जाना स्वाभाविक है, परं इसकी मूल आत्मा बही है।

रेकी-परंपरा

हा, उसुई के उत्तीर्ण शिष्यों में मे वधुणि 'हा, वातानोब' स्थान-स्तरीय जानी थे, परंतु दो कियों में 'रेकी-चिकित्सालय'-की स्थापना से यश मिला दा, चुनाये हवाशीको। उनके देहान्त (सन १९३९) - के पश्चात उनकी शिष्या श्रीमती 'हवाशी टकाटा' (जापनी-अमेरिकन महिला) - ने अपने बाईस शिष्यों को यह जान देकर (सन १९८० में) इहलोकसे विदा ली। उस समझ 'रेकी एलायन्स' और 'अमेरिकन अन्नरीषीय रेकी एपोथिक्यान' - ये दो संस्थाएं तथा व्यक्तिरूप से मारीन औ

दूल, कैटनानी तथा पाला छोड़ने के शिक्षक हैं।

‘रेकी’ अर्थात् ऊर्जा-प्रवाह दिव्य शक्ति-चैतन्यभूषण है, जिसकी सिद्धि-हेतु आध्यात्मिक साधना, एकाश्चतुर्ष एवं सतत अभ्यास की भावशक्ति है।

### रेकी-चिकित्सा-पद्धति

श्रेष्ठ-स्वास्थ्य का कारण-आनन्द-परमात्मा में विश्वास, श्रद्धा, निष्ठा, दृढ़ इच्छाशक्ति, इमानदारी, संयम, त्याग, विनम्रता, सत्साहस्र और माधुर्य आदि प्रवृत्तियाँ सुख-शांति, आरोग्य और सम्पन्नता की हेतु हैं। इनके विपरीत छल-कपट, इंधार-हेठ, चिन्ता-क्रोध, लोभ-मोह, आलस्य-आलस्यम, अन्याय-असत्य, निन्दा एवं कटुवाणी आदि नकारात्मक वृष्टिवृत्तियाँ और प्रदृष्टिवत वातावरण, दुर्व्यस्त, अपश्वास तथा जीवन की जटिलताएँ शरीर की रस-सावी ग्रन्थियों को अस्तुलित कर मानसिक तनाव, घबराहट, चिन्ता, सिर-वृद्ध, ब्लडप्रेशर, अनिद्रा, अण्च, शारीरिक दौर्बल्य, अपश्वास, शूष्मर और कैसर आदि रोग-शोक को जन्म देती हैं।

उपचार-प्रक्रिया रेकी-ऊर्जा स्थूल एवं सूक्ष्म शरीर का सशक्त माध्यम ‘साधना-चक्र-प्रणाली’ और ‘रस-सावी-प्रणाली’ में तारतम्य बैठाकर (पुनः संतुलन स्थापित कर) शरीर को रोग-मुक्त करती है। उसहृ-पद्धति में सूक्ष्म शरीर के चक्र स्थूल शरीर की रस-सावी ग्रन्थियों के समीप ही है। यथा-सूक्ष्म-शरीर में सहसार-चक्र के समीप पीठियन ग्रन्थि स्थित है। यहीं ज्ञाता-ज्ञेयका-आनन्द-परमात्मा का एकाकार होता है। आत्म-ज्ञान, विवेक शक्ति के केंद्र अज्ञात्वक के समीप आत्मस वलित नाड़ी-तंत्र, रस सावी पिट्युल्ती ग्रन्थि स्थित है, दूसी प्रकार यादवाहट ग्रन्थि, घाइमस ग्रन्थि, एंड्रीनल आदि ग्रन्थियाँ भी अनाहतचक्र, नाभिपूर्वचक्र, स्वाधिष्ठानचक्र के समीप स्थित हैं। रेकी ऊर्जा-उपचार में इन ऊर्जा-केंद्रों और चक्रों के संतुलन से शरीर के भावतरंगों में वृद्धि होने से शरीर की सभी प्रणालियों में संतुलन आ जाता है।

### रेकी के पांच सिद्धान्त

सफलता पाने के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौती नकारात्मक विचारों तथा कार्यों से छुटकारा पाना, सकारात्मक वृद्धिकोण विकसित करना एवं बोध में असकलताओं के रहने सेव्य धारण कर आगे बढ़ने रहने से मनोरथ पूरा होता है। डॉ. उर्लैंड ने ऊर्जा, करण को विकृत करने वाली रोगों की जनक नकारात्मक प्रवृत्तियों को सकारात्मक प्रवृत्तियों में बदलने-हेतु पांच

सिद्धान्तों को विधायित किया। साधक इनका नित्य-प्रति संकल्प लेता है, सोने से पूर्व बोहराता है और दिनभर के उपने किया-कलाप का स्वतः द्रष्टा बनकर, मूल्योंकन कर आत्मसंतोष उनुमति करता है। ये उसे दिनभर के प्रयोगों से दूर रखते हैं, विनवार्या में सम्मिलित हो जीवन के अंग अनकर अन्तर्जन एवं विचारों को पवित्र कर सुख-शांति की नींद सुलाने हैं। मानसिक ऊर्जाओं के पुनः संतुलन क्षमताओं की किसी में कमी नहीं है, पर यदि इन्हें विकसित या इनका उपयोग न किया जाये तो इन क्षमताओं का कोई लाभ नहीं।

१. केवल आज मैं क्रोध नहीं करूँगा- आजेज मैं क्रोधी अनगत अलापद्धार रहों मैं कॉटे बिगेर अपना तथा अन्य का जीवन कण्टकमय बना देता है और वे जीवनभर युभते रहते हैं।

२. केवल आज मैं चिन्ता नहीं करूँगा-

‘चिता वहति निर्जीवं चिन्ता वहति जीवितम्’।

‘चिता तो निर्जीवको जलाती है, पर चिन्ता जीवित व्यक्ति को ही जला देती है।’

भविष्य आया ही नहीं, उसकी चिन्ता में रहकर वर्तमान को खोना है। जो जीत गया उसमें भी अब कुछ किया नहीं जा सकता। उसकी चिन्ता भी व्यर्थ है। अतः वर्तमान को सुधारना है।

३. केवल आज मैं उस परम सत्ता का आभार व्यक्त करूँगा-आज जो भी जान-मान सम्मान, यश-पद-बल, धन-ऐडवर्ड मेरा है, उसे मैंने परिजन-परिश्रम, बुद्धि-चतुराई और इन्द्रियों द्वारा प्राप्त किया, पर ये संचालित तो उसी समा से हैं, उसके बिना मेरी हस्ती क्या? जहाँ मैं विवरा, ब्रह्माण्ड-निराश हुआ, उसी ने हाथ दे सम्मान। अतः मुझे उस परम सत्ता का आभार व्यक्त करना होगा।

४. केवल आज मैं अपना काम ईमानदारी से करूँगा-एक द्वृढ़ को पचाने-हेतु सी शूट बोलकर भी अन्तरात्मा बेचैन एवं तनावशस्त रहती है और ईमानदार रहने से सत्य की शरण लेने से निःसंकोच, संतुष्ट-शान्त होकर सुख की नींद सोये।

५. केवल आज मैं सब प्राणियों से प्रेम एवं उनका सम्मान करूँगा-सुष्टि के समस्त मानव, पशु-पक्षी, पेड़-पौधों में उपी द्वारे पर चेतन्य की चेतना व्याप्त हो फिर परादा कीन? सब अपने हैं, मायथ वह बैग सभी से प्रेम करना है, सबको सम्मान देना है।

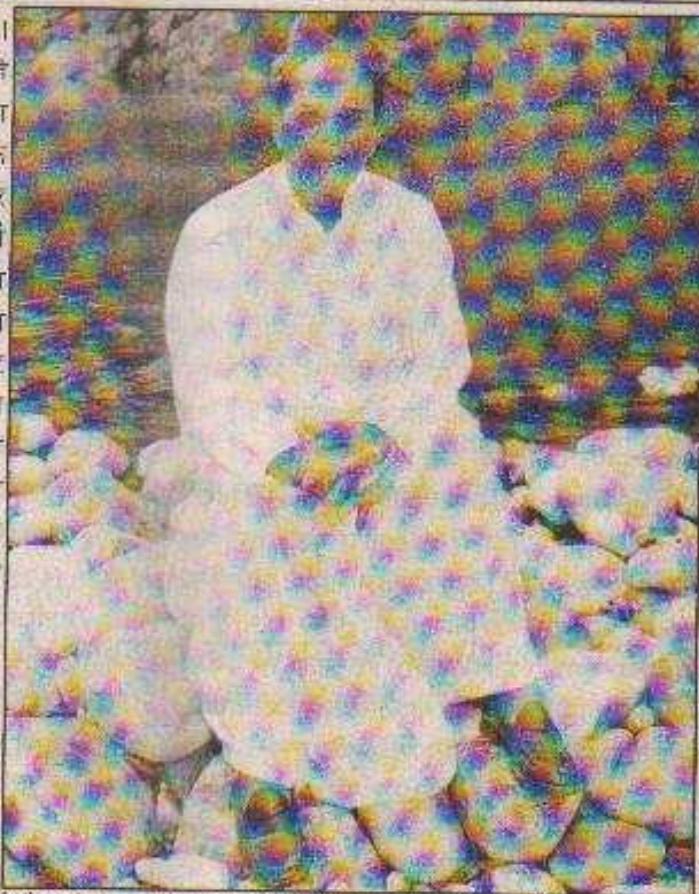
आहार-मांस-मदिरा, धूमपान-तम्बाकू आदि, नशीले पेय-जागे बढ़ता है पदार्थ, अधिकतेल-मसालों में तले-फुले, चरपर-चटपट, गरिदृविशुद्ध चक्र में

न्दार्थों से रहित, सादा सुपार्च्य पोषक भोजन ले। नवपूर जल पीय, पर भोजन के समय नहीं। ताजे फलों और शाक-संबिंदियों का सेवन करे या उनका न्माहार ले। फल तथा कच्चे शाक-संबिंदियों के न्म में नीबू, गाजर और सेब का रस मिलाने पर न्माहार स्वादिष्ट होकर बीस-पचास मिनट में बचकर नवीन रक्तकणों-कोशिकाओं का नीत्रातिर्थीव निर्माण के शरीर से विष, विजातीय न्दार्थों को निकालकर, शरीर को रोग-मुक्त कर न्दी स्फूर्ति तथा शक्ति प्रदान करते हैं। इसके साथ ही आमने, प्राणायाम तथा ध्यान की प्रक्रिया का भी अवलम्बन ले। ऊर्जा-व्राह्म की तरंग जिसनी नुक होती है, उसका अनुभव मन को रखते होते हैं और इस उतने ही समृद्ध-संतुष्ट और स्वयंको न्वस्थ भी अनुभव करने लगते हैं।

साधक प्राणायामद्वारा मस्तिष्क के स्नायु-नाल (मस्तिष्कसे रसमूर्ज दूषित रक्त को निकाल और इवय में शुद्ध रक्त अधिकाधिक भरने पर) न्या मनोविकारों (काम-ब्रोध, लोभ-मोह, मद-मात्सर्य, ईर्ष्या-द्रेष और धृणा-शोकादि) को बचाकर जड़ा मानसिक समता-स्थापन में समर्थ होता है, वहीं शरीर के अन्य स्नायुओं, ग्रन्थि-समूहों और मांस-पेशियों को समृद्ध सशक्त एवं पुष्ट बनाता है। श्वास लेते हुए भावना करे कि शुद्ध वायु के साथ हमारा शरीर सुन्दर, मशक्क, न्वस्थ एवं नीरोग हो रहा है और श्वास छोड़ते समय ऐसी ही भावना करे कि शरीर के सब दूषित मल-विकार आदि श्वास के साथ बाहर निकल रहे हैं।

श्वास-किंवा स्वाभाविक होने पर, मन की स्थिरता-हेतु बैचैन एवं दिव्य ऊर्जा के स्थूल स्वरूप-चिन्तनार्थ श्वास लेते समय भावना की शरण करे कि सूर्य-जैसा ल्वर्णमय प्रकाशपुंज आकाश में स्थिर है। यहाँ सारा आकाश प्रकाशमान है। श्वास छोड़ते समय भावना करे कि सम्मान के वह सुनहरा प्रकाशपुंज (सूक्ष्मनिचक्र की भाँति) धूमता हुआ पीछे में उसी दूपारे पर धीरे-धीरे आ रहा है। नहरे श्वास की गति के ब्र अपने हैं, जाथ बह बैंगनी प्रकाश छोड़ते हुए सहसरा-चक्र के भीतर

उवेश कर रहा है। हमारे नहरे श्वास के साथ वह धीरे-धीरे नहीं पेय-भाँगे बढ़ता हुआ क्रमशः जान-चक्र तक आते हुए नीत्रवण, उपटे, गरिष्ठ विशुद्ध यक्र में हरित-नील (फिरोजी) आभा, अनाहत में



हरितवण, मणिपूर में पीतवण, स्वाधिष्ठान में सिन्दूरी वर्ण तथा मूलधार में रक्तवर्णों आलोक फलाकर जागरूक, चेतना, प्रेम और भूमिका प्रदान कर रहा है।

रेकी-आवाहन-अपने दोनों हाथों को पृष्ठांतरि अर्पण की मुद्रा में पसारते हुए स्वयंका (अथवा अन्य का) उपचार वरने से पूर्वरेकी-शक्ति का निम्न प्रकार ने आवाहन करे- 'हे ईश्वरीय रेकी-शक्ति! मैं (अपना नाम उच्चारण कर) श्री (रोगी का नाम लेकर)-का उपचार करना चाहता हूं, कृपया अपनी दिव्य शक्ति का मेरे शरीर में संचार करे।' यह तीन बार कहना है। इसके पश्चात मार्ग-दशकि गुरु का आवाहा करे- 'समस्त जाने-अनजाने रेकी मार्ग दशकि गुरु जानो! मैं (नाम) रेकी-उपचार करने-हेतु आपका आवाहन कर रहा हूं। आप उपचार में सहयोग करने की कृपा करें।'

ऊर्जा-चक्रों का चैतन्यकरण-हथेलियों के मध्य गहराई में एक दृढ़ व्यास के और अंगुलियों के ऊपरी छोरों पर नहें चक्र हैं। इन पर ध्यान हेतु हुए बारी-बारी से बहले पक

हाथ की अनुभियों के चक्रों को दूसरे हाथ की हथेली के चक्र में, घड़ी की मूँहयों के चलने की दिशा में प्रत्येक को सात-सात बार किर दूसरी हथेली की अंगुलियों को तथा दोनों हथेलियों के चक्रों को परस्पर उच्चकाल उच्चकाल बार पुगाने हुए रनाइकर चेतन करे। अब दोनों हथेली आमने-सामने हो कीट की दूरी पर रख दीरे-धीरे हन्हे पास लाने का प्रयास करे। ध्यान चक्रों पर छोड़े केन्द्रित रहे। यदि हथेलियों में हन्हकी-सी कम्पन-झनझनाहट-कसाव या तमाव आदि क संवेदनशीलता का आभास हो तो समझ ले, चक्र चेतन हो गये हैं और आगे उपचार की ओर बढ़े, अन्यथा इन्हें जाग्रत करने हेतु पुनः उत्तर किया दोहराये।

आभा-मण्डल शुद्धिकरण देवी-देवता-ओ, कृषि मुनियों के मुख - मण्डल उनके चित्रों में प्रख्य प्रकाशयुक्त आभा-मण्डल के मध्य दशायि जाते हैं। ऐसा ही युग्मकीय या प्रकाश उन्ना-लेन सभी निर्जीव-सनीव प्राणियों, पेड़-पौधों का भी दीता है। हरे आभा-मण्डल (ओरा) कहते हैं। शरीर से लगभग छः से आठ फीट की दूरी तक बाह्य आभामण्डल ओर चार से छः इंच की दूरी तक आंतरिक आभामण्डल फैला रहता है। रेकी-उपचार आन्तरिक आभामण्डल फैला रहता है। रेकी-उपचार आन्तरिक आभामण्डल पर अवलम्बित है। रोगों को अपने सामने खड़ाकर ले अथवा लिटा ले। उपचारकर्ता अपनी हथेलियों कपनुमा नुद्रा में कर उसके सिर के अंगर से पैरों तक शरीर से तीन-चार इंच की दूरी बनाये रखें और शरीर के समस्त दृष्टित तत्वों को समेट कर अपने बायें कंथे के अंगर से छिटकते हुए केक कर अन्तरिक में प्रज्वलित तस अग्निकुण्ड में भर्तम कर दें। ऐसी किया सात बार दोहराये। इन में भावना करे कि प्रकृति की ओर से जामुनी रंग की अग्नि जल रही है, जिसमें दृष्टित तत्व भरम हो रहे हैं। इस तरह आभामण्डल के शुद्धिकरणोपरान्न अपने हाथ शुद्ध कर स्वतः शुद्ध जल पीये, रोगी को भी पिलाये। प्रायः भासान्य रोग नी तीन-चार दिन तक आभा-मण्डल के शुद्ध करने पर शान्त हो जाते हैं, पर जीण रोगों के लिये रेकी-उपचार भी है।

रूपर्थ-उन्ना (रेकी)-उपचार की चौबीस स्थितियां-चक्रों (हथेलियों) के चेतन होने पर अनुभव करे कि विव्य उन्ना शरीर में प्रवाहित हो रही है। अब अपनी हथेलियों से निम्न स्थितियों में क्रम-से-क्रम तीन से पांच मिनट तक रूपर्थ है। यीडित अग्नों पर पेंड्रह से तीस मिनट (उदर और तलुओं का शरीर के अन्त

में अतिरिक्त ऊर्णा - रूपर्थ देने से पैरोंगी और सशब्दन होंगे। उपचारकर्ता तथा रोगी (दोनों) - की उवसन क्रिया जै लय समान होने पर उसकी पीड़ा एवं अराम की दशा का अनुभव उपचारकर्ता को होने लगता है। हथेली की अंगुली परपर मिले रहे, सामान्य स्थिति में बायीं हथेली शयों अंगों में और दायीं को दाये अंगों में निम्न स्थितियों में निर्देश नुसार शरीर को स्पर्शित। वक्ष एवं प्रजनन अंगों का स्पर्श बर्वित है। तोन इच उपर से ऊर्णा-सम्पर्कन द्वटे। पहले एक हाथ उताकर वह जब दूसरी स्थिति पर पहुंच जाये तब दूसरा हाथ उठाये।

स्पर्श चिकित्सा की चौबीस स्थितियां इस प्रकार हैं- (१) दोनों हथेलियों दोनों आंखों पर, (२) कानों पर, (३) जबड़ों पर, (४) कनपटियों पर, (५) मस्तिष्क पर (पीछे), दोनों एक साथ, (६) बायीं हथेली पाचबीं स्थिति में ही दाये मस्तक पर, (७) बायीं हथेली गर्दन के पीछे दायीं आगे गले पर, (८) बायीं गले से नीचे वक्ष पर दायीं-बायीं हथेली के नीचे, (९) बायीं नाभि से ऊपर तथा दायीं नाभि पर, (१०) बायीं-दायीं हथेली के नीचे पेहुंच पर दायीं उसके नीचे, (११) फेफड़ों पर, (१२) बायीं घूर्णा-हृदयपर, दायीं यकृत पर, (१३) बायीं छोटी आंत पर, दायीं बड़ी आंत पर, (१४) दोनों हथेलियों नाभि से नीचे मूत्राशय, डिम्बशन्ति, अण्डकोशपर, (१५) दोनों कन्धों पर, (१६) पीछे गूदी पर, (१७) गुदों के नीचे पीट पर, (१८) रीढ़ के अन्तिम छोर पर दोनों जाया-साथ, (१९) बायीं हथेली दायीं भुजापर, दायीं हथेली दायीं भुजापर (आलिंगनमृदा में), (२०) जंवाड़ों पर, (२१) घुटों पर, (२२) यिण्डलियों पर, (२३) सख्तों पर और (२४) तलूओं पर।

तदन्तर पीडित अग्नों-उदर और तलुओं पर अतिरिक्त स्पर्श देना है तो दे, अन्यथा रेकी-उपचार पूरा हुआ। अब रेकी-मार्गवर्शक गुरुओं एवं रोगी का आभार व्यक्त कर सम्बंध तोड़ ले। यथा-ही विव्य रेकी-शक्ति। आपका एवं समस्त जाने-अनजाने मार्गवर्शक रेकी गुरुओं का इस उपचार क्रिया में कृपा करने-हेतु में (नाम) आपका आभारी हूं एवं श्री (रोगी का नाम लेकर)-ने जो अपने उपचार का दायित्व मुझे सौंपा था, उसके लिये आभार व्यक्त करना हूं और अब आप सभी से मैं अपना सम्बंध विच्छेद करता हूं, विच्छेद करता हूं, विच्छेद करता हूं। इसके उपरान्त उपर्युक्त विधि से हाथ शुद्ध कर शुद्ध जल स्वयं पीड़े एवं रोगी को पिलाये।

ईच्छाग्राम देने के हो जाते सिद्ध व शनु दाम आपकी लिए तिजाते हैं,

जी कर मंदिरों कर सकते हैं, जो अर्थ शीतलता।

आप त निः शुल्क से भिजवा दे रजिस्टर्ड डा सिन्ह माला पत्रिकाएँ में

मंत्र मंत्रों Mantra-Tan

# पीताम्बरा विजय सिद्धि माला

द्यक्ति जब उन्नति की ओर अग्रासर होता है, तो उसकी उन्नति से, प्रतिष्ठा से दृष्टिगति द्वारा कुछ उसके मित्र ही उसके शत्रु बन जाते हैं और उसे सहसोग देने के स्थान पर वे उसकी उन्नति के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए प्रयासरत हो जाते हैं। ऐसे शत्रुओं से निपटने के लिए 'पीताम्बरा विजय सिद्धि माला' को सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठित किया गया है। इसके माध्यम से समस्त प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष शत्रु समाप्त होंगे, वहीं इस माला के प्रभाव से आपके कार्यों में भी सफलता मिलेगी, आपको कहीं पराजय नहीं होगी। यह माला निश्चय ही उन्नति और आत्म रक्षा के लिए विशेष लाभप्रद है। समस्त प्रकार के शत्रु इसके प्रभाव से स्वतः ही शान्त हो जाते हैं, सामने आने से ही करताते हैं।

## जीवन का सर्वश्रिष्ट दान — “ज्ञान दान”

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान कहाया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्त्रगतलों में, समारोहों में, मंगल कर्यों में, ब्राह्मणों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे विचित है। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उसका जीवन पक्ष श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

विषय: जिसी में ज्ञान के प्राप्त अधिक रूप में इस माला वे बहल मुख्य नव-‘देही बगलामुखि सर्व ब्रह्मनां वाचे मुखं पदं स्वप्नप्य विष्वा कीलय वृक्षं विनाशय कीं पदं ते’ का तीन माला जप करें। इस तरह अन्ते ३१ विनेनक इसी माला से नेतृत्व माला जप करें। प्रत्यन्त विनाशयन पर ऊह जाए।

## आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (मैलम्ब पोस्टकार्ड क्रमांक ३) भेज दें, कि 'मैं २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निः शुल्क 'पीताम्बरा विजय सिद्धि माला' ३९०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिका क ३००/- + डाक व्यय ९०/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर कुछ लूंगा। बी. पी. पी. दूरने के बाद मुझे २० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।' आपका पत्र आने पर, ३००/- + डाक व्यय ९०/- = ३९०/- की बी. पी. पी. से 'पीताम्बरा विजय सिद्धि माला' भिजवा दें, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित स्पष्ट से प्राप्त हो सके। बी. पी. पी. दूरने पर आपको २० पत्रिकाएं भेज दी जाएंगी।

## सम्पर्क के अन्तर्गत जोधपुर के पते पर भेजें।

**मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान** डॉ. श्रीमली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर — ३४२००१, (राज.)

फोन — ०२९१-४३२२०९, टेलीफोन: ०२९१-४३२०१०

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India. Phone : 0291-432209

४ 'नवम्बर' 2001 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '75' ४

# स्वास्थ्य रेखा

## क्या कहती है

मानव के जीवन में स्वास्थ्य का महत्व सबसे अधिक माना गया है। व्यक्ति के पास वश, मान, पद, प्रतिष्ठा तथा पेशबर्य है, परन्तु यों उसके पास स्वास्थ्य की कमी हो, तो उसका यह दाना उभयं पक एक प्रकार से व्यर्थ है। इसलिए शास्त्रों में स्वास्थ्य को सबसे उत्तम धन माना गया है। हस्तरेखा विशेषज्ञ का चाहिए कि वह जीवन रेखा का अध्ययन करने के बाद सबसे पहले स्वास्थ्य रेखा का ही अध्ययन करे।

उसमें स्वास्थ्य का उसके पूरे जीवन और उसके कार्य कलाओं पर प्रभाव पड़ना है। यदि स्वास्थ्य उसमें होता है, तो वह सब कुछ कार्य कर सकता है, प्रत्येक कार्य में मानसिक और शारीरिक शक्ति लगा सकता है, परन्तु यदि स्वास्थ्य उसका साथ नहीं दे तो उसका जीवन एक प्रकार से व्यर्थ सा हो जाता है।

हथेली में स्वास्थ्य-रेखा का उद्गम किसी भी स्थान से हो सकता है, परन्तु यह बात लिखित है कि इसकी समाप्ति बुध

पर्वत पर ही होती है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि कोई रेखा प्रारंभ होकर बुध पर्वत की ओर आने का प्रयत्न करती है, परन्तु बुध पर्वत तक पहुंच नहीं पाता। ऐसी स्थिति में वह रेखा स्वास्थ्य रेखा नहीं कहला सकती। स्वास्थ्य रेखा वह तभी कहला सकती है, जबकि वह बुध पर्वत को स्पर्श करे या बुध पर्वत पर पहुंचे। कुछ रेखाएं बुध पर्वत को गात्र स्पर्श करके ही रह जाती हैं। ऐसी रेखा को भी बुध रेखा या स्वास्थ्य रेखा मान लेना चाहिए।

यह रेखा हथेली के किसी भी भाग से प्रारंभ हो सकती है।

मुख्य रूप से इसका प्रारंभ निम्न स्थानों से होता है-

१. शुक्र पर्वत से, २. जीवन रेखा के पास से, ३. इवाय रेखा से, ४. चन्द्र पर्वत से, ५. मणिकन्थ से, ६. भान्य रेखा से ७. पंगल पर्वत से।

जैसा कि मैं ऊपर लिखा चुका हूँ कि स्वास्थ्य रेखा का प्रारंभ

कहीं से भी हो सकता है, परन्तु उस रेखा की समाप्ति बुध पर्वत

पर ही होती है। इस रेखा में यह रेखा सम्बन्धित होता है। इसकी छान्ति का किसी भी की हथेली जरूरी है।

कुछ ही मिलता है रेखा का नियमितों ने आकर्षक है। ऐसे व्यापक अपने पुरुष रहते हैं।

जिस ही जीवन भर तुड़ी हुई है लड़के से निगर की। इस बात का सम्बन्धित अधिक जिम्मा रहता है। यह कहीं हुई है आगे के तथ्य स्पष्ट

१. यदि दसा व्यक्ति

२. स्वास्थ्य होती है, तो जाता है।

३. यदि

जर ही होती है।

इस रेखा का भासी-धारि अध्ययन करना चाहिए। हथेली ने यह रेखा जितनी अधिक स्पष्ट, निर्देश व गहरी होती है, नम्बंधित व्यक्ति का स्वास्थ्य उतना ही ज्यादा श्रेष्ठ एवं उच्चत होता है। उसका शरीर सुगतित और व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। यदि हथेली में स्वास्थ्य रेखा दूरी हुई हो या कटी-रुटी, छिप-मिच, लहरदार या जंजीर के समान हो, तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अपने में कमजोर होगा। जीवन में उसे किसी भी प्रकार का कोई आनन्द नहीं रह पाएगा। व्यक्ति की हथेली में स्वास्थ्य रेखा का स्पष्ट होना बहुत अधिक जरूरी है।

कुछ हथेलियों में स्वास्थ्य रेखा का अभाव भी देखने को मिलता है। इस सम्बन्ध में मेरा यह अनुभव है कि स्वास्थ्य रेखा का न होना भी अपने आप में एक शुभ स्वेकेन है। जिन व्यक्तियों के हाथों में स्वास्थ्य रेखा नहीं होती, वे स्वस्थ, आकर्षक और आनन्ददायक जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति किसी भी प्रकार के रोग से दूर रहते हैं, तथा अपने पुरुषार्थ के बल पर सब कुछ करने के लिए तेजर रहते हैं।

जिस हथेली में यह रेखा चौड़ी होती है, उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर रहता है। यदि यह रेखा कई के समान जुड़ी हुई हो, तो उसे जीवन भर पेट की बीमारी रहती है। यदि लहर के समान यह रेखा ऊपर की ओर बढ़ रही हो, तो उसे निगर की बीमारी अवश्य ही होती है। इस रेखा का पीलापन इस बात को स्पष्ट करता है कि ऐसा व्यक्ति ऐलिया या रक्त से सम्बंधित बीमारी से पीड़ित रहेगा। स्वास्थ्य रेखा पर जितने अधिक बिन्दु होते हैं, उसका स्वास्थ्य उतना ही ज्यादा खराब रहता है। यदि किसी की हथेली में स्वास्थ्य रेखा कई चारों कटी हुई हो, तो वह व्यक्ति जीवन भर बीमार बना रहता है।

आगे के पृष्ठों में मैं स्वास्थ्य रेखा से सम्बंधित कुछ विशेष तथ्य स्पष्ट कर रहा हूँ।

१. यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से मिली हुई न हो, तो ऐसा व्यक्ति धीर्घायु होता है।

२. स्वास्थ्य रेखा नितनी अधिक लम्बी, स्वस्थ और पुष्ट होती है, उस व्यक्ति का स्वास्थ्य उतना ही अधिक श्रेष्ठ कहा जाता है।

३. यदि इस रेखा का प्ररेख लाल हो, तो उसे जीवन में

हाट की बीमारी होती है।

४. यदि यह रेखा मध्य में लाल हो, तो उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमजोर बना रहता है।

५. यदि यह रेखा अन्तिम स्थल पर लाल रंग की हो, तो उसे सिर दबे की बीमारी बनी रहती है।

६. यदि यह रेखा कई रंगों की हो तो उसे जीवन में पक्षाधाते का सम्भालना करना पड़ता है।

७. यदि यह रेखा पीले रंग की हो, तो उसे गुप्त रोग होते हैं।

८. यदि स्वास्थ्य रेखा चन्द्र पर्वत से होती हुई हथेली के किनारे-किनारे चलकर बुध पर्वत तक पहुँचती हो, तो वह जीवन में कई बार विदेश यात्राएं करता है।

९. यदि यह रेखा पलली तथा स्पष्ट हो एवं मस्तिष्क रेखा भी पुष्ट हो, तो उस व्यक्ति की स्मरण-शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है।

१०. यदि हस्त रेखा पर तथा मस्तिष्क रेखा पर धब्बे हों, तो व्यक्ति जीवन भर बीमार बना रहता है।

११. यदि हथेली में स्वास्थ्य रेखा सुख्ख लंग की हो, तो ऐसा व्यक्ति जरूरत में ज्यादा भोजन तथा कार्बो होता है।

१२. यदि मस्तिष्क रेखा कमजोर हो या स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो, तो उसे पेट की बीमारी बनी रहती है।

१३. यदि बुध पर्वत पर यह रेखा आकर कट जाती हो, तो ऐसे व्यक्ति को पिंत दोष होता है।

१४. यदि यह रेखा लाल रंग की हो कर हृदय रेखा से बढ़ती हो, तो उसका हृदय अस्यन्त कमजोर समझना चाहिए।

१५. यदि कोई स्वास्थ्य रेखा हृदय रेखा पर ऊपर का चिन्ह बनाती हो, तो उसे मन्दाग्नि रोग रहता है।

१६. यदि स्वास्थ्य रेखा से कई साहायक रेखाएं निकलकर ऊपर की ओर बढ़ रही हों, तो ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य अस्यन्त श्रेष्ठ माना जाता है।

१७. यदि स्वास्थ्य रेखा लम्बी तथा लहरदार हो, पर भास्य रेखा कमजोर हो, तो उसे जीवन में दांतों की बीमारी होती है।

१८. यदि स्वास्थ्य रेखा कमजोर हो एवं हृदय रेखा भी कमजोर हो, तो व्यक्ति बुज्जल मनोदृष्टि का होता है।

१९. यदि स्वास्थ्य रेखा के अन्तिम स्थल पर चतुर्मुख हो, तो व्यक्ति लकवे के रोग से पीड़ित रहता है।

२०. यदि उगलियों कोणाकार हों तथा स्वास्थ्य रेखा कमजोर

किंतु कोई करना है।  
वह रेखा बह तभी रहे या बुध करके ही रेखा मान

मानकरी है।

हृदय रेखा से ३

वा का प्ररेख में बुध पर्वत

हो, तो व्यक्ति लकड़े के रोग से पीड़ित रहता है।

२४. यदि स्वास्थ्य रेखा ने कई छोटी-छोटी शाखाएँ नीचे की ओर जा रही हों, तो उसका स्वास्थ्य जीवन भर कमज़ोर बना रहता है।

२५. यदि स्वास्थ्य रेखा से कोई प्रशास्त्रा सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो, तो उस व्यक्ति के पास उत्तरवीय धन होता है।

२६. यदि स्वास्थ्य रेखा की कोई प्रशास्त्रा शनि पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति स्वधाव से गंभीर, मननशील तथा दीप्तांग होता है।

२७. यदि स्वास्थ्य रेखा में चन्द्र रेखा अक्षर मिल रही हो, तो वह व्यक्ति सफल कवि होता है, तथा कई बार विदेश यात्रा करता है।

२८. यदि न्यास्थ्य रेखा से कोई प्रशास्त्रा अङ्गूष्ठ सा बनाती हुई मंगल पर्वत की ओर जा रही हो, तो वह व्यक्ति सफल भविष्यवता होता है।

२९. यदि मनुष्य की हैडली में स्वास्थ्य रेखा चलकर हृदय रेखा को काट रही हो, तो उस व्यक्ति को पिंडी का रोग होता है।

३०. यदि लहरदार स्वास्थ्य रेखा भास्य रेखा को स्पर्श कर लेती हो, तो उस व्यक्ति का भास्य जीवन भर कमज़ोर बना रहता है।

३१. यदि ऐसी रेखा मस्तिष्क रेखा को कूरती हो, तो उस व्यक्ति का दिमाग अत्यन्त कमज़ोर रहता है।

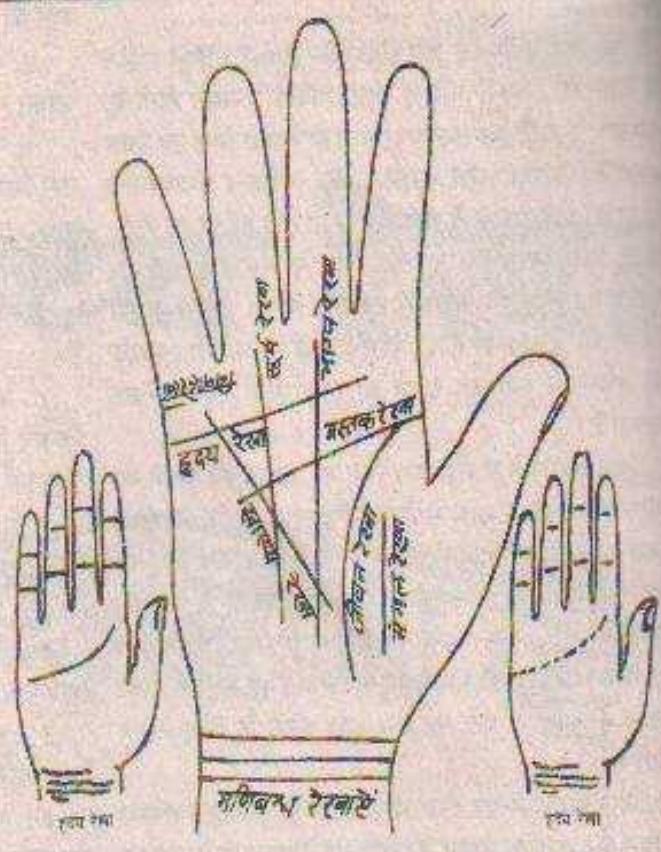
३२. यदि लहरदार स्वास्थ्य रेखा सूर्य पर्वत को स्पर्श करती हो, तो वह जीवन में कई बार बदलामी उठाता है।

३३. यदि स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो तथा बूथ पर्वत को पार करती हो, तो उसे व्यापार में जबरदस्त हानि महन करनी पड़ती है।

३४. यदि स्वास्थ्य रेखा नोकीली हो और हथेली में स्वास्थ्य रेखा का अभाव हो, तो वह व्यक्ति क्रियाशील होता है।

३५. यदि बूथ पर्वत अत्यन्त विक्षिप्त हो और स्वास्थ्य रेखा का अभाव हो, तो वह व्यक्ति खुश मिजाज होता है।

३६. यदि लहरदार बूथ रेखा मुड़कर शुक पर्वत की ओर



जा रही हो, तो उसे प्रेम के द्वेष में जबरदस्त धक्का लगता है।

३६. यदि स्वास्थ्य रेखा पर द्वैप का चिन्ह हो तो उस रक्त सम्बद्धी बांधारियां होती हैं तथा उसके केफदे कमज़ोर रहते हैं।

३७. यदि स्वास्थ्य रेखा के आस-पास कई छोटी-छोटी शाखाएँ हों, तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य हमेशा कमज़ोर रहता है।

३८. यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से बढ़कर मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा को स्पर्श करती हुई आगे बढ़ती है, तो उसे जीवन में कमज़ोरी रहती है।

३९. यदि नीवन रेखा के साथ वह रेखा जुड़ी हुई हो, परंतु इस रेखा पर नीले धब्बे हों, तो उसे हृदय रोग की शिकायत बनी रहती है।

४०. यदि मस्तिष्क रेखा के अन्त में तथा स्वास्थ्य रेखा के अन्त में क्रोध हो, तो वह व्यक्ति सफल होता है।

४१. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

४२. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

४३. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

४४. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

४५. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

४६. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

४७. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

४८. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

४९. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

५०. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

५१. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

५२. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

५३. यदि नीचे आ जर कमज़ोर होता है।

३९. यदि स्वास्थ्य रेखा कहीं पर चमकदार तथा कहीं पर नहीं हो अथवा टुकड़ों में बटी हो तो उसका स्वास्थ्य जीवन कमज़ोर रहता है।

४०. यदि स्वास्थ्य रेखा कमज़ोर और अत्यन्त पतली हो, तो उसके चेहरे पर सुस्ती बनी रहती है।

४१. यदि स्वास्थ्य रेखा और सूर्य रेखा का परस्पर सम्बन्ध बन गया हो, तो उस व्यक्ति का मस्तिष्क अत्यन्त उर्वर होता है।

४२. यदि इस रेखा के अन्त में क्रॉस हो तथा मस्तिष्क रेखा पर भी क्रॉस का चिन्ह हो, तो व्यक्ति जीवन में अन्धा रहता है।

४३. यदि स्वास्थ्य रेखा के मार्ग में कहीं पर तिरछी रेखा बाटती हो, तो आयु के उस भाग में जबरदस्त दुर्घटना (दुर्घटना) होता है।

४४. यदि रेखा पर तारे का चिन्ह हो, तो उसे जीवन में वरिवार का सहयोग नहीं मिलता।

४५. यदि स्वास्थ्य रेखा के आस-पास क्रॉस का चिन्ह हो, तो उसके जीवन में कई बार दुर्घटनाएं घटित होती हैं।

४६. यदि राहु द्वेष पर गुजरते समय स्वास्थ्य रेखा पर चाप का चिन्ह हो, तो ऐसा व्यक्ति टी.बी. के रोग से पीड़ित रहता है।

४७. यदि मस्तिष्क रेखा पर छोप का चिन्ह हो और उस छोप के ऊपर से होकर स्वास्थ्य रेखा गुजर हो हो, तो व्यक्ति जीवन में अत्यन्त कमज़ोर रहेगा।

४८. यदि माघ रेखा कटी हुई हो तथा स्वास्थ्य रेखा पर छोप का चिन्ह हो, तो व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से पीड़ित रहता है।

४९. यदि स्वास्थ्य रेखा हृष्णी के अन्दर धंसी हुई हो, तो उसे गुम रोग रहते हैं।

५०. स्वास्थ्य रेखा पर क्रॉस स्वास्थ्य की हानि की ओर संकेत करते हैं।

५१. यदि स्वास्थ्य रेखा पर नक्षत्र हो, तो व्यक्ति को वरिवारिक सुख नहीं मिलता।

५२. यदि बुध रेखा तथा प्रणव रेखा आपस में मिली हुई हो, तो उस व्यक्ति की पर्णी का स्वास्थ्य जीवन भर कमज़ोर रहता है।

५३. यदि दोनों हाथों में स्वास्थ्य रेखा स्पष्ट हो, तो वह व्यक्ति क्रामुक और भोजी होता है।

५४. यदि स्वास्थ्य रेखा बुहरी हो, तो व्यक्ति ब्रेष्ट भाज्य का स्वामी होता है।

५५. यदि बुहरी स्वास्थ्य रेखा सूर्य पर्वत को भी स्पर्श करती हो, तो वह व्यक्ति राजनीति में अत्यन्त श्रेष्ठ पद प्राप्त करता है।

५६. यदि स्वास्थ्य रेखा तथा हृदय रेखा का मिलन बुध पर्वत के नीचे हो, तो उस व्यक्ति की मृत्यु हार्ट-ट्रैक से होती है।

५७. यदि स्वास्थ्य रेखा के साथ में कोई स्फायक रेखा भी चल रही हो, तो उस व्यक्ति का स्वास्थ्य अत्यन्त श्रेष्ठ समझना चाहिए।

५८. यदि स्वास्थ्य रेखा ठीक हो, परंतु नाखूनों पर पीली धारियां हों, तो उस व्यक्ति की असामयिक मृत्यु होती है।

५९. यदि स्वास्थ्य रेखा नीचे से पुष्ट हो, परंतु उपर चलते क्षीण होती जाती हो, तो व्यक्ति की जीवनकाल में ही मृत्यु हो जाती है।

६०. यदि स्वास्थ्य रेखा मणिबन्ध से निकल रही हो पर दूरी हुई हो, तो उस व्यक्ति की मृत्यु शीघ्र ही समझनी चाहिए।

६१. यदि स्वास्थ्य रेखा पर जाली का चिन्ह हो, तो व्यक्ति पूर्ण आयु नहीं भोगता।

६२. यदि जीवन रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा का आपस में सम्बन्ध हो जाए और उपर तारे का चिन्ह हो, तो व्यक्ति की मृत्यु यात्रा में होती है।

६३. यदि जस्तरत से ज्यादा लम्बे नाखून हों, तो व्यक्ति को स्नात्यु सम्बन्धी बीमारी होती है।

६४. यदि नाखूनों का रंग नीला हो, तो व्यक्ति पक्षाधात से पीड़ित रहता है। यदि नाखून छोटे-छोटे हों और स्वास्थ्य रेखा कटी हुई हो, तो व्यक्ति को मिर्गी का रोग होता है।

६५. यदि जीवन रेखा कमज़ोर हो तथा बुध रेखा लहरदार हो, तो उसे गठिया की बीमारी होती है।

६६. उसम स्वास्थ्य रेखा व्यक्ति के लिए सभी दृष्टियों से सुखदायक कही जाती है।

हस्तरेखा विशेषज्ञ का स्वास्थ्य रेखा का सावधानी के साथ अध्ययन करना चाहिए। इस रेखा से हम भविष्य में होने वाली बीमारियों तथा दुर्घटनाओं की जान

करी पहले से ही कर सकते हैं और इस प्रकार की चेतावनी देकर उसे सावधान कर सकते हैं।

वस्तुतः स्वास्थ्य रेखा का महत्व हवेली में अन्यतम है, इसमें कोई दो राय नहीं।

# हृषीकेश किंबु

दिस मही पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं  
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध वैतन्त्र दिव्य शूलि-

## पर ये द्वितीय राधातात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'गिरावङ्ग' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 बजे 8 बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि अद्वा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में रिंदि का अनुभव भी होने लगता है।

29.12.2001 शनिवार

महाशोङ्कशी प्रयोग

शोभाभ्य के भण्ड होते हैं उनके जो अपने गुरु के समग्र उपस्थित होने के अवसर प्राप्त कर लेते हैं और विरले होते हैं वे शिष्य जो गुरुदेव से महाविद्या साधनाएं प्राप्त कर सके क्योंकि सभी साधनाओं में उत्कृष्ट होती है महाविद्या साधना भगवती महालक्ष्मी के ही सर्वोत्कृष्ट रूप महाशोङ्कशी की साधना प्राप्त होने से निश्चय थी जीवन में वह सब कुछ सहज ही संभव हो जाता है जो कि सैकड़ों साधनाओं के उपरान्त भी नहीं हो पाता।

निरंतर धन प्राप्ति अथवा पूर्ण रूपेण कायाकल्प या फिर सम्मोहनकारी गुणों की प्राप्ति-ये तो कुछ एक पक्ष है इस साधना के, पूर्ण रूप में तो महाशोङ्कशी साधना ब्रह्म सम्पन्न करना, भगवान् श्रीकृष्ण की भाति बोलशक्ला युक्त होना है और यही सम्पन्न होगा इस दिवस के प्रयोग में।

- इन तीनों दिवसों पर साधना ये भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मन्त्र दीर्घे ।
- आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों लो (जो परिवका के सदस्य नहीं हैं) चंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान परिवका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुदेव में सम्पन्न दीर्घे दाता किसी एक प्रयोग में भाग ले रखते हैं, परिवका की चंत्रसत्ता का एक लंबीय शुल्क रु. 235/- ही परन्तु आपको नाव रु. 480/- ही जमा कराना है, प्रयोग से सम्बन्धित उपयोग एवं रिंदि, प्राण-प्रतिष्ठित रु. मर्गी (यंत्र गुरुदेव अद्वा) आपको जिशुल्क ब्रह्म जी वाली
  - यदि आप परिवका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा उपयोग किसी एक मित्र के लिए विक्रिया वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले रखते हैं।
  - परिवका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवक को ज्ञाते परामर्श दी इस गवान साधनालक ज्ञान धारा से जोड़ते एक पूरीत एवं पुण्यदाती कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयोग से एक परिवक ने अभ्यास कुछ प्राप्तियों से इश्वरीय विनाश, साधनालक विनाश का पाल है, तो यह आपके वीक्षन जी स्फुलता जा ही प्रतील है। उपरोक्त प्रयोग तो रख्या निशुल्क है और गुरु कृपा इस ही वरदान स्वरूप राधाक लो ग्रास होते हैं। प्रयोगों की वीक्षण रिंदि को अर्थ के ताराजू में नहीं तौल सकते।

फोटो द्वारा 'साधना शिद्धि दीक्षा' के बारे में २३ से २५

दिनों बारे में होती है।

आप चाहें तो निभासित विवरों से पूर्व ही अपना कोटी दब न्यौतावर राजि का वैकंश्चित्तर (चंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से) बनाकर भी इन विवरों के बारे में यात्रा तय कर सकते हैं। वीक्षा में शामिल होने वाली दीक्षा को ग्राप्त कर सकते हैं। आपका फोटो एवं पार्च सरकारी दस्तावेजों का जल्दी पते हिल्ली कापलिय की सम्पादन विभाग की जाएगी। आप शीघ्र भी स्कैन कर दी जाएगी। दीक्षा में शामिल होने पर वीक्षा सम्पन्न न हो सकेंगी।

परकल - सिद्धांशु

बगलामुखी साधना का शास्त्री में ही नहीं इतिहास के पृष्ठों में भी वर्णन मिलता है। चन्द्रगुप्त, विष्णुमादित्य, यमद्वयगुप्त, राज या नेन्द्र चोल ने अनेकों बार शत्रुओं पर अक्षितीय सफलता इसी साधना के गार्थ्यम से पार्ह थी। जीवन में शांति सहज नहीं है, अनायास ही कई शत्रु उत्पन्न हो जाते हैं, जो जीवन में असन्तुलन पैदा कर देते हैं। शत्रुओं के ऐसे सभी प्रयास असफल हो सके, शत्रु निपटेन हो सके, इसके लिए बगलामुखी साधना का यथा से प्रत्यन रखा जा। शत्रु कोई व्यक्ति नहीं, जीवन की कोई विकट विषय भी हो सकती है, जो आपके लिये शत्रु से कम नहीं है, जैसे मृक्षमें संज्वनना, अधिकारियों में अनबन, लोगों के उत्ताड़न, समाज के कटाक्ष और कई आत्मगत न्यूनताएँ। इन सबके ऊपर विजय भी बगलामुखी साधना से समर्पित है, और इस महाकाश्य साधना का प्राप्त होना ही अपने आप में गौवाहाट है।

31.12.2001 સોગલાર પર્વતભાગ દોષ અનુભૂતિ

वर्तमान में जब व्यक्ति सुकर्म करने के उपरान्त भी अनेक प्रकार के कष्ट और दुःख आदि भोगता है, तब उसका विश्वास ईश्वर के प्रति और गुरु के प्रति हिलने लगता है। इसके विपरीत दूसरी ओर छल करने करने वाला व्यक्ति आनन्द और मरनी के साथ जीवन व्यतीन करता है। इन सबका कारण पूर्व जन्मों में ही छिपा होता है। इस साधना द्वारा न केवल पिछले कई जन्मों को साधक देखने में सफल होता है, अपितु उन कर्म दोषों का शमन भी इसी साधना द्वारा संयुक्त रूप से हो जाता है। इस साधना के बाद ही साधक को ज्यिद्दू सम्भव हो पाती है।

दीक्षा गांज के युवा में एक नामांकित उपाय है जो कृत यी उदारविधि को मात्र कर लेने का। यात्रन के उत्तरान की अद्यतेन को छोड़ कर देता का, जीवन में अतुर्वर्तीय वन दाहय, और यह यह जीव ग्रान्त न कर लेने का। यात्रन में रिहिंग उपाय न कर लेने का।

गुरु प्रवत श्रेणिपात्र इस शिष्य उपाय कार्य हैन वह दीक्षा पाला करता उरामें जिमुपाता ग्रान्त कर लेता है, जो कि वह साधकाता और देवता ग्रान्त करने का एक लंबु उपाय है।

दीक्षा में मात्र ले जो वाले सभी उपायों का जल से यात्रा अविवेक न करने के उपरान्त उपेत शिष्यिपात्र यात्र किया जाता है। यह दीक्षा इन ने जिस्तों को साल 9 वर्षे प्रवर्जन की रखा है। दीक्षा के उपरान्त एक ग्रान्तोबी में ग्रान्त किया जाता है।

बोना करना 3 दिनों के लिये  
एक विशेष पार्श्व व्यक्तियों  
को पर्याप्त अवधि दिलाकर  
उनके लाभ पर नियन्त्रण कर  
उपरांत उन्हें वे दीक्षा द्याये  
लिः गुरुकृष्णन का संकलन

मंत्र, तंत्र और यंत्रों के इस विशाल समूह में अध्यात्म करने का प्रयोजन सिद्धि ही होता है। यह सिद्धि किसी को शाष्ठ नथ किसी को बहुत अधिक प्रभास के बाद मिल पत्ती है, और जिसको बहुत प्रयास के बाद भी नहीं मिलतो वे साधनार्थी को ब्रह्मजाल ही नाम लेते हैं। परन्तु यह सत्य नहीं है, वहि किसी को मन्त्रिल नहीं भिली तो उच्चका यह अर्थ नहीं है, कि मंत्रिल ही की नहीं। हाँ यह अवश्य सत्य है, कि मंत्रिल तक का रस्ता नम्बा था और वहाँ तक पहुँचते पहुँचने व्यक्ति निराश हो गया, अथवा यह भी हो सकता है, कि उसे नहीं रस्ते का जान नहीं हो या किरणों रस्ता मंत्रिल तक जाता हो, वह किसी कारण बद पहा हो। मनुष्य के मस्तिष्क तन्तुओं में रख्य के ही विकारों के फलत, वह ऐसो शक्तिया यह जानी है, जो साधनार्थी में सिद्धि मार्ग की अवस्था कर देती है। इस दीआ आग्रा पर्सी शक्तियों के खननने को किया प्रारंभ हो जाती है और आधक को जीव होने वालानार्थी में अपलता अवस्था होने लगती है।

### शुरुआतीय में दीक्षा व शारीरिक का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि ग्रन्थिकर में मत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है। उससे भी अधिक पुण्यकाली होता है यदि वर्ती के किंवद्दने करें, उससे भी अद्वितीय सुमुद्र तत्त्व, और उससे भी अधिक पवित्र में करें तो, और पवित्र में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुण विषय होता है। इन सबसे भी विषय होता है यदि साध्य के गुण चरणों में वैष्णव साधारण सम्प्रदाय करें और यदि वृक्ष-स्त्रेषु जपाने आश्रम अथवा गुरुद्याम में हो यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा योग्यत्वा और कृपा होता ही जाता।

बुद्ध ऐसे स्थान होते हैं, जहाँ चिल्ड अलिंगों का वारा चलव रहता ही है, जो गद्दगुज़ होते हैं, ते शुद्धम रूप ही अथवा साधारी प्रतिपल अपने धारा में अवस्थित होते हुए प्रात्येक नितिविधि का मुक्तम रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यहाँ चिल्ड गुरुशाल में पुण्य कर बुरा से साधाना, स्वर एवं शीक्षा प्राप्त करता है और युग्म चरणों का स्वार्थ कर उनकी आँखों से साधारा प्रारंभ करता है, तो उसके ही क्षायण से केवल श्री महाराजा करने हैं।

तीर्थ रथल पूण्यपद है पर किष्ट्य अथवा साधक के लिए अभी तीर्थों से भी वावन तीर्थ शुद्धित होता है । जिस धारा में सदकुरुलेव का निवास रथल रहा तो ऐसे किष्ट्य ट्यान पर गुण दरारों में उपस्थित होकर उन्हें मूरुं से मत्र प्राप्त करने की हक्का ही साधक ने तब उपपद होती है, जब उसके सतकर्म जाह्नव होते हैं । इनी तद्धा को ध्यान में रखने द्वारा माधकों के लापार्थ गुरुलेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गृहधर्म में तीज किष्ट्यों को सादालात्मक प्रयोगों की शुरुआत निर्दित की गई है ।

शक्तिपात्र वर्च दीक्षां

## साधना सिद्धि टीका

$$= \text{Rs. } 1175/-$$

# श्री सूर्य-बैलोक्य-मंगल-फल-पत्र

॥ पूर्व-पीठिका ॥

॥ श्रीसूर्य उवाच ॥

शाम्ब, शाम्ब, महा-बाहो । शृणु मे कवचं शुभम् ।  
बैलोक्य-मंगलं नाम, कवचं परमादभुतम् ॥१॥  
वज्जात्यामन्त्र-वित् सम्यक्, फलमाणेति निष्चितम् ।  
यद् धृत्वा च महा-देवो, जणानामधिपोऽभवत् ॥२॥  
पठनाद धारणाद विष्णुः, सर्वेषां पालकः सदा ।  
एवमिन्द्रादयः सर्वे, सर्वेश्वर्यमवान्नुयुः ॥३॥  
कवचस्य कृषिर्ब्रह्मा, छन्दोऽनुष्टुपुवाहतम् ।  
श्रीसूर्यो देवता चात्र, सर्व-देव-नमस्कृतः ।  
आरोग्य-यशो मोक्षेषु, विनियोगः प्रकीर्तिः ॥४॥

॥ ब्रूप पाठ ॥

विनियोग ॐ अस्य बैलोक्य-मंगल नाम श्रीसूर्य-

कवचस्य श्री ब्रह्मा क्रष्णः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीसूर्य-  
देवता, आरोग्य-यशो-मोक्षार्थे पाठे विनियोगः ।  
ऋषयादि-न्यास- श्री ब्रह्मा-क्रष्णे नमः शिरम् ।  
अनुष्टुप-छन्दसे नमः मुखे । श्रीसूर्य-देवता-  
नमः हृदि । आरोग्य-यश-मोक्षार्थे पाठे विनियोग-  
नमः सर्वांगे ।

प्रणवो मे शिरः पातु, वृणिर्भे पातु भालकम् ।  
सूर्योऽव्याप्तयन-छन्द्रमादित्यः कर्ण-मुम्पकम् ॥५॥  
अष्टाक्षरो महा-मन्त्रः, सर्वाभीष्ट-फल-प्रदः ।  
हीं बीजं मे मुखं पातु, हृदयं भुवनेश्वरी ॥२॥  
चन्द्र-बीजं विसर्गाद्यां, पातु मे गुद्धा-देशकम् ।  
त्र्यक्षरोऽसौ महा-मन्त्रः, सर्व-तन्त्र-  
जोपितः ॥३॥



यिवो वह्नि-समायुक्तो, वामाक्षि-विन्दु-भूषितः ।  
 श्रीसूर्यकाथरो महा-मंत्र, श्रीसूर्यस्य प्रक्रीतिंतः ॥४॥  
 योगः । गुह्याद् गुह्या-तरो मंत्रो, वांछा-चिन्ता-मणिर्मतः ।  
 शिरसि गीर्वाचि-पाद-पर्यन्तं, सदा पातु मनूतमम् ॥५॥  
 देवतानि इति ते कथितं दिव्यं, त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।  
 नियोगः । श्री-प्रदं कान्तिदं नित्यं, धनारोग्य-  
 विवर्धनम् ॥६॥

कुषादि-रोग-शमनं, महा-व्याधि-विनाशनम् ।  
 त्रि-सम्भ्यं यः पठे त्रित्यमरोगी बलवान्  
 नवेत् ॥७॥

॥फल-श्रुति ॥

बहुना किमिहोक्तेन, यद्यन्मनसि वत्ति ।  
 ॥२॥ तत् सर्वभवत्येव, कवचस्य च धारणात् ॥१॥  
 शक्तम् । तत्-प्रेत-पिशाचश्व, यक्ष-गन्धर्व-राक्षसाः,  
 वर्व-तन्त्रे राहु-राक्षस-वेताला, नैव द्रष्टुमपि क्षमाः ।  
 रावेव पलायन्ते, तस्य संकीर्तनादपि ॥२॥

भूर्ज-पत्रे समालिख्य, रोचनाऽगुरु-कुंकुमेः ।  
 रविवारे च संक्रान्त्यां, समस्यां च विशेषतः ॥३॥  
 धारयेत् साधक-श्रेष्ठस्त्रैलोक्य-विजयी भवेत् ।  
 त्रि-लोह-मध्यग कृत्वा, धारयेद्वक्षिणे भुजेऽपि ॥४॥  
 शिखायामथवा कण्ठे, सोऽपि सूर्यो न सशयः ।  
 इति ते कथितं शास्त्रं । त्रैलोक्य-मंगलाभिधमा ॥५॥  
 कवचं दुर्लभं लोके, तव स्नेहात् प्रकाशितम् ।  
 अज्ञात्वा कवचं दिव्यं, योः जपत् सूर्यमनूतमम् ।  
 सिद्धिर्न जयते तस्य, कल्प-कोटि-शतेरपि ॥६॥

श्री सूर्य-त्रैलोक्य-मंगल-कवच

(हिन्दी-रूपालिपि)

पूर्व-पीठिका: श्री सूर्य ओले- हे शम्ब हे महा-बली शम्ब!  
 मुझसे 'त्रैलोक्य मंगल' नानक असि विलक्षण कल्याणकारी  
 'कवच' सुनो, जिसे नानकर मंत्रज्ञ साधक विश्वस्य ही सुखल  
 प्राप्त करता है और जिसे धारण कर महा-देव गणेः के स्वर्णी  
 हुए ॥५-२॥

इस कवच की पढ़ने पर धारण करने से विष्णु रथी का भद्र

पालन करते हैं। इसी प्रकार इन्द्रादि सभी देवों ने सब प्रकार की ईश्वरता प्राप्त की ॥३॥

इस कवच के कथि बहुत, दूर्य अनुष्टुप् और देवता सब देवी  
द्वारा वन्नित श्रीमूर्य कहे गये हैं। अरोग्य, वसा और मोक्ष की  
प्राप्ति के लिए इसका विनियोग बताया गया है। ४४ ॥

मूल पाठ, ब्रणव (५) मेरे शिर की रक्खा करें। 'युग्मि' मेरे मस्तक की रक्खा करें। 'स्युर्य' वो नो 'नेत्रों की ओर 'आदित्य' दोनों कानों की रक्खा करें ॥५॥

अष्टमर महामन्त्र (ऊर्ध्वि; सूर्य आदित्य) सभी अभीष्टकल-  
प्रदायक हैं। 'हों' त्रीन मेरे मुख की, भुवनेश्वरी (ही) लक्ष्य की  
और विसर्प-युक्त चन्द्र-बीज (सः) मेरे गुद्ध-केज की रक्षा करें।  
वह तीन अक्षरों का महा-बंद्र (हों हों सः) सभी तन्त्रों में शुभ  
है। २-३॥

शिव (ह) वड़ि (र) से संयुक्त होकर वामसिंह (ई) और विन्दु (र) से शोषित होकर श्रीसूर्य का एकाक्षर महा नवन (हो) परिषद्ध होता है, जो गुरु से भी गुप्त है और कागारांशों को पूर्ण करने में विन्ना-मणि के समान है। यह श्रेष्ठ मंत्र यिर से लेकर फैरो तक सेरी सदा रखा करे ॥४-३॥

वीरों लोगों में दुर्विश यह दिल्ली क्वाच में तुमले कहा। यह

निल्य श्री शीर कांति देना है और घन तथा आरोग्य की दृष्टि करता है। कुषुदि रोगों को नष्ट करना है और बड़ी-से-बड़ी व्याधि को अच्छा करता है। जो नीनों मन्त्राओं में इसका प्रयोग हो वह सब स्वास्थ्य प्रद भसि-शाली रहता है। ४-७

फल-श्रुति, यहाँ आधिक कहने से क्या! मन में जो-जो इच्छा होती है, वह सभी हम 'कवच' को भालग करने से अवश्य पूर्ण होती है ॥ १ ॥

भूत-प्रेत-पिशाच, यदा गन्धर्व-राक्षस, चक्र-राक्षस आदि वेताल तक इन कलान के धारण करने वाले की ओर देख दें।

नहीं जकते । उसका नाम लेने से ही दूर से ही भाग जाते हैं ॥२॥  
 गोरोचन, अगुरु और कुकुम द्वारा मोर पर इस 'कला'  
 को लिख द्वीर शब्दवार, सक्रान्ति में - विशेष कर स्पृही तिल  
 में लिलोह (सोना+चांदी+तांबा) की नाबीज में दाढ़ी मुग  
 छिरखा या कपड़ में धारण करे, तो शेष साधक साधात सूर्य  
 रामान लेनवी होकर दीनों लोकों में वितरी होता है, इस  
 सन्देह नहीं ॥३-४॥

हे जापन ! यह 'बैलोक्य-मंगल' नामक 'कविता' संसार में दुनिया है। मैंने नमस्ते स्नह से इसे प्रकाशित किया है। इस विषय 'कविता' को जागे जिना जो धूर्य के उत्तम मंत्र का व्यप करता है उसे सो कोहि योगो में भी सिंहिल नहीं मिलती ॥३-६॥

कौन हो? स्त्री ने कर दीजिए ने बाथा पूछी ने उबलकर ये के कामज़ोल लाचार लगती हूँ। उपर्युक्त ने उस्त्री ने कर उपर्युक्त ने पूछा नहीं रखा स्त्री ने कह अपने दाहिने लिखने के बापको मर्दाना उपर्युक्त ने पूछा?

स्त्री ने कह  
को लिखते-  
निखते हुए प  
आपके आग  
मोगन परोर  
में खाला रखा  
थी। काम क  
पांव दबाती  
सखि ने पूछ  
स्त्री ने कह

# ଶାବଦୀଏ ଶାଖା ଆବଶ୍ୟକତା

जांव की एक होटी-सी कुटिया ने आरंड के तेल का दीया जल रहा था और दीये के नजदीक बिंदी चढ़ाई पर बैठे एक क्रिया ध्यानस्थ से कुछ लिख रहे थे। उनके आरपास कुछ तुरंत लिखे पत्र बिखरे थे इनमें में बसी पर गुल आया और दीपक भब्ध कर बूझने को हुआ। तुरंत एक स्त्री ने आकर धीरे रे उसमें तेल डाला, बसी को उक्साया और गुल को छाड़ने वे लिए लगाई थे थोड़ा सा फूटका दिया तो अचानक दीया बूझ

जया। लेकिन दीये के बृहत्ते ही स्वा ने तुरंत उसे जल दिया। परन्तु आरं  
वह लौटने लगी तो बुझकर बलने वाले दीये के प्रकाश में कहा— 'वे मुझे आ  
ने जब सामने खड़ी र्सी की ओर देखा तो विश्वास चकित होकर बलाती थी।'  
पूछा, 'देवी, तुम कौन हो?' सनते ही उ

जी ने कहा, 'महाराज, आप अपना काम कीजिए। नेशी गत्तक प्रति किए  
से दीया बद्ध गया था, मझे क्षमा कर दीजियेगा।' बोले देवी, '

वरधि ने पूछा, 'वेकिन देवी, पहले यह तो बताओ कि तु श्री ने अन्

जौन हो? यहां कैसे आई?

स्वी ने अनुनय-विनय के स्वर में कहा, 'महाराज, मुझे क्षमा कर दीजिए। मेरी तनिक-सी गलती से आपकी साहित्य साधना ने बाधा पहुंची है...'

ऋषि ने अपने हाथ का कागज नीचे रखते हुए कहा, 'देवी, तब तक वह नहीं बताओगी कि तुम कौन हो तब तक मैं लिखने के कागज को हाथ नहीं लगाऊंगा।'

नाचार उस लोगों ने कहा, 'महाराज, मैं आपको विवाहिता नहीं हूँ।'

ऋषि ने आश्चर्य से पूछा, 'हमारा व्याह कब हुआ?

स्वी ने कहा, 'उसे करीब ५०-६० वर्ष बीत चुके हैं।'

ऋषि ने पूछा, 'हतने वर्षों तुम मेरे साथ रहीं फिर भी मुझे पता नहीं चल सका?

स्वी ने कहा, 'आपने तो विवाह-महल तेर नज्म के बाणों में भी उपने दाहिने हाथ से मेरा हाथ थामा था और बाएं हाथ में लिखने के ये ही पत्र लिए थे। तब से ये कागज आपके साथ है। आपको मेरी ओर देखने का अवकाश ही कहा मिला।'

ऋषि ने पूछा, 'लेकिन तुमने यों व का यह सारा समय कैसे काटा?

स्वी ने कहा, 'मेरा सारा समय आपकी सेवा में बीता है। रात को लिखते लिखते जब आप थककर सो जाते, मैं ही आपके निखे दूप पत्रों को प्रक्रियत कर सुरक्षित रखती। दिन में मैं आपके आगम को छुड़ाती, स्नान के लिए पानी गरम करती, मोजन परोसती और जब आप एक हाथ से लिखने हुए दूसरे ये खाना खाते थे नब चुपचाप पीछे खड़ी रहकर पंछा ढोलती थी। कभी करते-करते जब आप थककर सो जाते तो आपके नव छबती और बही चतुर्वदी के एक छोर पर सो जाती।'

ऋषि ने पूछा, 'तुम घर की व्यवस्था किस तरह जुटाती थीं?

स्वी ने कहा, 'बोपहर को मैं मोहल्ले की लड़कियों को सीन-दिया देखा और कुछ गीत सिखाने का काम करती थी। इसके एवं वे आपने वे मुझे आटा-दाल देती थीं। इसी से मैं घर की व्यवस्था लोक बलाती थीं।'

सुनते ही ऋषि अपने आपको रोक न लेके और अपनी पत्नी गलत के प्रति किए गए अवज्ञा-अपराध के लिए क्षमा मांगते हुए कहा 'देवी, क्या मैं तुम्हारा नाम जान सकता हूँ?

किंतु स्वी ने अन्यन्त आवश्यकता होकर ऋषि के चरणों में प्रणाम

किसी भी कार्य को पूर्णता देने के लिए कार्य के साथ एकाकार होना आवश्यक है। कोई भी कार्य छोटाया बड़ा नहीं होता जब तक उस कार्य को पूर्ण तत्त्वज्ञता के साथ संपूर्ण नहीं किया जाए। विश्व में आज तक जो भी महान वैज्ञानिक अविष्कारक तत्त्व देता और जानी हुए हैं, उन्होंने सर्विष्यम अपने जीवन का एक लक्ष्य स्थापित किया और फिर उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए संसार के छोटे-मोटे सुखों तथा आस-पास के वातावरण को भूल गए। हर समय एक ही चिन्तन कि किस प्रकार मैं अपने कार्य को पूरा करूँ।

विश्वामित्र, वशिष्ठ, अत्रो, कपाद इत्यादि महान ऋषि इसी लिए बोले कि उन्होंने अपने जीवन में साधना को पूर्ण महत्व देते हुए उसमें स्वी गए और इसी से उन्हें अग्रम तत्त्व परम तत्त्व का ज्ञान हुआ।

सद्गुरुदेव सदैव कहते थे कि व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता, अपितु जो पूर्ण योग के साथ कर्म करता है उन्हीं कार्यों के कलस्वरूप उसे महानता प्राप्त होती है।

कहते हुए कहा, 'प्रभु, माता-पिता ने मेरा नाम भामती रखा था। लेकिन आप देवी कहकर तथा मुझसे क्षमा मांगकर मुझे पाप में मत दानिए।'

ऋषि ने कहा, 'मगवान व्यास ने वर्षों की नपन्दा के बाद वेदों की रचना की और मैंने वर्षों के परिश्रम से उन्हें पढ़ा है। लेकिन भामती, मेरा सारा अध्ययन तुम्हारे इस जीवन के समक्ष छोटा है। व्यास ने तो वेद लिखे और मैंने उन्हें पढ़ा है लेकिन तुमने तो साक्षात् वेदांत को जीकर बता दिया। मैंने इन पत्रों को लिखने में अपना सारा जीवन लपा दिया लेकिन तुमने मेरे पीछे अपना सर्वस्व-जीवन होम दिया। मुझे अपने ग्रंथ के पतने-पत्रों में तुम्हारे जीवन का प्रकाश जगमगाता विश्वर्द्दि दे रहा है। मैं इस ग्रंथ को तुम्हें समर्पित करना चाहता हूँ। आज मैं इस ग्रंथ का नाम होगा 'भामती'।' इतना कहकर ऋषि ने वह ग्रंथ देवी के चरणों में स्थापित कर दिया। वह ग्रंथ ही आज वेदांत शास्त्र के प्रसिद्ध ग्रंथ 'भामती' के नाम से प्रसिद्ध है।

## एक ट्रिट में:

# साधना शिविर पुत्र दीक्षा समारोह

29-30 नवम्बर 2001

रायपुर (छत्तीसगढ़)

संन्यास विवास महोत्सव एवं स्वर्ग उत्पर महालक्ष्मी साधना शिविर  
शिविर स्थल - सप्रगाला प्रान्त रायपुर

आयोजक - छत्तीसगढ़ सिद्धार्थगंगा साधक परिषद

9 दिसम्बर 2001 हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)  
बगलभुखी साधना शिविर

शिविर स्थल - गवर्नरमेंट विविर सेकेंडरी स्कूल हमीरपुर

बस स्टैंड के पासने

आयोजक - \* ज्ञानचंद राज 01978-55283 \* कर्मीर शिंह  
चड्डन 01978-5547 \* पर्सिल केटालनव 01905-66930 \* सरदार  
सुदेज शिंह 0177-230503 \* वीलेन्ड बैरी 09178-44500 \*  
आमप्रकाश शर्मा 01893-65174 \* प्रकाशो देवी 01978-66059 \*  
सुरेश पठोन 01978-55251 \* ज्ञानेश निश्चिल 01978-55016 \*  
राजेन्द्र शर्मा 01972-22265 \* जयचंद ठाकुर 01972-23530

15-16 दिसम्बर 2001 जयपुर

सिद्धिविनायक अष्टमहात्मनी साधना शिविर  
शिविर स्थल - दशहरा मेदान आदर्श नगर, जयपुर (राज.)

आयोजक - \* रघुनाथ शर्मा 0141-582164 \* अनिल शर्मा 0141-  
415277 \* अमरशेश शर्मा 0141-351304 \* तेज शिंह राजवत  
0141-412246 \* शिलोकचंद अग्रवाल 0141-418987 \* दिव्यजय  
शिंह राठोड 361197 \* राकेश जैन 24118 \* राजेन्द्र पारिक 402327  
\* सुना राम सेनी 261889 \* हरि शिंह वौशरी 701608 \* सुनील  
शर्मा 564480 \* विजय कुमार 22301 \* मोहन लाल यादव 221228 \*  
शेर शिंह मीना 360467 \*

23 दिसम्बर 2001 भरुच (गुजरात)

अहंकारी भुवनेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल - सत्संग भवन हातूल, करसक कल्याण, रेलवे स्टेशन के पास भरुच

आयोजक - \* हितेश शक्ति 02642-50989 \* आर. नी. शिंह  
02642-27556 \* अमैश प्रजापति 02642-61128 \* बेन्द्र व्यास \*  
योगेन्द्र वालिया 02642-27659 \* शिवशंकर प्रसाद \* जे. नी. शिंह  
02642-50803 \* हेमन जह

1 जनवरी 2002 न है

दिल्ली

शिव शक्ति विद्याभिषेक दीक्षा

शिविर स्थल - नवरात्रि शक्ति पीठ आरेश्वर धाम, (गुजरात अपार्टमेंट)

के योंगे), जो एच-4/5, पीनमपुरा, नई दिल्ली-34

13-14 जनवरी 2002 सारनी बेनुल, (मध्य प्रदेश)

बस महाविद्या सिद्धि साधना शिविर

शिविर स्थल - शास-बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सारनी (सुपर एक)

आयोजक - \* श्रीमति शक्ति देवी शोटे 78508 \* रामचन्द्र सोनन  
\* लरियाम याहु \* पूरम साहु \* वनश्याम मालवीय \* सुंदर शिंह  
ठाकुर \* डा. शिलिप मानकर \* लेखराम साहु \* शिंग कुमार थाइने  
\* अनुन सिंह उके \* मुन्मा लाल हारैदे \* नरेन्द्र महातो \* वैद्या  
लाल सरपंच \* आर. नी. मिश्रा बेनुल \* एन. के. श्रीवास्तव मुलताड  
\* वी. ठाकरे वसुआ \* कमलाकर धाडसे आठनेर \* जे. एल. सवासे  
प्रेमवेही \* इंद्र शिंह ठाकुर आमला \* के. के. वैद्या शाहपुर \*

महावेद ताडगे मासोद।

20 जनवरी 2002

शाहजहांपुर (यू.पी.)

अहंकारी शिविर साधना शिविर

शिविर स्थल - प्राथमिक विद्यालय छावनी परिषद, निकट फैक्ट्री स्टेट, रामलीला मैदान, शाहजहांपुर, उ.प्र.

आयोजक - \* सुनील कुमार ठड्डन 050142-27217 \* राजवील सिंह 0512-612016 \* नितिन चन्द्र पनारिया 0512-243427 \* मात प्रसाद श्रीवास्तव 050842-21512 \* डा. रवेन्द्र कुमार शिंह 05843-35165 \* सर्वेश्वरानन्द 05842-23624 \* अशोक कुमार \* संजय श्रीवास्तव \* राम बाबू चक्सेना \* राना राम \* जनेश शिंह चौधार \* विजय कुमार \* लेखराम रावत \* अनिल कुमार \* अनिल कुमार \* दिनेश कुमार अश्वाल \* अशोक कुमार गुप्ता \* हरी प्रकाश शर्मा \* रामिनी ठड्डन

27 जनवरी 2002 उल्लास नगर मुंबई, (महाराष्ट्र)

बस महाविद्या सिद्धि साधना शिविर

शिविर स्थल - बृंदावन लॉज होटल जबाहर के बगल में सेंट्रल हास्पिटल रोड, फलावर, लालन चौक उल्लास नगर-4241 003

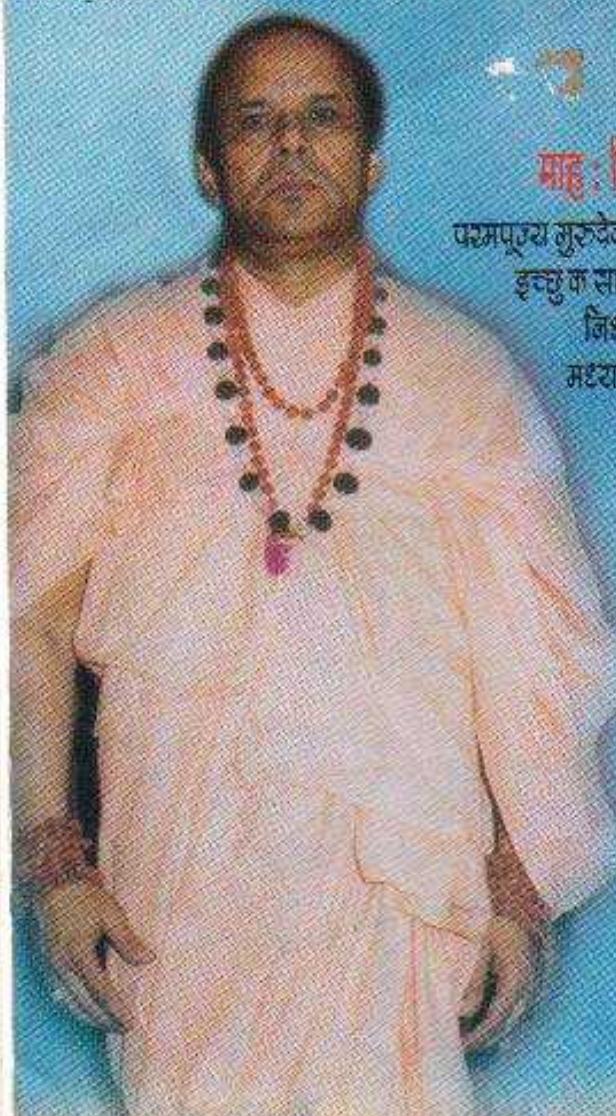
आयोजक - \* सनीश मिश्रा 8050323 \* गणेश शिंह 811 849 \* भास्करन नी 95251-683357 \* जेंड एकनाय रोय 888 6094 \* श्री. कृष्ण गीडा 841 2860 \* पी. प्रस. लाल 95251-546297 \* चंद्र टवरमलानी 492 9090 \* हरियांकर पांडे 885 6080 \* निर्मल भाई - 95250-412166

26-27 फरवरी 2002 भंडारा, (महाराष्ट्र)

शक्ति साधन्य जगपति साधना शिविर

शिविर स्थल - मंगल कार्यालय, भंडारा, (महाराष्ट्र)

आयोजक - \* श्री निला निलम 07184-57460 \* श्री प्रशां परसोडकर 07184-55586 \* श्री शिलिप दुवाली 07184-54453 \* विनेद्र जांडे \* श्रीमती मधुमी पाठक \* श्री अजय निखार 07184-51144 \* डा. युवराज नमाईवार \* उमेन्द्र शिंह दीहन 8 वैरागी ठान \* पी. के. पांडे \* देववर जी बारिकर \* मात्रेन राव \* भगल साहेब वी.नी. सातपुते \* ठाकुर शिंह बैस \* सुधिर रोलेकर



## महाराजा दीक्षा के लिए जिथारित दिवस दिव्य

परमपूर्ण गुरुदेव लिम्ज जिरिट दिवसों पर साधकों से बिल्लों व दीक्षा प्रदान करते हैं।  
इच्छुक साधक जिथारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।  
जिथारित दिवसों पर चौं दीक्षाएँ प्राप्त : ११ बजे ये १ बजे के  
मध्य शांत धृति से ७:३० बजे के मध्य प्रदान की जाती है।

दिनांक

11-12-13 दिसम्बर 2001

स्थान

गुरुकृष्णाम, जोधपुर

दिनांक

29-30-31 दिसम्बर 2001

स्थान

सिंदुराश्रम, दिल्ली







## COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

